जून-2020
मूल्य – 40/–
वर्ष 10
अंक-9
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
भाग्योदय साधना
चाक्षुष्मति मंत्र
रसेश्वर साधना

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम:||

जीवन में सम्पूर्ण भाग्य बाधा दूर करने हेतु करें : भाग्योदय साधना

नेत्रों सम्बन्धी किसी भी बीमारी हेतु : चाक्षुष्मती मंत्र

तनाव तथा क्लेश निवृत्ति तथा जीवन में रस प्राप्ति हेतु : रसेश्वर साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

आयुर्वेद

योग

स्तोत्र

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता
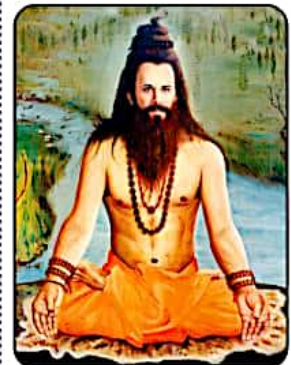
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक श्री अरविन्द श्रीमाली द्वारा दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड A-6/1, मायापुरी, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से मुद्रित तथा 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' कार्यालय हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27354368, 011-27352248

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जावेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

तंत्र एव गुरु: साक्षात् तंत्र एव सदाशिव:
तस्मात् तंत्र स्वरूपं तं नमामि निखिलेश्वरम्।।
तंत्रेण जायते विश्वं तंत्राधीनं च पालनं,
तंत्रे संलीमते सर्वं तंत्रदैवं नमो नम:।

सद्गुरु तंत्र से भिन्न नहीं हैं, सदाशिव भगवान शंकर स्वयं तंत्रमय हैं, भगवत् पूज्मपाद सद्गुरुदेव निखिल तंत्रावतार हैं, इन सभी तंत्रदेवों को मेरा शत् शत् नमन स्वीकार हो। इस समस्त विश्व की रचना तंत्र से हुई है। इसका संरक्षण तंत्र से ही होता है। अंत में तंत्र में ही सब लय हो जाता है, अत: उस तंत्र शक्ति को मैं पुन: प्रणाम करता हूँ।

आत्मप्रशंसा सभी गुणों को नष्ट कर देती है

महाराज ययाति अपने छोटे पुत्र पुरु का राज्याभिषेक कर वन में तपस्या के लिए चले गए थे। उनकी कठोर तपस्या से उन्हें अनेक वरदान प्राप्त हुए। इनमें से एक वरदान यह भी था कि वे जब चाहें ब्रह्मलोक, देवलोक आदि में गमन कर सकते थे। ययाति जब भी स्वर्ग आते, तो उनके पुण्यों के कारण देवराज इंद्र को उन्हें अपने सिंहासन पर बैठाना पड़ता था। वे अपने से नीचा पद ययाति को नहीं दे सकते थे। इस कारण इन्द्र उनसे ईर्ष्या करने लगे। चाहे जब स्वर्ग आने-जाने के कारण देवगण भी उनसे ईर्ष्या करने लग गए थे। वे सभी इस युक्ति की सोच में थे कि बिना ययाति को बताए उन्हें स्वर्ग से भ्रष्ट कर दिया जाए। एक दिन जब ययाति स्वर्ग आए तो वे इंद्र के साथ उनके सिंहासन पर बैठे। इंद्र आदि देवगण पहले से ही ययाति को स्वर्गभ्रष्ट करने की तैयारी में थे। जैसे ही ययाति बैठे, इन्द्र ने उनकी प्रशंसा करना शुरु कर दिया और सभी देवगण इंद्र की बातों में हाँ में हाँ मिलाने लगे। इंद्र ने कहा - महाराज, मेरे मन में यह जानने की इच्छा बलवती हो रही है कि आपने ऐसा कौन सा तप किया है जिसके कारण आप सभी लोकों में गमन कर सकते हैं। ययाति अपनी प्रशंसा सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हो चुके थे। वे इंद्र के जाल में फंस गए। उन्होंने आत्मप्रशंसा शुरु कर दी और घोषणा कर दी कि उनके समान किसी अन्य ने तपस्या नहीं की है। बस आत्मप्रशंसा से ययाति के पुण्य नष्ट होने लगे और वे स्वर्ग से बहिष्कृत हो गए।

आत्मप्रशंसा के कारण स्वर्ग से वंचित होने का मतलब है अच्छी स्थिति से हट जाना। अत: जरूरी है कि स्वयं की प्रशंसा से बचा जाए और यही ऊर्जा स्वयं के आकलन में लगाई जाए, तो अधिक लाभकारी होगा। आत्मप्रशंसा मनुष्य के लिए घातक होती है। आत्मप्रशंसा के मार्ग से ही अहंकार का प्रवेश होता है। जिसे स्वयं की प्रशंसा का रोग लग जाता है उस व्यक्ति के समस्त गुण, सभी अच्छाइयां समाप्त हो जाती है।

नमन्ति फलिनो वृक्ष:, नमन्ति गुणिनो जन:

फलदार वृक्ष, गुणी एवं चेतनायुक्त व्यक्तित्व, ही नम्र हो सकता है, झुक सकता है।

विश्वामित्र ने जब अपने गुरु से पूछा कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है और मैं किस प्रकार उसे प्राप्त कर सकता हूँ, तो ब्रह्मा ने बताया कि जीवन के दो पक्ष हैं भोग और योग। योग द्वारा जिस प्रकार जीवन को पूर्णता प्रदान की जा सकती है, उसी भांति भोग द्वारा भी ऐसा सम्भव है। दोनों रास्ते क्या हैं, इसी का उद्घाटन सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी ने अपने एक प्रवचन में किया था। प्रस्तुत है उनकी चिर-परिचित शैली

नो व नित्यं मधुरं सदेव, दिव्यौ वतां वै परिपूर्ण रूपं।
नित्यं वदान्य वरितं सहितं सदैव, गुरुर्वै प्रणम्यं त्वमेवं प्रणम्यं।।

विश्वामित्र जैसे तेजस्वी और क्रान्तिकारी ऋषि ने इस श्लोक में अपने तथ्य को स्पष्ट करते हुए स्वयं अपने गुरु के सामने प्रश्न किया कि मेरे जीवन में केवल चार चिन्तन है।

- मैं यह जानता चाहता हूँ कि मेरे जीवन का उद्देश्य लक्ष्य क्या है?
- दूसरा मैं जानना चाहता हूँ कि मैं अपने जीवन को किस प्रकार से अग्रसर करूँ, किस प्रकार से आगे बढ़ाऊं?
- तीसरा, यह कि मैं अपने जीवन को किस प्रकार से दिव्यता से ओत-प्रोत कर सकता हूँ, अपने आप में चेतनायुक्त बना सकता हूँ?
- और जीवन का वह क्षण कब आयेगा जब गुरु मेरे सामने होंगे, जब गुरु प्रवचन कर रहे होंगे, मैं सामने बैठा हुआ होऊंगा, वो अमृत बरसाते हुए होंगे और मैं अपने कानों के माध्यम से, नेत्रों के माध्यम से, शरीर के अंग-अंग से, हजार कानों और हजार आँखों से उस अमृत तत्व को समेटता हुआ अपने प्राणतत्त्व को जाग्रत करने की ओर अग्रसर हो सकूँगा? मैं केवल उन विधियों, उन विचारों, उन चिन्तनों को जानना चाहता हूँ।

जब विश्वामित्र ने गुरु से पूछा कि मेरे जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य क्या है, तो उन्होंने कहा कि जीवन दो प्रकार से जिया जा सकता है एक जीवन भोग के माध्यम से एक जीवन योग के माध्यम से। दो ही रास्ते हैं, तीसरा रास्ता हो ही नहीं सकता। जीवन का अगर एक पक्ष योग है, तो भोग भी दूसरा पक्ष है।

किसी ने यह प्रश्न किया नहीं, विश्वामित्र ने किया, खड़े होकर पूछा कि मेरे जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य क्या है? क्या भोग लक्ष्य है और अगर है, तो फ़िर पूर्ण भोग के साथ जीवन व्यतीत करूँ!

जो कुछ हम प्राप्त नहीं कर सके वह भोग है, तृष्णाओं को भोग कहा जाता है। भोग में इच्छा पूर्ति होती ही नहीं, भोग का तात्पर्य है कि हम निरन्तर प्यासे बने रहें, निरन्तर न्यून बने रहें। भोगी व्यक्ति जीवन में पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता। भोगी व्यक्ति की इच्छाएँ जीवन में पूरी होती ही नहीं। जिस व्यक्ति के पास पांच हजार रुपये हैं, वो सोचेगा कि दस हजार होने चाहिये, पच्चीस हजार होने चाहिये। जिस व्यक्ति के पास धन पर्याप्त है, उसकी कुछ और तृष्णाएँ होंगी और इच्छायें होंगी, पुत्र होगा तो पुत्र की शादी की बात सोचेगा, शादी हो गई होगी तो पौत्र की बात सोचेगा, अपने बुढ़ापे की बात सोचेगा, बुढ़ापे की ओर अग्रसर होते हुए भी हर समय चिन्ता में रहेगा, मात्र तनाव ग्रस्त ही रहेगा। जो तनाव ग्रस्त जीवन जीता है, वह भोगी है और यह सारा संसार भोग की ही चिन्तन पद्धति में इसलिए बढ़ रहा है कि उसको कोई रास्ता नहीं मिल रहा है, उसको मालूम नहीं है कि जीवन का लक्ष्य, उद्देश्य क्या है?

लेकिन तुम तो पूर्ण भोग के साथ जीवन व्यतीत कर भी नहीं पा रहे हो। अगर तुम पूर्ण भोगी हो, तब भी तुम मेरे प्रिय शिष्य बन सकते हो, अगर पूर्ण भोगी बन सको तो। वह भी नहीं बन सकते तुम! पिछले पच्चीस हजार वर्ष में केवल कृष्ण ही ऐसा व्यक्तित्व हुआ, जो अपने आप में पूर्ण भोगी बना।

यह नहीं सोचा जाता कि लोग क्या कहेंगे,क्या नहीं कहेंगे, क्योंकि लोग तो कहेंगे ही। आप कुछ करोगे तब भी कहेंगे, कुछ नहीं करोगे तब भी कहेंगे। तुम्हारा समाज तुम्हें गालियां देने के अलावा कुछ कर भी नहीं सकता, प्रशंसा नहीं कर सकता तुम्हारी। समाज का निर्माण ही इसलिए हुआ है। तुम जिस समाज में जी रहे हो, उस समाज में आलोचनाओं के अलावा कुछ है ही नहीं। उन आलोचनाओं का जहर जितना मैंने पिया है, शायद उसका हजारवां हिस्सा भी तुमने नहीं पिया है। मैंने हर क्षण, हर पल उन आलोचनाओं को सहन किया है।

कृष्ण ने सोचा कि अगर भोग में जीवन व्यतीत करना है तो पूर्णता के साथ व्यतीत करना
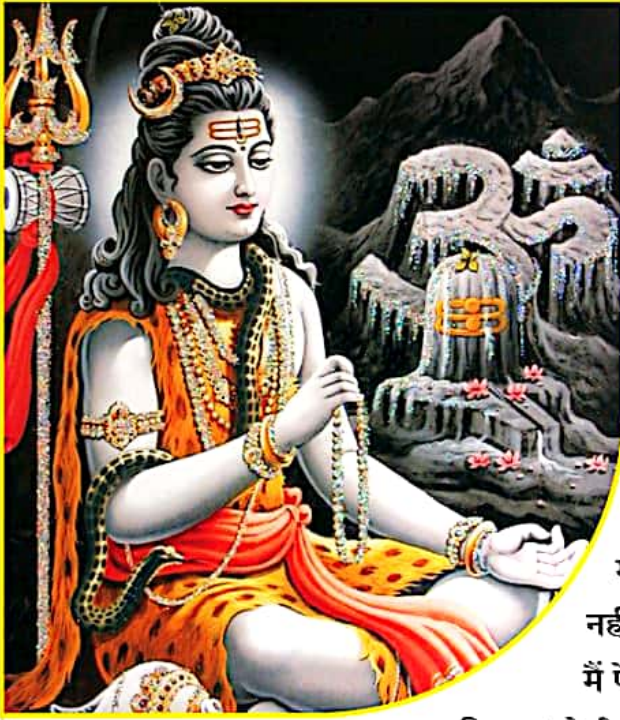
है। उसमें इफ एण्ड बट नहीं होता, उसमें सोचना-विचारना नहीं होता। और जब आलोचनाएं होनी ही हैं, तो इतिहास में पूरी ढंग से आलोचनाएं हों और लोग याद रख सकें कि कोई व्यक्ति था। घिसा-पिटा जीवन जीने से कोई मतलब नहीं है। यदि बदनाम भी हो जायेंगे तो इतिहास में नाम लिखा जायेगा। और इतिहास में यदि नाम लिखा नहीं होगा, लोगों की जबान पर हमारा नाम नहीं होगा तो ऐसे जीवन का कोई मकसद भी नहीं है, कोई उद्देश्य भी नहीं है, कोई लक्ष्य भी नहीं है।

मैं ऐसा नहीं कहता हूँ कि तुम भोगी नहीं बनो। मैं कहता हूँ कि तुम भोगी बनो, पर पूर्ण आनन्द के साथ भोगी बनो। हर क्षण डर कर, दुबक कर, रो कर, झींक कर के प्रेम नहीं किया जा सकता। प्रेम में दुर्गन्ध नहीं होती, वह तो दिल खोल कर करने वाली चीज है। और तुम्हारा प्रेम अपने आप में बहुत घिसा और घटिया शब्द है। परन्तु प्रेम का तो वर्णन वेदों में भी हुआ है। **ऋग्वेद में भी कहा है कि जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ सरसता बन ही नहीं सकती, जीवन में छलछलाता हुआ पानी नहीं बह सकता। ऐसा व्यक्ति कोयल की कूक नहीं सुन सकता, वसन्त आया और गया यह उसको पता ही नहीं पड़ेगा। और हजारों व्यक्ति ऐसा जीवन जी लेते हैं, जो प्रेम की परिभाषा को नहीं समझते, मात्र वासना ही समझते हैं।**

अगर हर क्षण तुम दुबक कर, डरते हुए चल रहे हो तो भोग में पूर्णता के साथ नहीं उतर सकते। अगर नदी ऐसा सोचे कि लोग मुझे बहते हुए देखेंगे और मैं रुक जाऊं तो वह कभी समुद्र में नहीं मिल सकती, नदी इस बात की परवाह नहीं करती कि मार्ग में बांध हैं कि पत्थर हैं। उसे तो बस यह होता है कि मुझे पहुँचना है और समुद्र में मिल जाना है। इसलिये नदी सही अर्थों में प्रेमिका है। नदी का छलछलाता हुआ पानी जीवन है, तालाब का पानी तो सड़ सकता है, उसमें गन्दगी और कीचड़ हो जायेगा। तुम्हारा जीवन भी एक जगह रुका हुआ है, एक परिवेश में तुम हो, तुम्हारी पत्नी है, दो लड़के हैं, दो लड़कियाँ हैं, भाई है, बहन है, बस इसी के इर्द-गिर्द घूम रहे हो। पड़ोस में कोई जी रहा है, पड़ोस में कोई मर रहा है, तुम्हें चिन्ता नहीं है। तुमने और तुम्हारे समाज ने जीवन देखा नहीं।

परन्तु विश्वामित्र ऐसा पहला व्यक्तित्व था, जिसने पूर्ण संन्यास लेते हुए भी विवाह किया। लोगों ने कहा ये क्या कर रहे हो? उसने कहा कि क्या तकलीफ है? इसमें क्या गड़बड़ है? लोगों ने कहा कि तुम इस प्रकार से अप्सराओं को नृत्य नहीं करा सकते। विश्वामित्र ने कहा कि मैं जरूर मेनका से नृत्य कराऊंगा। मैं ऐसा करूंगा, क्योंकि जहाँ विद्रोह नहीं है, जहाँ चैलेंज नहीं है, जहाँ प्राणों में ताकत नहीं है, क्षमता नहीं है, वह जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता। घिसा

हुआ व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। जो रो रहा है, उससे उम्मीद की भी क्या जा सकती है? मुर्दा व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

जो इस रोगी समाज के बीच में खड़ा होकर विद्रोह कर सकता है, वह मेरा शिष्य बन सकता है। जो खड़ा हो सकता है, चैलेंज के साथ, क्षमता के साथ, जो बगावत कर सकता है, वह मेरा शिष्य बन सकता है लेकिन बगावत ऐसी जो रूढ़िवादिता के खिलाफ हो, सत्य और धर्म के लिए हो एवं आम व्यक्ति के विकास के लिए हो, न कि बगावत अपने स्वहित, स्वार्थ एवं लोलुपता के लिए हो।

विश्वामित्र ने जीवन में हर क्षण चैलेंज उठाया। जो समाज ने कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिये, उसने कहा कि मैं ऐसा करके ही दिखाऊंगा। कृष्ण ने भी विश्वामित्र के दो हजार साल बाद वही रूप अपनाया। कृष्ण बिल्कुल मस्ती के साथ यमुना के किनारे बंसी बजा रहा था। उसे इस बात की परवाह नहीं थी, कि कौन क्या कह रहा है। घर जाता तो नन्द एवं यशोदा बहुत डांटते कि तू ये क्या कर रहा है? ये ठीक नहीं है क्योंकि ज्योंहि कृष्ण बांसुरी बजाता तो गांव की लड़कियाँ, औरतें दौड़ती हुई चली जाती, उन्हें होश ही नहीं रहता, वे रुक ही नहीं पाती।

परन्तु यदि तुम भोगमय हुए हो, तो क्या तुम्हारे अन्दर कृष्ण जैसी आकर्षण क्षमता आ सकती है? नहीं आ सकती! उस आकर्षण शक्ति के लिये भी प्राणतत्त्व चाहिये। भोगी तुम बन
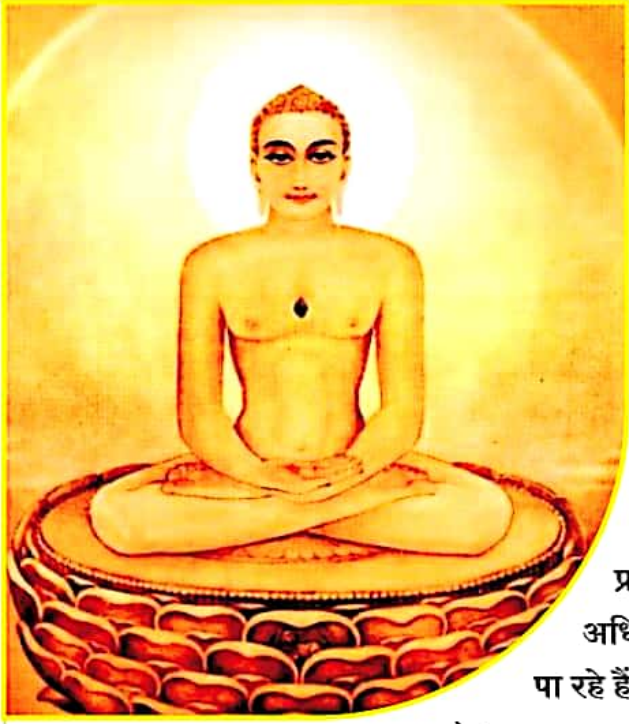
नहीं सकते, क्योंकि जिसके प्राणतत्त्व जाग्रत हैं, वही प्रेम कर सकता है। तुम प्रेम कर ही नहीं सकते, तुम वासना कर सकते हो। तुमने वासनाएँ की हैं, और वासनाओं का फल केवल सन्तान होती हैं। इसीलिये भर्तृहरि ने कहा है 'भोगे रोग भयं!'

जहाँ भोग है वहाँ रोग है ही। भोग से ही रोग की उत्पत्ति होती है। परन्तु भोग तो अपने आप में आनन्ददायक चीज है। हम प्रत्येक क्षण का भोग करें, प्रत्येक वस्तु का भोग करें। और संसार में प्रभु ने इतना अधिक भोग बिखेर दिया है, कि हम उसको समझ ही नहीं पा रहे हैं। हमने भोग के चिन्तन को घटिया शब्दों में बांध दिया है।

मैं तो तुम्हें यह कह रहा हूँ, कि भोग करें तो पूर्णता के साथ करें, प्रेम करें तो पूर्णता के साथ करें। कृष्ण घबराया नहीं, उसने फि र किसी प्रकार का कोई भय भी नहीं रखा और जब गोपियों के पास से निकल कर मथुरा चला गया तो उसने कुब्जा से प्रेम किया। उसने कहा कि मैं बिना प्रेम के रह भी नहीं सकता,क्योंकि प्रेम ही जीवन का आधार है। कृष्ण का जीवन भोगमय कहा जा सकता है, मगर भोगमय होते हुए भी कृष्ण को योगेश्वर कहा गया। अगर तुम्हारे प्राण तत्त्व जाग्रत हैं, तो तुम बिल्कुल विरक्त होकर भोग का आनन्द ले सकते हो।

सुबह उठें कभी, देखिये प्रकृति कितनी सुन्दर हवा बिखेरती है और अगर आप सुबह उठें तो साढ़े पांच-छः बजे पूर्व की ओर से बिल्कुल लाल गोला बाहर निकल रहा होता है, आकाश बहुत लालिमायुक्त हो जाता है, क्षितिज पर लालिमा बिखर जाती है। भोग तो बिखेरा प्रभु ने, आपने उस भोग को देखा नहीं, कोशिश नहीं की। आपके पास से आपका बच्चा किलकारियाँ भरता हुआ जा रहा है, आपने उसे गोदी में उठाकर कभी उछाला भी नहीं, क्योंकि आपको तो ऑफिस जाने की जल्दी है। वह भी भोग था, परन्तु आपने जीवन के चिन्तन को समझा ही नहीं। इसलिए आप अपने को भोगी कह भी नहीं सकते। आप रोगी जरूर हैं। रोगी इसलिए हैं, कि आप डरते हुए काम कर रहे हैं।

और विश्वामित्र यही पूछ रहा है कि जीवन का मर्म क्या है, जीवन को व्यतीत कैसे करना है? तो उनके गुरु ने, ब्रह्मा ने यह नहीं कहा कि तुम भोग नहीं करो। उन्होंने तो कहा कि तुम भोगमय बनो, तुम भोग करो, मगर दृष्टा बन कर करो, उसमें लिप्त नहीं हो जाओ। एक तरफ किनारे खड़े होकर देखो, जो प्रकृति ने भोग बिखेरा है, उसका आनंद लो, जो पत्तों की सरसराहट है, उसके संगीत को भी तुम सुनो, कभी नदी के किनारे बैठ कर उसकी लहरें जो गान सुनाती हैं, उस संगीत को भी कभी सुनो, कभी गुरु के पास बैठकर गुरु जो मौन संगीत बोलता है, उसको भी सुनने की कोशिश करो। वह तुम नहीं करते हो। वह तुम इसलिये नहीं कर

सकते, कि तुम्हें भोग की परिभाषा ज्ञात नहीं है। तुमने, और तुमने ही नहीं, तुम्हारे समाज ने भोग को वासना के साथ जोड़ दिया है। और तुम उस समाज के अंग हो, जो स्वयं ही रोगी है। रोगी इसलिये है कि मां हर क्षण बेटी को दबोचे रहती है, कि तू हंस नहीं सकती, तू घर के बाहर नहीं जा सकती, तू पराये पुरुष से बात नहीं कर सकती, इधर नहीं जा सकती, उधर नहीं जा सकती। और शादी हुई तो पति रोक देगा, सास रोक देगी कि ऐसा नहीं कर सकती, वैसा नहीं कर सकती।

जो कुछ भी तुम भोग की बात समझ रहे हो, वह मैं भोग चुका हूँ। मैंने प्रेम की परिभाषा जानी है, मैं प्रेम करने की कला जानता हूँ। मैं प्रेम दे भी सकता हूँ, ले भी सकता हूँ, मैंने भ्रमर का संगीत सुना है, मैंने उगते हुए सूर्य को देखा है, मैंने सूर्य से बात करने की कोशिश की है, मैंने तितली के नर्तन को देखा है, मैंने लहराती हुई हवा का अनुभव किया हे, मैंने हिमालय की बर्फ में भी आनन्द के स्रोत को ढूंढा है। मैंने जीवन को बहुत निकटता से देखा है उस संन्यास को भी, इस गृहस्थ को भी। इसलिये जीवन को भोगमय भी जियें, तो प्राणों के साथ जियें, शरीर के साथ नहीं, क्योंकि प्रेम शरीर के साथ नहीं हो सकता, प्राणों के साथ प्रेम हो सकता है। शरीर के साथ सिर्फ वासना हो सकती है।

इसलिये विश्वामित्र ने पूछा कि जीवन का उद्देश्य क्या है? तो योगमय बनें या भोगमय बनें परन्तु अगर भोगमय बनें तो दृष्टा बनकर। हम किनारे खड़े होकर देखें, हम लिप्त नहीं हो जायें। ज्योंहि शहद की मक्खी शहद में भीग जाती है, पंख उसके भीग जाते हैं, वह मर जाती है। तो उसमें लिप्त होने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी पत्नी है, पुत्र है, अपना काम कर रहे हैं, तुम जीवन को देख रहे हो, दृष्टा बनकर देख रहे हो। कृष्ण यही कह रहे हैं कि अर्जुन तू उसमें लिप्त मत हो, तुम जब यह सोचते हो कि भीष्म तुम्हारा दादा है, तो तुम यहाँ गलती कर रहे हो। अगर तुम यह कहोगे कि दादा है, तुम दृष्टा न बन कर लिप्त हो जाओगे और युद्ध नहीं कर पाओगे, तुम युद्ध में विजय प्राप्त नहीं कर पाओगे। तू यह मत सोच कि यह गुरु है, तू यह सोच कि यह द्रोण है, यह कृपाचार्य है। तु धर्मयुद्ध कर रहा है। तुझे तो बस लड़ना है, क्योंकि तुझे विजय प्राप्त करनी है।

इसलिए ब्रह्मा ने विश्वामित्र को कहा कि तू भोग तो कर लेकिन दृष्टा बन कर, प्रकृति के साथ प्रेम कर, बहती हवा के साथ प्रेम कर, अपने प्राणों के साथ प्रेम कर, प्रेम करने की कला सीख। मैं बैठा हुआ पत्तों की सरसराहट को सुन रहा हूँ, उसके गायन को सुन रहा हूँ। आँख बन्द करके भी मैं गायन को सुन सकता हूँ। और जब तुम अपने प्राणों में उतरोगे, तो तुम्हें देवताओं का संगीत अपने आप सुनाई देगा। वह संगीत भी सुन सकते हैं। कृष्ण ने कहा कि मैं जीवन को प्रेम से संगीतमय करना सिखाऊंगा।
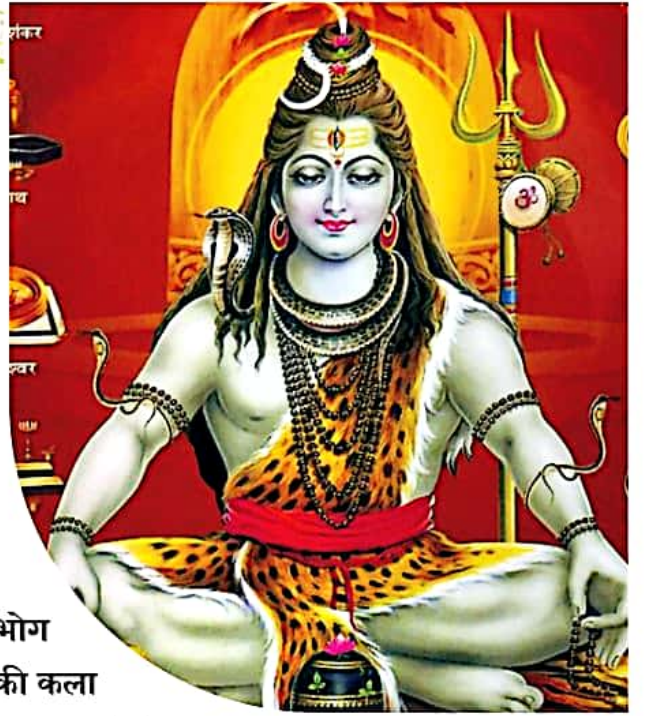
और कृष्ण जैसा व्यक्ति यदि श्रीमद्भगवद्गीता जैसा ग्रंथ उच्चरित कर सकता है, तो निश्चय ही वह अत्यंत विद्वान होगा। श्रीमद्भगवद्गीता अपने स्वयं के जीवन की कथा है। 'श्रीमद्' का मतलब है कि मेरा जीवन क्या है, यह समझने की कला है उसमें। और 'भगवद्' का तात्पर्य है कि इस जीवन को पूर्ण तत्व तक पहुँचाने का चिन्तन और क्रिया क्या है। और गीता का मतलब है गेय, गाई हुई चीज, संगीतमय। गीता कोई पढ़ने की चीज नहीं है, वह तो एक गुंजरण है, गाने की चीज है, और गाने का तात्पर्य यह नहीं कि हारमोनियम लेकर गायें। श्रीमद्भगवद्गीता का तात्पर्य यह नहीं कि वह जो एक श्लोक है 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' केवल बस वही हैं। ऐसा भी नहीं कि वह एक इतिहास है, वह जो जीवन की एक चेतना है, संगीत है।

कृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत! अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं।' जब-जब भी धर्म की हानि होगी धर्म का तात्पर्य हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई यह नहीं था, उस समय यह था ही नहीं, उस समय या तो शैव थे या वैष्णव थे। विष्णु को मानने वाले थे या शिव को मानने वाले थे। धर्म की ग्लानि का मतलब था, कि जहाँ-जहाँ भी अज्ञान आयेगा, जहाँ-जहाँ भौतिकता छा जायेगी, जब व्यक्ति में धड़कन खत्म हो जायेगी, जब व्यक्ति मुर्दा बन कर चलने लग जायेगा और धृतराष्ट्र बिल्कुल मुर्दा बनकर ही चल रहा था। उसे हर क्षण चिन्ता थी कि मैं अपने बेटे को राजगद्दी कैसे दूँ? दुर्योधन मुर्दा बना चल रहा था कि मुझे जिन्दा रहना है और बस राजगद्दी पर बैठना है। और महाभारत इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक व्यक्ति मुर्दे की तरह चल रहा था, चेतना नहीं थी, विदुर में थी, परन्तु भीष्म में नहीं थी, द्रोण में नहीं थी, कृपाचार्य में भी नहीं थी, अश्वत्थामा में भी नहीं थी। और वे सब समाप्त हो गये।

'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति...' जब भी ऐसा समय आयेगा तब, 'अभ्युत्थानं' उस समय उन मुर्दा शरीरों को उठाने के लिये, 'तदात्मानं' उनकी आत्मा को जगाने के लिये, 'सृजाम्यहं' मैं खुद खड़ा होऊंगा, मैं खुद समझाऊंगा। और मैं वही वापस तुम्हें दोहरा रहा हूँ, पांच हजार साल बाद वही कह रहा हूँ तुम्हें। मैं नहीं कह सकता कि तुम जीवन के फलक पर कितना पीछे तक देख सकते हो, लेकिन जिस दिन तुम्हारी आँखें दिव्य चक्षु बन सकेंगी, जिस समय तुम पिछले जन्मों को देख सकोगे तो मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सब तुम्हें स्पष्ट साकार दिखाई देगा। तुम्हें दिखाई देगा कि महाभारत युद्ध हो रहा है, मैं तुम्हें समझा रहा हूँ और यही श्लोक बोल रहा हूँ जो आज तुम्हारे सामने बोला है। उस समय भी मैं यही चीख कर कह रहा था, कि तुम्हें युद्ध में विजय प्राप्त करनी है, अर्जुन तो एक निमित्त था। यह बात अर्जुन को ही नहीं

समझा रहा था, और मैं यह बात केवल तुम्हें ही नहीं समझा रहा हूँ। जो तुम्हारे पास खड़े नहीं हैं भारतवर्ष के उन लोगों को भी समझा रहा हूँ। 'अभ्युत्थानं अधर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत!' पूरे भारतवर्ष में जहाँ भी मुर्दा शरीर हैं, उनको मैं तुम्हारे माध्यम से सुना रहा हूँ। वह अर्जुन के माध्यम से सुना रहा था, पूरे महाभारत के योद्धाओं को जो कौरव दल में थे, चाहे पाण्डव दल में थे, चाहे हस्तिनापुर में थे, चाहे आर्यावर्त के किसी भी कोने में थे। अर्जुन तो बस निमित्त मात्र था।

आज मैं भी वही इतिहास दोहरा रहा हूँ, मैं बैठा बोल रहा हूँ और तुम सुन रहे हो। मगर केवल तुम्हें ही मैं सुना नहीं रहा हूँ, जहाँ पर भी मुर्दा शरीर हैं, उनको मैं समझाता रहा हूँ, क्योंकि कहीं ने कहीं वे मुझसे जुड़े हुए जरूर हैं।

मुर्दों का मतलब जिनमें कोई चेतना नहीं है, हंसी नहीं, मुस्कुराहट नहीं है। मैं कहता हूँ कि आप मुझे मुस्कुराते हुए मिलो, तो आप थोड़े से दांत निपोर कर खड़े हो जाते हो। वह मुस्कुराहट नहीं होती। तुम थोड़े गाल फैला देते हो और खुश हो जाते हो कि मैं खुश होकर गुरुजी से मिल लिया। न तुम हंसे, न तुम्हारे समाज ने तुम्हें हंसने दिया।

गुरु जाग्रत हो, और जो जाग्रत है वह मुस्कुरा सकता है, वह प्रेम कर सकता है, वह बालकों के साथ भी खेल सकता है, बुद्धों के साथ प्रवचन भी कर सकता है। उसको प्रवचन करने की कला में देखेंगे, तो बिल्कुल एक दूसरे रूप में देखेंगे। और अगर वह शेर-शायरी सुनायेगा तो बिल्कुल एक दूसरे अन्दाज में। हम कल्पना नहीं कर सकते कि कल यही व्यक्ति मंच पर बैठा प्रवचन कर रहा था और आज एकदम लखनवी अन्दाज में गजल गा रहा है, कमाल है। और आज नदी के किनारे बैठा-बैठा नदी का संगीत सुन रहा है, किसी बात की परवाह भी नहीं है। और ये आज बच्चों के साथ मुस्करा रहा है, ये क्या व्यक्तित्व है। जीवन के प्रत्येक क्षण में जो जीवित हो, जाग्रत हो, वह गुरु है।

.... और जब विश्वामित्र ने पूछा तो गुरु ने कहा कि अगर तुम भोगमय जीवन व्यतीत नहीं कर सकते, तो योग के माध्यम से भी जीवन को जिया जा सकता है और योग का तात्पर्य है दोनों को जोड़ने की क्रिया। ...क्योंकि भोगमय जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन है, इतना आसान नहीं है। विषययुक्त जीवन तो आसान है, वासनामय जीवन तो आसान है, वासनात्मक जीवन व्यतीत करने के लिये किसी स्कूल में पढ़ाई की आवश्यकता नहीं होती, पत्नी के साथ पुत्र कैसे पैदा होते हैं, कहीं ट्रेनिंग नहीं दी जाती, जरूरत नहीं है। वासना के लिये कुछ ज्ञान की जरूरत नहीं है। मगर प्रेम के लिये ज्ञान की जरूरत है, चेतना की जरूरत है। इसलिये कहा कि

अगर तुम भोग में नहीं रह सको, दृष्टा नहीं बन सको ...क्योंकि जब दृष्टा बनते हैं तो जीवन में जो हो रहा है, मैं बस एक तरफ खड़ा देख रहा हूँ। पत्नी अपना काम कर रही है, पुत्र अपने काम कर रहा है, अच्छा कर रहा है या बुरा अपने कर्म का फल भोग रहा है। अगर मैं उसमें लिप्त होता हूँ कि तू दुःखी है, उसके साथ आंसू बहाऊं, सीने से लिपटाऊं और रोऊं उसके साथ, फिर तो लिप्त हो गया।

....तो दूसरा रास्ता है योग यानि जुड़ना। 'योग वाशिष्ठ' ग्रंथ के प्रथम श्लोक में बताया गया है कि योग का तात्पर्य क्या है, क्या जुड़ना है और कैसे जुड़ना है? और उसमें वशिष्ठ ने पत्नी का नाम नहीं लिया, वशिष्ठ ने ईश्वर का नाम भी नहीं लिया। वशिष्ठ ने तो कहा कि ईश्वर है ही नहीं, ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। जो है वह ब्रह्म है, और ब्रह्म बाहर नहीं है, वेद में साङ्ख कहा है 'अहं ब्रह्मास्मि' आकाश में ब्रह्म नहीं है, मैं खुद ब्रह्म हूँ। 'द्वितीयो नास्ति' दूसरी कोई चीज है ही नहीं। जब तुम यह सोचोगे कि दूसरी यह पत्नी है, पुत्र है, तब ब्रह्म नहीं बन सकते। ब्रह्म बनने के लिये तो बस मैं हूँ बाकी दुनिया खेल रही है। सिनेमा का टिकट लिया है, और मैं बैठा कुर्सी पर देख रहा हूँ कि हीरो आ रहा है, शादी हो रही है, जवान लड़का मर जाता है, मां रो रही है, पछाड़ खा रही है। और सिनेमा हाल में यह देखकर कई औरतें सुबकने लग जाती हैं। एक हिरोइन नाचती है तो रुपये फेंकने शुरू हो जाते हैं, तो यह उसमें भाग लेने की क्रिया होने लगती है लेकिन यह तो बस पर्दे पर खेल चल रहा है, क्योंकि पांच रुपये का टिकट लिया है।

दृष्टा बन सको तो भोग कर सकते हो। और यदि ऐसा नहीं कर सकते तो तुम्हें योग करना पड़ेगा। दोनों में से कोई एक रास्ता चुनना पड़ेगा। योग का अर्थ है दो तत्वों को जोड़ने की क्रिया। और दो तत्व केवल गुरु और शिष्य ही हो सकते हैं, क्योंकि इसके अलावा बाकी सारी चीजें वासनात्मक हैं। गुरु के साथ प्रेम तो होता है, वासना बन ही नहीं सकती, उसमें लेन-देन का हिसाब है ही नहीं। गुरु तुमसे कुछ मांग नहीं सकता, तुम मजबूर नहीं हो गुरु को कुछ देने के लिये। योग का अर्थ है गुरु के साथ पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया, पूर्ण रूप से, होठों से नहीं, प्रार्थना के माध्यम से भी नहीं, चरण छूने के माध्यम से भी नहीं। तुम्हें सिर झुकाना पड़ेगा, विनीत होना पड़ेगा, नम्र होना पड़ेगा। कबीर ने साफ कहा है

कबिरा ये घर प्रेम का, खाला का घर नांहि।
शीष उतारे भूई धरे वो पैठे घर मांहि।।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध प्रेम का सम्बन्ध है। इसमें तो वही उतर सकता है, जो सिर को काट कर नीचे रख सकता है। अगर तुम सिर को लिये हुए चल सकते हो, अहंकार को लिये

चल सकते हो, तो गुरु के प्राणों में नहीं मिल सकते हो। तुम क्या हो, लखपति हो या करोड़पति, अपने घर में हो। वह तुम्हारा गृहस्थ का जीवन है, उसका मुझसे कोई लेन-देन नहीं है। मेरा-तुम्हारा सीधा प्राणों का सम्बन्ध है। और जब प्राणों का सम्बन्ध है, तो तुम्हें विनीत होना पड़ेगा, झुकना पड़ेगा

नमन्ति फलिनो वृक्षः, नमन्ति गुणिनो जनः
शुष्क काष्ठं च मूर्ख च न नमन्ति कदाचन्।

केवल फलदार डाली ही झुक सकती है। जिसमें गुण हैं, जिसमें ज्ञान आ गया है, जिसमें चेतना आ गई है, वह झुक सकता है। झुकने की क्रिया अत्यन्त कठिन है। आम आदमी आसानी से झुक नहीं सकता, बहुत अहं से खड़ा हुआ है, हर बार उसका अहं उसे थपथपाता है। वह अहं को खुद पैदा करता है कि मैं हूँ और मेरे पास पांच लाख रुपये हैं। मैं हूँ और मैं बहुत सुन्दर हूँ, शीशे में दो बार स्त्री चेहरा देखती है कि मैं बहुत शानदार हूँ, सुन्दर हूँ। और कोई कुछ कहे या नहीं कहे, वो खुद अपने अहं को पोषित करती रहती है। पुरुष भी अपने अहं को पोषित करता रहता है, कि मैं हूँ, मैं समाज का सरपंच हूँ, एम.एल.ए. हूँ, एम.पी. हूँ, मिनिस्टर हूँ और पांच लाख का मालिक हूँ, मेरा व्यापार है, मेरी दुकान है। तुम्हारा अहं और कोई पोषित नहीं कर रहा, तुम्हारा अहं तुम खुद पोषित कर रहे हो।

इसलिये झुकना बहुत कठिन क्रिया है, क्योंकि झुकने के लिये अपना सिर उतारना पड़ेगा, झुकने के लिये अपने को मारना पड़ेगा। मृत्यु तो जीवन का श्रृंगार है, बहुत आनन्ददायक उत्सव है, नृत्य है, मृत्यु से घबराने की जरूरत नहीं है , मृत्यु से तो विषयी आदमी घबराता है। इसलिये गुरु सबसे पहले मृत्यु देता है। जो भी तुम्हारे पास है तुम्हारा छल, तुम्हारा झूठ, तुम्हारा असत्य, तुम्हारा व्यभिचार, तुम्हारा अहं यह सब पहले समाप्त हो। वो समाप्त होगा तो गुणी व्यक्ति अपने आप झुकेगा 'नमन्ति गुणिनो जनः'। सूखी लकड़ी नहीं झुक सकती। जिस दिन तुम सूखे लकड़ बन जाओगे, उस दिन मेरे कहने का तुम्हारे ऊपर कोई असर नहीं पड़ेगा।

विश्वामित्र को गुरु ने कहा कि अगर तुम्हें योग में उतरना है, तो इतना झुको कि तुम्हें गुरु के चरणों में मन्दिर दिखाई देने लग जाये, गुरु के चरणों में तुम्हें मस्जिद दिखाई देने लग जाए, गुरु के चरणों में गुरुद्वारा दिखाई देने लग जाये। तब समझो कि तुम झुके। तन के खड़े होने में जीवन में सार आ ही नहीं सकता। अगर तुम झुको, और फिर वापस तन के खड़े हो जाओ तो तुम शिष्य नहीं बन सकते, तुम योग कर भी नहीं सकते। योग का मतलब है झुक जाना, अपने आप को मिटा देना, अपने आप को विसर्जित कर देना। और यह विसर्जित करना बूंद की समुद्र में विलीन होने की क्रिया है। बूंद अगर सोचे कि चलूं या नहीं चलूं, समुद्र में मिलने के बाद मेरा क्या अस्तित्व होगा, तो वह बूंद समुद्र नहीं बन सकती। जो बूंद एक बार समुद्र में मिल गई,
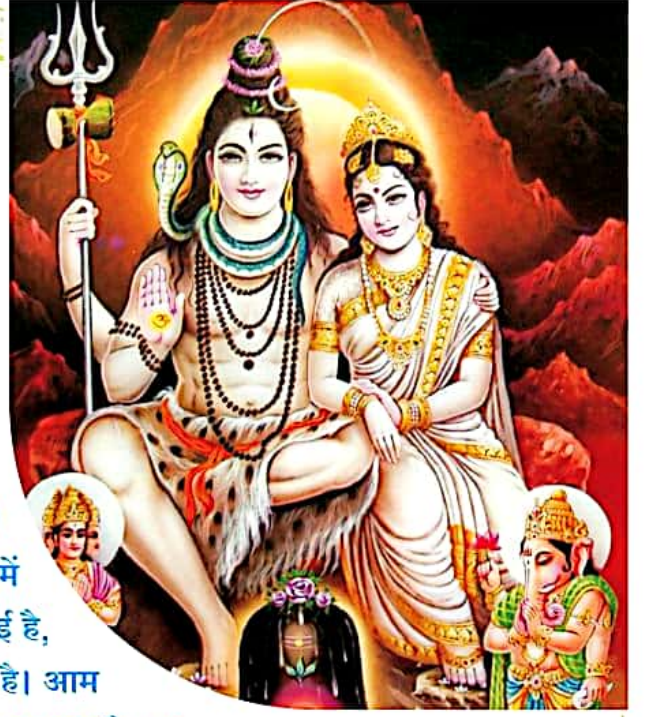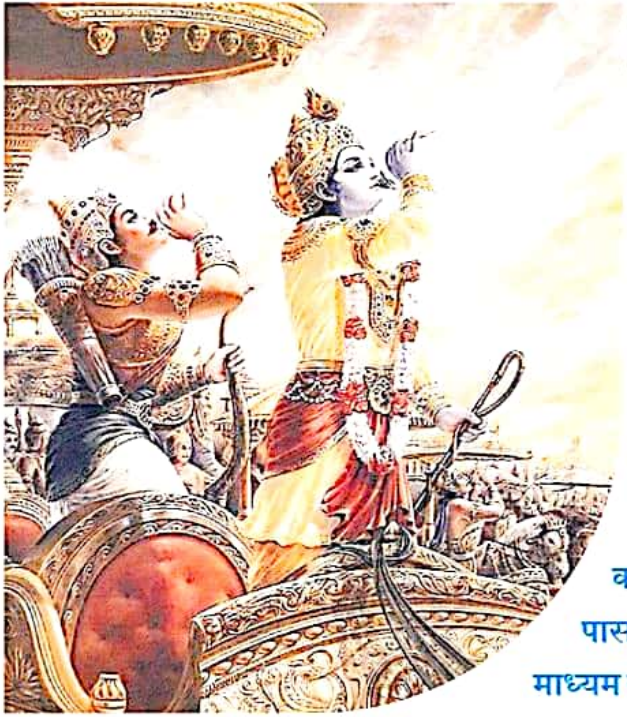
उसको फिर तुम अलग नहीं कर सकते, समुद्र में मिलते ही वह समुद्र बन जाती है।

योग की इसी भावभूमि में मैं तुम्हें समझा रहा हूँ कि तुम्हारा जीवन और मेरा जीवन अलग हो नहीं सकते, है ही नहीं। मेरे बिना तुम्हारे जीवन का अस्तित्व नहीं है। मेरे बिना तुम्हारा जीवन जीवन नहीं है, वह विषयी जीवन तो हो सकता है, वासना का जीवन तो हो सकता है, पर प्राणों का जीवन नहीं हो सकता है। क्योंकि तुम्हारे जीवन का प्राण मैं हूँ, चेतना मैं हूँ, तुम्हारे पास केवल शरीर है। और इस शरीर में, प्राणों की चेतना मेरे माध्यम से प्राप्त हो सकती है, क्योंकि मैं तुम्हारा गुरु हूँ।

और गुरु इसलिये हूँ कि तुमसे लेने की कुछ भावना नहीं है। गुरु इसलिये हूँ कि मुझमें आनन्द प्रदान करने की क्षमता है। जितने क्षण तुम्हारे मेरे साथ बीतते हैं, वे आनन्द के क्षण होते हैं। तुम आते हो मेरे पास और बहुत मस्ती के साथ रहते हो, खिलते हुए, खिलखिलाते हुए, झूमते हुए, मुस्कराते हुए और वापिस जाते हो, तो घर में चेहरे पर एक भी मुस्कराहट नहीं आती, एक क्षण भी सांस नहीं ले पाते हो, उसी बोझ में दबे रहते हो, इसलिये कि तुम्हारे पास जीवन था ही नहीं। तुम्हारे पास देह है और मैं उसमें प्राण तत्व जाग्रत कर सकता हूँ, चेतना मैं दे सकता हूँ। देने की कला मुझमें है, इसलिये मैं तुम्हारा गुरु हूँ।

और इसके लिये योग की क्रिया है, पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया है। शिष्य को अगर जुड़ने की क्रिया ही आती तो वह अपने आप कभी भी जुड़ जाता। वह गुरु के पास में तो आ सकता है, गुरु के चरणों में झुक तो सकता है, पर कैसे जुड़े? इसके अलावा वह क्या करे? विश्वामित्र का भी यही प्रश्न था कि मैं क्या करूँ? कैसे करूँ? आप कह रहे हैं कि प्राण तत्व में विसर्जित हो जाओ, तो मैं कैसे विसर्जित हो जाऊं? यह कला मुझे मालूम नहीं है। होती, तो मैं कभी का विसर्जित हो गया होता। फिर बार-बार आपको दु:ख नहीं देता, बार-बार मृत्यु को गले लगाने के लिये मजबूर नहीं होता, बार-बार उस गर्भ में दु:ख नहीं प्राप्त करता।

विश्वामित्र को गुरु ने कहा कि एक जन्म में भी हो सकता है और हो सकता है कि दूसरा जन्म लेना भी पड़े। परन्तु दूसरा जन्म लेना क्यों पड़ सकता है? परीक्षित ने यही प्रश्न पूछा वेदव्यासजी को कि राधा एक ही जीवन में पूर्णता को प्राप्त कैसे कर गई?

तुम भी जब तक झुक नहीं जाओगे, जब तक अपने आप को मिटा नहीं दोगे, तब तक तुम्हें भी जन्म लेने पड़ेंगे। और जब तक जन्म लोगे, मुझे फिर बार-बार अपने पास बुलाना पड़ेगा, आवाज़ देनी पड़ेगी, लेकिन यह सब तुम इस जीवन में भी कर सकते हो, उसके लिये कोई बहुत बड़ी घटना की जरूरत नहीं है, पांच-दस साल की जरूरत नहीं है, कोई मंत्र जाप की भी

जरूरत नहीं है। मंत्र जाप के माध्यम से प्राणों में समावेश नहीं हो सकता। अगर हो पाता तो फिर हजारों-लाखों लोग एक-दूसरे के प्राणों में समावेश हो जाते। प्राणों में समावेश तो विसर्जन होने की क्रिया है।

विश्वामित्र यही पूछ रहे हैं कि मैं प्राणों में समावेश कैसे करूं? क्योंकि मैं दूसरा जन्म लेना नहीं चाहता। जीवन के जिस मोड़ पर मैं खड़ा हूँ, जहाँ आपने मेरा हाथ पकड़ा है, बस यहाँ से मेरी जीवन की पगडण्डी मुड़नी चाहिये, जीवन में आनन्द आना चाहिये।

और मैं तुम्हें यही कह रहा हूँ, कि मैं तुम्हें आनन्द देना चाहता हूँ, सुख नहीं। मैं तुम्हारे लिये पंखे नहीं लगा रहा हूँ। सुख तो पंगु बना देगा, कमजोर बना देगा, रोगी बना देगा। और तुम्हें रोगग्रस्त नहीं होना है। श्मशान में जाकर सो जाना जीवन का आनन्द नहीं है। कृष्ण ऐसे नहीं सो पाये, राम ऐसे नहीं सो पाये, बुद्ध ने वह क्रिया नहीं की, महावीर ने वह क्रिया नहीं की, ईसा मसीह ने वह क्रिया नहीं की, सुकरात ने वह क्रिया नहीं की। वे जाग्रत रहे, जीवित रहे, क्योंकि जीवन के एक विशेष मोड़ पर उन्होंने गुरु को पकड़ लिया।

बुद्ध को भी गुरु मिले और धम्मपद में बुद्ध ने यही कहा है कि किस क्रिया से मैं लीन हो जाऊँ? बुद्धत्व प्राप्त होने की क्रिया क्या है? बुद्धत्व का मतलब है जहाँ बुद्धि समाप्त हो जाती है, जहाँ श्रद्धा पैदा हो जाती है, अहंकार का अन्त, बुद्धि का अन्त वह बुद्धत्व है, वह चेतना है, वहाँ प्राणों में पहुँचने की क्रिया है, विसर्जन की क्रिया है, यह ध्यान में उतरने की क्रिया है।

मैं तुम्हें कहूं कि तुम प्राणों में उतरो, तो पांच साल अभ्यास करने के बाद भी शायद नहीं उतर सको। क्योंकि तुम्हारा सारा जीवन विषय-वासना में लिप्त है, क्योंकि बाहरी संसार के साठ साल के जो भोग हैं, वो एकदम से खत्म नहीं हो सकते। और नहीं खत्म हो सकते, तो फिर जो तुम नहीं कर सकते, वह गुरु को करना चाहिये। क्योंकि गुरु तुम्हारा है, उसकी जिम्मेवारी है, गुरु जिम्मेवारी से बच नहीं सकता। अगर जिम्मेवारी से बचता है, तो वह भगोड़ा है, वह कायर है, बुजदिल है। वह तुम्हें बीच मझधार में छोड़ नहीं सकता। या तुमसे वायदा करे नहीं और अगर वायदा करता है, तो या तो तुम गुरु के प्राणों में विसर्जित हो जाओ या फिर गुरु ही तुम्हारे प्राणों को पकड़ कर अपने प्राणों में समावेश कर ले। दोनों में से कोई एक क्रिया हो, यह गुरु की जिम्मेवारी है।

इसलिये मैं यह नहीं कहता कि तुम एक दिन में बुद्धत्व प्राप्त कर लोगे। प्राणों में उतरने के लिये ध्यान योग की जो प्रक्रिया है वह लम्बी स्थितप्रज्ञ प्रक्रिया है, और समय बहुत कम बच

गया है। मैंने तुम्हें कहा कि तुम ध्यानस्थ होकर अन्दर उतरते जाओ, एक सीढ़ी, पांचवी सीढ़ी... दसवीं सीढ़ी तो अपने आप तुम्हें ब्रह्मत्व के दर्शन होंगे, दूधिया प्रकाश सा दिखेगा, मगर यह तो अभ्यास की बात है, एक दिन में ऐसा सम्भव नहीं हो सकता। बुद्ध ने कहा कि मैं सालों-साल तपस्या कर चुका हूँ, मगर इतने वर्षों के बाद भी मैं उस तत्व को प्राप्त नहीं कर पाया जहाँ से ब्रह्माण्ड को देख सकूँ। अर्जुन ने भी कहा कृष्ण मैं तुम्हें नहीं पहचानता कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हें सारथी समझ रहा हूँ, तुम इतनी लम्बी-चौड़ी बातें कर रहे हो, मैं नहीं समझ पा रहा हूँ।'

तब कृष्ण ने कहा 'तू नहीं देख पा रहा है, तो देख, मैं तुझे अपना विराट रूप दिखा रहा हूँ कि मैं क्या हूँ, अन्दर पूरा ब्रह्माण्ड है, तू देख सकता है। ये पूरा महाभारत युद्ध बाहर नहीं हो रहा है, मेरे अन्दर हो रहा है। ये सारा युद्ध मैं कर रहा हूँ। ये कौरव मेरे अन्दर बैठे हैं, पाण्डव मेरे अन्दर बैठे हैं, भीष्म पितामह शर-शैय्या पर लेटे अन्दर पड़े हैं। सब तू देख ले और इसलिये तू बस निमित्त हो जा।'

इसलिये अगर तुम नहीं देख सको, तो गुरु की जिम्मेवारी है कि वह करे। इसलिये अगर अब भी तुम गाण्डीव नहीं उठाओगे तो मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ कर उठाना है, हाथ में गाण्डीव देना है, और तीर मारने के लिये तैयार कर देना है, तुम्हें समझा देना है कि करना ही है तुम्हें। और तब तुम देख सकोगे कि जो सामने मंच पर बैठा हुआ व्यक्तित्व है, वह कौन है?

अभी तुम अलग बैठे हो,, मैं अलग बैठा हूँ, मैं तुम्हें समझा रहा हूँ और तुम समझ रहे हो। जब सुनने और समझने का भाव ही खत्म हो जाता है, देखने का भाव ही खत्म हो जाता है, द्वैत भाव ही खत्म हो जाता है, तब एकाकार हो जाता है।

तुम्हें जल्दी ही एक नये रास्ते पर बढ़ना है, जहाँ जीवन का प्रत्येक क्षण उत्सवमय हो सके, आनन्दमय हो सके। तुम्हारे चेहरे पर मुस्कराहट हो सके, आँखों में ओज आ सके, चेहरे के चारों ओर प्रभामण्डल आ सके, कोई देखे तो एहसास कर सके कि कोई व्यक्तित्व है मैं तुम्हें एक बहुत बड़ा व्यकित्व बनाने जा रहा हूँ। और केवल तुम्हें ही नहीं, ये बात पूरे भारतवर्ष को सुना रहा हूँ। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि तुम इतिहास के वो व्यक्तित्व बनने जा रहे हो, जहाँ पूरे भारतवर्ष का तुम दिशा-निर्देश कर सकोगे, मार्गदर्शन कर सकोगे, मैं तुम्हें सूर्य बनाना चाहता हूँ।

इसलिये जब मेरे प्राण और तुम्हारे प्राण एक हो सकेंगे, तो तुम्हारे प्राण फिर कुछ रहेंगे ही नहीं। मेरे प्राणों का विस्तार अगर पूरे ब्रह्माण्ड में है, तो निश्चय ही तुम्हारे प्राणों का विस्तार भी

पूरे ब्रह्माण्ड में होगा ही। और यह सब सम्भव हो सकेगा जब तुम मेरे प्राणों के पास रह सको, हर क्षण।

तुम मुझे भुला सकते नहीं, मेरा नाम आते ही तुम्हारी आँखों में आँसू आयेंगे ही, हर क्षण तुम्हारी स्थिति होगी ही कि मैं जाऊं और उनसे मिलूं। यह अलग बात है कि तुम्हारी विषय-वासना तुम्हें रोक देगी, जेब में पैसे नहीं हैं, कई और मजबूरियाँ हो सकती हैं। मगर उसके बाद भी तुम मेरे पास आने से अपने को रोक नहीं पाते हो। इसलिये नहीं रोक पाते, क्योंकि तुम्हारे और मेरे सम्बन्ध आज के हैं ही नहीं। पड़ोसी से तो मिले हुए तुम्हें दो-दो महीने बीत जाते हैं, जो बिल्कुल तुम्हारे बगल में ही रहता है। और मैं हजार मील दूर बैठा हूँ फिर भी तुम एक क्षण मुझे भुला नहीं पाते हो। मेरा नाम याद आते ही तुम्हारी आँखों में आँसू छलछलाने लगते हैं। एकदम धड़कन रुक जाती है, एहसास होता है, कि उनका मुस्कराना कुछ अलग है, बात करने की कला अलग है, चेतना अलग है, चाल अलग है, कहने का एक लहजा अलग है।

दस-बीस साल तुम अलग तो रह सकते हो, लेकिन बीस साल बाद भी तुम मुझे भुला नहीं सकते। ऐसे हजार उदाहरण हैं। बीस साल पहले शिष्य आया और फिर नहीं आ पाया। बाद में फिर आया तो बोला 'गुरुजी, मेरी मजबूरी हो गई थी, मैं नहीं आ पाया, मगर एक भी क्षण आपको भुला नहीं पाया। भुलाने की क्रिया हो ही नहीं सकती, क्योंकि मैं भुलाने की चीज ही नहीं हूँ, मैं याद रखने लायक चीज हूँ, मैं होठों पर गुनगुनाने लायक चीज हूँ। मैं आँखों में बसा लेने की चीज हूँ, प्राणों में बसा लेने की चीज हूँ।

इस बार इस जन्म में भी जब तुम मेरे पास आए हो तो अपने आप नहीं आये हो, मैंने तुम्हें खींचा है इसलिये तुम मेरे पास आ सके हो। और इस बार मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। इस बार तुम्हें फांसा है। अपने प्रेम की डोरी में बांधा है, चतुराई से बांधा है। और अगर मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूँ, तो मैं तुम्हें फांस भी सकता हूँ। तुम्हारे प्राणों को बांध सकता हूँ, तुम अपने प्राणों को मुझसे अलग नहीं कर सकते।

जिस क्षण में तुम जी रहे हो, उसी क्षण में तुम छलांग भी लगा सकते हो। तुम्हें एक क्षण की जरूरत है, एक हिम्मत और हौंसले की जरूरत है। जब राम ने हनुमान को कहा कि तुम्हें सीता की खबर लानी है, तो सुग्रीव, नल, नील, जाम्बवन्त और हनुमान सब समुद्र के किनारे पहुँचे और कहा कि यहां से लंका के बीच में चार सौ योजन लम्बा समुद्र है, तैर कर तो इतना पार नहीं हो सकता। जाम्बन्त ने कहा कि मैं वृद्ध हो गया हूँ, अब शरीर इतना घिस गया है, कि अब मैं छलांग लगा कर लंका पर नहीं उतर सकता। उस किनारे पर नहीं जा सकता। नल ने कहा कि

मुझमें भी यह क्षमता नहीं है, हनुमान ने भी कहा कि मैं भी नहीं कर सकता। जाम्बवन्त ने कहा 'हनुमान, तुम छलांग लगा सकते हो, तुम्हें मालूम नहीं कि तुममें कितनी क्षमता है, तुम नहीं जानते, मगर मेरी अनुभवी आँखें कह रही हैं कि तुम छलांग लगा सकते हो।

और मैं भी तुम्हारी हिचकिचाहट को जानता हूँ, मैं खुद तुम्हारे हाथ को पकड़ कर भी छलांग लगा सकता हूँ। और जब मैं लगाऊंगा तो निश्चय ही जब तुम अपनी कुण्ठाओं से बाहर आओगे तो तुम्हारा शरीर एक विशेष गन्ध से महकता हुआ होगा, तुम्हारे आँखों में एक नवीन भाव होगा, प्रेम की लालिमा होगी, एक नृत्य होगा, पूरा जीवन संवरा हुआ होगा, हाथ मोतियों से भरे हुए होंगे। मैं तुम्हें ऐसा ही आशीर्वाद देता हूँ कि तुम छलांग लगा सको और आनन्दमय, ब्रह्ममय बन सको।

आशीर्वाद... आशीर्वाद... आशीर्वाद...

सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

निखिलेश्वरानन्द

चैतन्य माला

405/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

निखिलेश्वरानन्द स्तवन ग्रंथ मात्र भक्ति काव्य या लीला स्वरूप वर्णन ही नहीं, अपितु ब्रह्माण्ड की रश्मियों के विशेष संयोजन से उद्भूत हुआ है। इसका एक-एक श्लोक मंत्रमय है और अत्यंत प्रभावकारी है। यह स्तवन तो सद्गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी को प्रसन्न करने की ही मांत्रिक प्रक्रिया है। यह स्तवन स्वयं में इतना अद्भुत है कि इसके पाठ मात्र से ही वातावरण में दिव्यता व पवित्रता आ जाती है, मनोवांछित कार्य सफल हो जाते हैं, किन्तु स्तवन पाठ के अनगिनत लाभों का साधकों ने कम ही अनुभव किया है।

संभवतः वातावरण दोष, पूर्व जन्म आदि अनेक कारण हो सकते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए विशेष 'निखिलेश्वरानन्द चैतन्य माला' को तैयार किया गया है। निखिल स्तवन के संस्करण में दी गई विशेष गुरु पूजन विधि के अनुसार पूजन कर तथा इस माला को धारण करने के बाद आपके द्वारा किया गया पूजन, स्तवन निश्चित रूप से पूज्यपाद सद्गुरु तक पहुँचता ही है और साधकों को उनका आशीर्वाद प्राप्त होता ही है। यह माला गुरु साधनाओं में पूर्ण सफलता के लिए भी आवश्यक है। साधक जब भी गुरु पूजन, गुरु ध्यान, स्तवन पाठ करें, तो इस माला को गले में धारण करने का विशेष महत्व है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

• आपका भाग्य स्वयं आपके हाथ में है

भाग्योदय साधना

राजा भतृहरि ने अपने नीति श्लोक में लिखा हैं कि मनुष्य का भाग्य उस व्यक्ति के समान है, जिसके मस्तक पर आगे तो केश हैं और पीछे से केश रहित हैं।

अत: जब भी अवसर प्राप्त हो भाग्य को पकड़ लो, अन्यथा वह हाथ से निकल जाता हैं और पुन: ऐसा अवसर कई वर्षों बाद आता हैं, सद्गुरुदेव बार-बार अपने प्रवचनों में कहते थे कि 'ब्रह्मा भाण्डोधरा, विधाता लिखे ललाट पट्टे' अर्थात् ब्रह्मा का कार्य तो एक कुम्हार की तरह संसार में मनुष्यों को बर्तनों की भांति बनाना हैं, और विधाता अपनी लेखनी से उसके ललाट पर भाग्य अंकित करता है। क्या मनुष्य अपनी कर्मशक्ति, इच्छाशक्ति और ज्ञान शक्ति से स्वयं अपना भाग्य लिख सकता है? मनुष्य के लिए देवता आराध्य अवश्य है, लेकिन उसके साथ ही साथ वे उसके सहयोगी भी है, और जो साधक साधना करता है, वह अपना भाग्य स्वयं लिखने में समर्थ हो जाता है, और देवता भी उसके सहयोगी बन जाते है।

आर्थिक दृष्टि से पूर्ण भाग्योदय की एक अनूठी साधना जिसे सम्पन्न कर आप अपने जीवन में नया अध्याय स्वयं प्रारंभ कर सकते हैं -

जीवन में कर्तव्य आवश्यक हो सकते हैं, लेकिन जिस प्रकार से कर्तव्य आकर जीवन को ग्रसित कर लेते हैं, वह न तो आवश्यक होता है न सहज। बचपन, बचपन के बाद किशोरावस्था, किशोरावस्था के बाद यौवन और इसी यौवन की प्रथम सीढ़ी पर पाँव रखते ही कर्तव्यों का संसार भी प्रारंभ हो ही जाता है। स्वयं खुद के भरण-पोषण के साथ-साथ माता-पिता का दायित्व छोटे भाई-बहनों का परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से दायित्व एवं स्वयं अपने परिवार की जिम्मेदारी - यही लगभग पचहत्तर प्रतिशत व्यक्तियों के जीवन की कथा है। शेष पच्चीस प्रतिशत में हो सकता है कि उन्हें पैतृक सम्पदा मिली हो, पारिवारिक दायित्व, किन्हीं अन्य सुविधाओं से या तो न हो अथवा सीमित हो, किन्तु फिर भी जीवन-यात्रा तो शेष रह ही जाती है।

जीवन में है
सदा धन का अभाव

बन्द पड़े हैं सभी
भाग्य के द्वार

धनोपार्जन के
सभी मार्ग बंद हो

कर्म शक्ति, इच्छा शक्ति
और ज्ञान शक्ति से
भाग्य बदलेगा
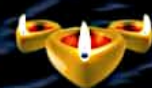
घर का व्यवसाय या पैतृक सम्पत्ति मिल जाती है किन्तु सम्पत्ति प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता और सफलता नहीं मानी जा सकती, इसके बाद भी विवाह, खुद का स्वास्थ्य, शत्रु–निवारण, घर की शांति जैसे बहुत से पक्ष शेष रह जाते है, दूसरी ओर सामान्य व्यक्ति को तो प्रारंभिक बिन्दु अर्थात् धन के उपार्जन से ही अपने जीवन का प्रारंभ करना पड़ता है।

प्रायः 20-22 वर्ष की अवस्था आते-आते व्यक्ति को अपने भविष्य और भावी जीवन की चिंतायें आकर घेर लेती ही है। स्वयं व्यवसाय अथवा नौकरी इनमें से किसका चुनाव किया जाए, इस बात का द्वंद्व प्रारंभ हो ही जाता है। कुछ सौभाग्यशाली होते है जिन्हें पैतृक रूप से जीवन-यापन का मार्ग मिल जाता है। घर का व्यवसाय या पैतृक सम्पत्ति मिल जाती है किन्तु सम्पत्ति प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता और सफलता नहीं मानी जा सकती, इसके बाद भी विवाह, खुद का स्वास्थ्य, शत्रु-निवारण, घर की शांति जैसे बहुत से पक्ष शेष रह जाते है, दूसरी ओर सामान्य व्यक्ति को तो प्रारंभिक बिन्दु अर्थात् धन के उपार्जन से ही अपने जीवन का प्रारंभ करना पड़ता है।

जीवन के कर्तव्यों और इन आवश्यक प्राथमिक पक्षों को यदि क्षण भर के लिये परे रखकर देखें तो व्यक्ति की अपनी इच्छाओं और भावनाओं का भी संसार होता है, और वह संसार ही उसके दैनिक जीवन में सरसता तथा गति का आधार होता है। लेकिन कब जीवन कर्तव्य भावना और वास्तविकताओं के बीच गड्ड-मडड होकर बीत जाता है इसका पता ही नहीं चलता और जब तक लगता है, जीवन में कुछ ठहराव आता है तब तक खुद ही संतान बड़ी हो गई लगती है। पता लगता ही नहीं कि यौवन की उस पहली सीढ़ी के बाद कब 20-22 वर्ष बीत गये और जीवन के उस चरण तक आने के बाद मन में उमंगे बची हो या न बची हो जीवन में आशा शेष रह गयी हो या न रह गयी हो, कुछ कहा नहीं जा सकता।

एक प्रकार से देखा जाए तो प्रायः पच्चीस वर्ष की अवस्था में कंधों पर कर्तव्यों का जो जुआ लाकर रख दिया जाता है, वह फिर मृत्यु के साथ ही उतरता है और उतरता कहाँ है? व्यक्ति जाते-जाते अपनी संतानों के कंधे पर रखकर चला जाता है, इसका क्या कारण है, इसका क्या उपाय है, यह सोचने के अवसर जीवन में आते ही नहीं क्योंकि धन कमा कर कुछ फुर्सत पायी तो पत्नी की बीमारी सामने आकर खड़ी हो गयी पत्नी स्वस्थ हुई तो बेटा पढ़ाई में कमजोर पड़ने लगा, उससे निपटे तो कहीं धन फस गया ज्यों-ज्यों उसको भी निबटाया तो खुद स्वास्थ्य . . .

साधक पत्रिका में वर्णित साधनायें पढ़ते हैं, उनका लाभ भी प्राप्त करते हैं किन्तु उनके मन में एक प्रश्न शेष रह जाता है कि जीवन पूरी तरह से क्यों नहीं संवर रहा है? उन्हें शंका होती है मैंने अमुक-अमुक साधनायें, दीक्षायें भी ली किन्तु पूर्णरूप से लाभ नहीं मिल सका और एक प्रकार से उनका सोचना गलत भी नहीं है क्योंकि प्रत्येक जागरूक साधक अपनी ओर से अपनी क्षमता भर प्रयास करता ही है, इसमें कमी केवल यह रह जाती है कि उनके जीवन में प्रत्येक साधना आवश्यक होते हुए भी फल अपने विशेष स्वरूप के अनुसार ही देती है, जबकि जीवन की सफलताएं अनेक पक्षों में निर्मित होती हैं।

जीवन के अनेक पक्ष और वे भी पूर्णता से, प्रत्येक साधना नहीं समेट सकती जबकि एक इच्छा के बाद दूसरी

जीवन में अनके पक्ष और
वे भी पूर्णता से,
प्रत्येक साधना नहीं समेट सकती
जबकि
एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा
का जन्म होता ही है,
एक स्थिति में
सफलता मिलने के बाद
दूसरी स्थिति भी सामने
आती ही है,
और इनकी
पूर्ति करना भी कोई दोषयुक्त
कार्य भी नहीं है।
जीवन के
ऐसे चिंतन को लेकर
योगियों ने वे सूत्र ढूँढने चाहे
जो जीवन के
आवश्यक सूत्र हैं
और
उनके साथ ही साथ
कोई ऐसी साधना भी प्राप्त
करनी चाही
जो जीवन के
सभी प्रारंभिक और
आवश्यक तत्वों को
अपने
साथ समेटती हो।

जीवन में साधनाएं तो महत्वपूर्ण होती है, उनके साथ ही साथ वे दिवस भी महत्वपूर्ण होते हैं, जिनका तादात्म्य साधना विशेष से किया जाए, अर्थात् उचित मुहूर्त का समन्वय उचित साधना से कर दिया जाए। यों तो जीवन में कोई भी साधना कभी भी सम्पन्न की जा सकती है किन्तु जो साधनायें प्रारंभ की, आधार एवं एक प्रकार से अंकुरण की साधनाएं होती है उनके संदर्भ में मुहूर्त का महत्व सबसे अधिक होता है।

जीवन में तीन शक्तियां इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और कर्म शक्ति का प्रभाव पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, लेकिन इन सारी शक्तियों के साथ ही यह भी आवश्यक है कि मनुष्य का प्रारब्ध जिसे भाग्य कहा गया है कि वह भी उसका साथ दे, जब भाग्य और कर्म का संयोग होता है तो व्यक्ति निश्चय ही अपने जीवन में बाधाओं से मुक्ति पाकर भौतिक पक्ष एवं आध्यात्मिक पक्ष दोनों को उज्ज्वल कर देता है। जीवन तो सभी व्यक्ति जीते हैं लेकिन भाग्य का वरदान गुरु कृपा से अवश्य ही प्राप्त होता है। भाग्य से प्राप्त सुख से मनुष्य यदि गर्व नहीं करे और उसे गुरु कृपा का आशीर्वाद समझें तो उसका भाग्य कई गुना बढ़ जाता है।

इच्छा का जन्म होता ही है, एक स्थिति में सफलता मिलने के बाद दूसरी स्थिति भी सामने आती ही है, और इनकी पूर्ति करना भी कोई दोषयुक्त कार्य भी नहीं है। जीवन के ऐसे चिंतन को लेकर योगियों ने वे सूत्र ढूंढने चाहे जो जीवन के आवश्यक सूत्र हैं और उनके साथ ही साथ कोई ऐसी साधना भी प्राप्त करनी चाही जो जीवन के सभी प्रारंभिक और आवश्यक तत्वों को अपने साथ समेटती हो। उन्होंने अपने निष्कर्षों में पाया कि जीवन के ऐसे पक्ष कुल 14 हैं, जिनमें धन प्राप्ति, स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख, शत्रु बाधा निवारण, राज्य सम्मान, विदेश यात्रा योग, पुत्र सुख इत्यादि सम्मिलित किये और यह निष्कर्ष निकला कि जीवन में इन चौदह स्थितियों को प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता है जिसे उन्होंने भाग्योदय के नाम से वर्णित किया, जिसके द्वारा जीवन की प्रारंभिक स्थितियों को सुधारने के साथ ही साथ जीवन की भावी योजनाओं की पूर्ति भी हो सके।

जीवन में साधनाएं तो महत्वपूर्ण होती है, उनके साथ ही साथ वे दिवस भी महत्वपूर्ण होते हैं, जिनका तादात्म्य साधना विशेष से किया जाए, अर्थात् उचित मुहूर्त का समन्वय उचित साधना से कर दिया जाए। यों तो जीवन में कोई भी साधना कभी भी सम्पन्न की जा सकती है किन्तु जो साधनायें प्रारंभ की, आधार एवं एक प्रकार से अंकुरण की साधनाएं होती है उनके संदर्भ में मुहूर्त का महत्व सबसे अधिक होता है। ठीक यही बात उन साधनाओं के संदर्भ में भी कही जा सकती है जो सम्पूर्णता की साधनायें है।

भाग्योदय साधना ही विशिष्ट साधना है जिसका संबंध निश्चित सिद्धि दिवस 21/06/2020 से किया गया है। सिद्धाश्रम पंचांग द्वारा प्रणीत यह मुहूर्त अत्यंत उच्चकोटि का मुहूर्त है और जहाँ सिद्ध योगी इस दिवस का उपयोग किसी उच्चकोटि की साधना को सम्पन्न करने में करते है वही गृहस्थ व्यक्ति इस दिन का उपयोग भाग्योदय साधना में कर सकते हैं। उच्चकोटि की साधनाओं में प्रवेश लेने से पूर्व महाविद्या साधना अथवा जगदम्बा साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने हेतु भी भाग्योदय साधना सम्पन्न करना अति आवश्यक माना गया है।

इस साधना की मूलशक्ति माँ भगवती महालक्ष्मी हैं और जहाँ केवल महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से साधक को धन, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है वहीं महालक्ष्मी को आधार बनाते हुए इस दिवस की भाग्योदय साधना सम्पन्न करने से उसे सर्वविधि सौभाग्य प्राप्त होता है। एक प्रकार से महालक्ष्मी अपने एक हजार आठ वर्णित स्वरूपों के साथ पूर्ण कृपालु हो जाती है और विशेष यंत्रों के माध्यम से विशेष प्रक्रिया के द्वारा उनको चिरस्थायित्व दिया जा सकता है, जिससे साधक के जीवन में कदम कदम पर बाधाएं और अड़चने न आए।

साधक को चाहिए कि इस दिवस की साधना सम्पन्न करने के लिये समय से बहुत पहले ही सचेत होकर इस साधना की सामग्री को प्राप्त कर लें, क्योंकि यह अवसर ऐसा विशिष्ट अवसर है जो वर्ष में केवल एक बार ही घटित होता है।

साधना विधान

इस साधना में केवल तीन सामग्रियों की आवश्यता होती है – पारद श्रीयंत्र, सौभाग्य शंख एवं कमलगट्टे की माला इसके अतिरिक्त इस साधना में किसी विशेष विधि–विधान या पूजन की आवश्यकता नहीं है। यदि साधक के पास महालक्ष्मी का चित्र हो तो वह मढ़वा कर स्थापित कर दे अथवा महालक्ष्मी के किसी भी स्वरूप का प्राण–प्रतिष्ठित चित्र प्राप्त कर उसे साधना हेतु मढ़वाकर स्थापित कर लें।

साधना दिवस के दिन प्रातः आठ से दस बजे के मध्य में अवश्य बैठ जाए और समय को इस प्रकार से निश्चित कर लें कि साधना साढ़े दस के पहले–पहले अवश्य पूर्ण हो जाए। महालक्ष्मी के चित्र के सामने घी का बड़ा दीपक लगाए, कुंकुम, अक्षत, पुष्प की पंखुडियां एवं नैवेद्य से उनको पूजन करने के उपरांत केसर से स्वस्तिक चिन्ह अंकित कर उस पर सौभाग्य शंख स्थापित करें और पहले से ही चुनकर रखे चावल के 108 बिना टूटे दानों को उच्चारण करते हुये एक–एक दाना सौभाग्य शंख पर समर्पित करें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीआगच्छगच्छ
मम मंदिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

इस पूजन के उपरांत कमलगट्टे की माला से श्रीयंत्र पर त्राटक करते हुये निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।

मंत्र जप के उपरांत भगवती महालक्ष्मी की आरती करें और प्रार्थना पूर्वक अपने स्थान को छोड़े। उस सम्पूर्ण दिवस पूजन सामग्री को स्थापित रहने दें लेकिन ध्यान रखें कि चूहे आदि पूजा स्थान को अव्यवस्थित न करें। सायंकाल गोधूलि के पश्चात् उपरोक्त मंत्र की एक माला जप पुनः करें तथा सौभाग्य शंख, चढ़ाये चावलों और पुष्प की पंखुडियों को किसी रेशमी कपड़े में बाँध लें जो आपके जीवन में स्थायी सौभाग्य के रूप में विद्यमान रहेंगे। सौभाग्य शंख एवं कमलगट्टे की माला को अगले दिन प्रातः विसर्जित कर दें और श्रीयंत्र को किसी भी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

सौभाग्य प्राप्ति की यह विशेष सिद्ध सफल साधना किसी भी आयु का कोई भी साधक या साधिका सम्पन्न कर सकती है।

साधना सामग्री : 600/–

अंधे को भी नेत्र ज्योति देने वाला
चाक्षुष्मति मंत्र
एक गोपनीय
और दुर्लभ मंत्र
विवस्वत सप्तमी
27.06.2020
या
शुक्ल पक्ष
के किसी भी
रविवार से
आँखों सम्बन्धी किसी भी रोग
को समाप्त करने में सहायक

चाक्षुषोपनिषद्

व्यक्ति के चेहरे पर विधाता ने कदाचित सर्वाधिक सुंदर वस्तु उसकी दो आँखें बनाई हैं। जहाँ स्वच्छ व निर्मल आँखें अपने आप में सम्पूर्ण सौन्दर्य को प्रदर्शित करती हैं वहीं आकर्षक चमक एवं लपक से भरी आँखें व्यक्ति के व्यक्तित्व को एक अतिरिक्त आयाम देती हैं। दृष्टि अपने आप में जीवन का पर्याय है इसी से हमारे ऋषियों ने दृष्टि को जीवन एवं अंधता को मृत्यु की संज्ञा दी है।

मैंने अपने वर्षों के चिकित्सकीय जीवन में सैंकड़ों रोगियों को देखा है, परखा है एवं स्वस्थ किया है एक सफल होम्योपैथ के रूप में मैं अपने शहर में सुविख्यात हूँ। अपने चिकित्सा विज्ञान में एक परिपूर्णता का अभाव अनुभव कर मैं अतिरिक्त ज्ञान के लिये भी सतत प्रयत्नशील रहा एवं इसी क्रम में पूजनीय डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी से भी भेंट की। मेरा मंतव्य था कि मैं उनके सान्निध्य में रहकर सम्मोहन विज्ञान सीखूं और उसका चिकित्सक की दृष्टि से उपयोग करूँ। मुझे अपने इस प्रयास में आशातीत सफलता मिली और कई एक रोगियों विशेषकर मानसिक जटिलता से संबंधित रोगियों के उपचार में तो स्वयं हतप्रभ रह गया हूँ कि इस माध्यम से कितना सही व प्रामाणिक उपचार संभव है।

मेरे चिकित्सकीय जीवन में एक बार एक अलग ढंग का रोगी आया जो नेत्र रोग से पीड़ित था एवं आंखों की अनेक पीड़ाओं के साथ ही साथ उसके चश्मे का नंबर निरंतर घटता बढ़ता ही रहता था। मैंने प्रारंभ में उसका अपने चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से उपचार करना चाहा किंतु सामान्य सफलता ही हाथ लगी। मैंने उसे एक चुनौती मानकर ठीक करने की ठान ली।

उन्हीं दिनों मैं अपनी व्यक्तिगत साधना के संदर्भ में जोधपुर भी गया एवं पूज्य गुरुदेव से वार्तालाप के मध्य जिज्ञासा की कि क्या आँखों का कोई श्रेष्ठ आयुर्वेदिक उपचार भी संभव है। मैं इस तथ्य से परिचित था कि वे आयुर्वेद के भी प्रकांड ज्ञाता हैं एवं उन्होंने अनेक असाध्य रोगियों को इस विद्या के माध्यम से लाभ पहुंचाया है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद के माध्यम से भी उपचार संभव है किन्तु उन्होंने ज्योतिष के क्षेत्र से भी यह अनुभव किया है कि इस रोग के पीछे मुख्य रूप से कारण, व्यक्ति का सूर्य ग्रह या उसके शरीर में सूर्य तत्त्व निर्बल होना होता है। उन्होंने इस विषय में बताया कि व्यक्ति का मंत्रात्मक उपचार किया जाये तो अधिक फलप्रद होता है। उन्होंने इस विषय में बताया कि व्यक्ति के शरीर में ही नहीं इस सम्पूर्ण सृष्टि में ही सूर्य तत्त्व ही है जो गतिशीलता का आधार है इसी कारणवश सूर्योपासना हमारे दैनिक जीवन का एक आवश्यक अंग होनी ही चाहिए।

मेरे आग्रह पर उन्होंने गोपनीय 'चाक्षुषोपनिषद्' को स्पष्ट किया जो कृष्ण यजुर्वेद का एक अंग है। जब व्यक्ति का नेत्र-रोग सभी उपचारों के बाद भी न दूर हो तब उसे निश्चित मानना चाहिए कि उसका रोग पूर्वजन्म कृत दोष के कारण है एवं इस मंत्रात्मक पद्धति से सामान्य परिस्थितियों जैसे अनुवांशिकता से प्राप्त, चोट के कारण प्राप्त, कुपोषण से प्राप्त नेत्र दोष के साथ ही साथ पूर्वजन्म कृत दोष से प्राप्त नेत्र दोषों का भी परिहार संभव होता है।

साधना समय

आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को विवस्वत सप्तमी है। भगवान सूर्य का एक नाम विवस्वान भी है। इस सप्तमी के दिन भगवान सूर्य विवस्वान नाम से विख्यात हुए अत: इस साधना को विवस्वत सप्तमी जो कि दिनांक 27 जून शनिवार को है, से आरम्भ कर सकते हैं या इसे शुक्ल पक्ष के किसी भी रविवार से प्रारम्भ कर नित्य निम्न स्तोत्र के ग्यारह पाठ करने चाहिए एवं रविवार को 108 पाठ करने चाहिए। इससे पूर्व संक्षिप्त रूप से सूर्य पूजन अवश्य करना चाहिए जिसमें गुरुध्यान, पूजन कर सूर्य देवता से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उसके नेत्र संबंधी सभी कष्टों का निवारण कर उसे तेजस्विता दें। आगे दिये गये मंत्र का जप करने के पूर्व गले में 'चक्षुष्मती यंत्र' धारण कर एक कांसे की थाली में जल रखें तथा सूर्य की ओर मुंह किये रहें तथा इस प्रयोग में स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र ही धारण करें। सूर्योदय का काल ऐसा काल होता है। जब व्यक्ति सूर्य की तेजस्विता को ग्रहण कर सकता है।

चक्षुष्मती विद्या

ॐ चक्षुष्मती तेजः स्थिरोभव। माम् पाहि पाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमय मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय यथाऽहमंधो न स्यां कल्पय कल्पय, कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि यानि पूर्व जन्मोपार्जितानिचक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ॐ नमो भगवते श्री सूर्योयक्षितेजसे नमः। ॐ खेचराय नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ असतो मा सद्गमय। ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय। ॐ मृत्योर्मामृतं गमय। उष्णो भगवानछुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरः प्रतिरूपः।

अर्थात् हे चक्षु के अभिमानी सूर्य देव। आप चक्षु के तेज के रूप में स्थिर हो जाएं। मेरी रक्षा करें, रक्षा करें। मेरी आँख के रोगों का शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना स्वर्ण जैसा तेज दिखला दें, दिखला दें जिससे अंधा न होऊं, कृपया वैसा ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन शक्ति का अवरोध करने वाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़ से उखाड़ दें। 'ॐ सच्चिदानंद स्वरूप' नेत्रों को तेज प्रदान करने वाले दिव्य स्वरूप भगवान भास्कर को नमस्कार। ॐ करुणा कर अमृत स्वरूप को नमस्कार। ॐ भगवान सूर्य को नमस्कार। ॐ नेत्रों के प्रकाश भगवान सूर्य देव को नमस्कार। ॐ आकाश विहारी को नमस्कार। परम श्रेष्ठ स्वरूप को नमस्कार। ॐ सबमें क्रिया शक्ति उत्पन्न करने वाले रजोगुण रूप भगवान सूर्य को नमस्कार। हे भगवान, आप मुझको असत् से सत् की ओर ले चलिए, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलिए, मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिए। ऊष्ण स्वरूप भगवान सूर्य शुचि रूप हैं। हंस स्वरूप भगवान सूर्य सुचि तथा अप्रतिरूप हैं। उनके तेजोमय स्वरूप की समता करने वाला कोई भी नहीं है।

जो भी साधक इस चक्षुष्मति विद्या का नित्य पाठ करता है उसे नेत्र संबंधी कोई रोग नहीं होता। उसके कुल में कोई अंधा नहीं होता। यह प्रयोग प्रारम्भ करके चौथे रविवार को 101 पाठ करने के बाद किसी ब्राह्मण को भोजन करायें। इसके बाद फिर नित्य 1 पाठ करते रहें।

यदि कोई गंभीर रोगी स्वयं पाठ करने में अक्षम हो तो उसके नाम का संकल्प कर कोई ब्राह्मण भी उसका पाठ कर सकता है। संस्कृत उच्चारण में कठिनाई अनुभव करने वाले पाठक हिन्दी अनुवाद का उच्चारण कर समान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। एक उल्लेखनीय बात यह है कि साधक अथवा रोगी रविवार के दिन बिना नमक का भोजन एक समय ही करें। पाठ समाप्त होने के बाद साधक कांसे की थाली में रखे जल को अपने दोनों नेत्रों को अधखुला रखकर उनमें छिड़कें और पांच मिनट तक आँखें बंद कर बैठा रहे तदुपरान्त ही दैनिक कार्य आरंभ करें। स्त्रियाँ रजस्वला काल में इसका पाठ न करें। पूर्ण शुद्धि छठे दिन से होती है।

साधना सामग्री- 300/-

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रीः करुणा एवच।
निर्मयो निरहंकारः सम दुख सुखः क्षमी।।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़ निश्चयः।
मय्यर्पित मनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

श्रीमद्भगवद गीता

हे अर्जुन ! मैं उन भक्तों को प्यार करता हूँ जो कभी किसी से द्वेष भाव नहीं रखते। सब जीवों के साथ मित्रता और दयालुता का व्यवहार करते हैं। अपनों से तो मित्रता का व्यवहार, दयालुता का व्यवहार करना या उनकी सहायता करना तो सामान्य मनुष्य के कार्य है किन्तु जो ममता रहित, अहंकार शून्य, दुःख और सुख में एक सा रहने वाला, सभी से एक सा व्यवहार करने वाला सदैव सन्तुष्ट मेरा ध्यान करने वाला विरागी, दृढ़ निश्चयी हैं और जिसने अपना मन बुद्धि मुझे समर्पित कर दिया है ऐसे प्रेमी भक्तजन मुझे अतिशय प्रिय हैं।

आंवले का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है। एक आंवले में दो संतरे के बराबर विटामिन सी पाया जाता है, जो कई बीमारियों में मददगार होता है। इसके सेवन से स्मरण शक्ति बढती है और देह की कान्ति और रंग में निखार आता है।

नाम भेद : संस्कृत-आमल, पंचरसा, शिवा, धातकी, अमृता, श्रीफल इत्यादि। हिन्दी-आंवला, गुजराती-आंवला, अंग्रेजी-Embelic Myrobalam

वर्णन - आंवले के वृक्ष भारतवर्ष के जंगलों में कुदरती तौर से बहुत पैदा होते हैं तथा बाग-बगीचों में भी बोकर लगाए जाते हैं। इस प्रसिद्ध फल को भारत में सभी जानते हैं। बनारस का आंवला भारतवर्ष में सबसे अच्छा होता है।

गुण-दोष और प्रभाव : आयुर्वेद के अंदर जितनी प्रभावशाली और रसायन औषधियों का उल्लेख हुआ है, उनमें हरीतकी (हरड़) और आंवला, ये दो औषधियाँ सर्वोत्कृष्ट मानी गई हैं। इनमें हरीतकी उष्णवीर्य और आंवला शीतवीर्य है। इसलिए आंवले का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसके बढ़िया फल ग्राही, मूत्रल, रक्तशोधक और रुचिकारक होने से ये अतिसार, प्रमेह, दाह, कामला, अम्लपित्त, अर्श, बद्धकोष्ठ, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, खाँसी इत्यादि रोगों को नष्ट करते हैं, दृष्टि को तेज करते हैं, वीर्य को दृढ़ करते हैं और आयु की वृद्धि करते हैं।

आयुर्वेद का शायद ही कोई ऐसा प्रकरण होगा जिसमें आंवले का उपयोग न आया हो।

आंवले के प्रति हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी अत्यंत पूज्यभाव प्रदर्शित किए गए हैं। इसकी उत्पत्ति के संबंध में पुराणों के अंदर एक बड़ी सुन्दर आख्यायिका है। वह इस प्रकार है - किसी पुण्य दिन के अंतर्गत भगवती पार्वती और लक्ष्मी प्रभासतीर्थ को गई थी। पार्वती ने लक्ष्मी से कहा कि देवि! आज हम स्वकल्पित किसी नूतन द्रव्य से हरि का पूजन करना चाहती हैं। लक्ष्मी ने कहा कि हम भी किसी नतून द्रव्य से शिव का पूजन करना चाहती हैं। उस समय उन दोनों की आंखों से भूमि पर आनन्दाश्रु गिरे और उन्हीं आंसुओं से माघ शुक्ल एकदशी के दिन 'आमलकी वृक्ष' की उत्पत्ति हुई, जिसको देखकर देवता और ऋषि आनन्द से पुलकित हो उठे।

आँवले में सारे रोगों को दूर करने की शक्ति है। आँवला युवकों को यौवन प्रदान करता है और बूढ़ों को युवा जैसी शक्ति। आँवले का मुरब्बा खायें। आँवले में विटामिन 'सी' सर्वाधिक होता है। मनुष्य को प्रतिदिन 50 मिलीग्राम विटामिन 'सी' की आवश्यकता होती है जो 1.6 औंस आँवले के रस में मिल जाता है। एक आँवला, दो संतरे के बराबर होता है। दाँतों और मसूड़ों को आँवला कठोर बनाता है। शरीर में आरोग्य शक्ति बढ़ाता है।

उपयोग : आँवले का मुरब्बा ताकत देने वाला होता है। कच्चे आँवले का रस पीना चाहिए।

हरे आँवले का रस 15 ग्राम और 15 ग्राम शहद मिलाकर प्रात: व्यायाम के बाद पीयें। पीने के पश्चात दो घण्टे तक कुछ न लें। ऐसा डेढ़ दो मास करने से काया पलट जाती है।

एक चम्मच आँवला चूर्ण दो घूट पानी के साथ सोते समय अंतिम वस्तु के रूप में लें। असमय बाल सफेद होने और चेहरे की कांति नष्ट होने में जादू सा असर करता है।

काले बालों के लिए : आँवले के कुछ टुकड़े नारियल तेल में पकाए। टुकड़े काले हो जाने के बाद ठण्डा करके उस तेल का उपयोग करें।

हरे आँवले का पेस्ट बालों की जड़ों में लगाए।

आँवला रस, नीम्बू का रस और बादाम तेल मिलाकर

- आंवला खाने से शरीर में प्रोटीन का स्तर अधिक होता है और नाइट्रोजन संतुलित होता है, जिससे फैट कम होता है और वजन घटाने में मदद मिलती है।
- आंवला खाने से खून साफ होता है। एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन सी के कारण त्वचा चमकती है।
- आंवले का जूस पेट से जुड़ी हुई कई समस्याओं के लिए काफी फायदेमंद होता है। कब्ज से राहत मिलती है।
- अगर पेट में जलन और गैस की समस्या है तो आंवले का जूस पीने से पेट में राहत मिलती है।

बालों की जड़ों में लगाए।

आँवला पाउडर एवं नीम्बू का रस मिलाकर कर बालों में लगाए।

झुर्रियाँ व झांई नित्य सुबह-शाम बादाम तेल की हल्की-हल्की मालिश करें एवं रात में एक कांच के गिलास में पानी भरकर इसमें 2 चम्मच पिसा आंवला भिगो दें और प्रातः पानी छानकर चेहरा नित्य इस पानी से धोयें ऐसा करते रहने से लाभ होता है।

स्वप्नदोष : एक मुरब्बे का आँवला नित्य खाने से लाभ होता है या काँच के गिलास में सूखे आँवले बीस ग्राम पीस कर डालें। इसमें 60 ग्राम पानी भरें और फिर बारह घण्टे भीगने दें। फ़िर छान कर इस पानी में एक ग्राम पिसी हुई हल्दी डाल कर पीयें। युवकों के स्वप्नदोष के लिए यह अच्छी औषधि है।

खूनी बवासीर : सूखे आँवले को बारीक पीसकर एक चाय चम्मच सुबह-शाम दो बार छाछ या गाय के दूध से लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

श्वेत प्रदर : तीन ग्राम पिसा हुआ आँवला चूर्ण, 6 ग्राम शहद में मिलाकर नित्य एक बार 30 दिन लेने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है। परहेज खटाई का रखें। या बीस ग्राम आँवले का रस शहद में मिलाकर एक माह लगातार पीने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

पेशाब की जलन : हरे आँवले का रस एक छटाँक, शक्कर या शहद आधा छटाँक थोड़ा पानी मिलाकर सुबह-शाम पीयें। यह एक खुराक है। इससे खुलकर पेशाब आएगा और जलन और कब्ज के साथ शीघ्रपतन में लाभदायक होगा।

पाचन शक्तिवर्धक : खाने के बाद एक चम्मच सूखे आँवले के चूर्ण लेने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

शक्तिवर्धक : पिसा हुआ आँवला एक चम्मच, दो चम्मच शहद में मिला कर चाटें, ऊपर से दूध पीयें। इससे सदा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। दिनभर प्रसन्नता का अनुभव होता है। जब ताजा आँवले मिलते हों तो प्रातः आधा कप आँवले के रस में दो चम्मच शहद आधा कप पानी मिला कर पीयें। ऊपर से दूध पीयें। इससे थके हुए ज्ञान-तंतुओं को उत्तम पोषण मिलता है। कुछ ही दिन नित्य पीने पर शरीर में नई शक्ति और चेतना आएगी जीवन में यौवन की बहार आयेगी। जो लोग स्वस्थ रहना चाहते हैं, उन्हें इस प्रकार आँवले का रस नित्य पीना चाहिये।

स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए नित्य प्रातः आँवले का मुरब्बा खायें।

नेत्र-शक्तिवर्धक : आँवले के सेवन से आँखों की दृष्टि बढ़ती है। पाव भर पानी में 6 ग्राम सूखा आँवला रात को भिगो दें। प्रातः इस पानी को छानकर आँखे धोयें। इससे आँखों के रोग दूर होते हैं और दृष्टि बढ़ती है। सूखे आँवले के चूर्ण की एक चाय की चम्मच की फंकी रात को पानी से लें।

चक्कर आना : गर्मियों में चक्कर आते हों, जी घबराता हो तो आँवले का शर्बत पीयें।

आँखें : त्रिफला (हर्र, बहेड़ा और आँवला) रात को पानी में मिट्टी के बर्तन में भिगो दें। प्रातः छानकर इस पानी से आँखें धोने से आँखे निरोग रहती हैं।

कब्ज : रात में एक चम्मच आंवला चूर्ण पानी से लेने से सुबह दस्त साफ आता है, कब्ज नहीं रहता, आतें एवं पेट साफ रहता है।

अगर कोई बालक बिस्तर में पेशाब कर देता है तो एक ग्राम पिसा हुआ आँवला, एक ग्राम पिसा हुआ काला जीरा और दो ग्राम पिसी हुई मिसरी मिला खिलाए और ऊपर से ठण्डा पीनी पीये। ऐसा करने से बिस्तर में पेशाब करने का रोग दूर हो जाता है।

(विशेष प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह ले लें।)

• गुरुदेव के आशीर्वाद से ही अज्ञान रूपी अंधकार दूर होता है।

कण कण में गुरुदेव

गुरुदेव का ध्यान कर मैं अपने चैम्बर में बैठा ही था, कि सामने दो रिक्शे आकर रुके। दोनों पर एक-एक महिला बैठी थी। दोनों महिलायें एक साथ रिक्शे से उतरीं और मेरे करीब आकर पहली महिला पैर पकड़ कर रोने लगी।

मैंने सांत्वना बंधाते हुए कहा - ''आखिर बात क्या है? आप इस कदर क्यों रोये जा रही हैं?''

मेरे सवाल को सुनकर दूसरी महिला गले की खराश को साफ करती हुई कहने लगी - ''ये मेरी भाभी के रिश्ते में लगती हैं। इनका बड़ा लड़का यानी मेरा भतीजा आज एक सप्ताह से बीमार है। कई बड़े-बड़े ड्रॉक्टरों को दिखा दिया लेकिन स्थिति जस के तस है। आपके बारे में जब जानकारी मिली तो लोगों ने कहा, कि आप ज्योतिषी एवं तांत्रिक गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के शिष्य हैं, सो आपके पास चली आई। जिस किसी भी तरह से हो, मेरे भतीजे सुबोध को बचा लीजिए . . . जीवन भर हम लोग आपके आभारी रहेंगे।''

मैंने सीधा-सा सवाल किया - ''इस वक्त सुबोध कहाँ है?''

''जी, रात से ही बेहोश अपने बिछावन पर पड़ा है। आप चल कर देख लीजिए . . .रिक्शा साथ लाई हूँ।''

''आप लोग रहती कहाँ हैं?''

''माधोपुर मुहल्ले में।''

''ठीक है, पाँच मिनट ठहरिये . . .फिर मैं चलता हूँ।'' अंदर कमरे में जाकर मैंने सद्गुरुदेव की तस्वीर को अपने पॉकेट में रख लिया और उसी रिक्शे से माधोपुर के लिए चल दिया।

सुबोध के घर पहुँचा, तो वहाँ मुहल्ले भर की औरतें भीड़ लगायें खड़ी थीं, कोई कुछ कह रही थी, कोई कुछ। मेरे वहाँ पहुँचते ही सभी आपस में कानाफूसी करने लगीं। करीब जाकर देखा, सुबोध के मुँह से झाग निकल रहा था और आँखें लाल-लाल अंगारे की तरह दहक रही थीं।

मुझे देखने के साथ ही सुबोध चीखने-चिल्लाने लगा और फिर शांत हो गया। उसके घर वालों ने कहा - ''जब भी इसे होश आता है, ये आपका ही नाम लेता है। आज पाँच दिन हो गये, इसने एक दाना भी नहीं खाया। डॉक्टरों का कहना है, कि इसके ब्रेन में पानी आ गया है, ये नहीं बचेगा।'' नब्ज टटोल कर देखा, काफी धीमी चल रही थी। शरीर बिल्कुल अकड़ा हुआ था। थोड़ी देर के लिए मैं भी सोच में डूब गया, कि क्या करूँ और क्या न करूँ? तभी सामने साक्षात गुरुदेव नजर आये, मानों वो मुझसे कह रहे हों - ''घबड़ाओं नहीं, निर्भीकता पूर्वक 'प्रेत निवारण मंत्र' का जाप शुरू करो... थोड़ी देर में सारी कहानी स्पष्ट हो जायेगी।'' मैंने रूमाल से सर के पसीने को पोछा और अंगीठी जला कर लाने को कहा। जलती अंगीठी में पाँच लाल मिर्च डाल कर सुबोध के बिछावन के नीचे रख दिया और उसी जगह आसन बिछा कर बैठ गया और मंत्र जप करने लगा। आधे घण्टे के बाद सुबोध पुनः होश में आ गया और उठ कर बैठ गया। कहने लगा - ''आप लोग यहाँ क्यों भीड़ लगाये खड़े हैं? मैं बिल्कुल ठीक हूँ . . . जाइये यहाँ से।'' मंत्रोच्चारण बंद कर मैं दूसरे दिन आने का वादा कर वहाँ से चल दिया। लेकिन संध्या समय ही उसके पिता जी ने आकर खबर दी, कि सुबोध की हालत पहले से भी ज्यादा नाजुक है, अतः मेरा वहाँ जाना जरूरी है। पुनः जब मैं वहाँ पहुँचा तो उसके मुँह से खून की उल्टी हो रही थी। पूछने पर पता चला, कि उसे शराब पीने की कभी आदत ही नहीं थी और न ही नशीले खाद्य पदार्थ खाने की आदत थी। फिर खून की उल्टी का होना

चिंताजनक बात तो थी ही। फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारा और मंत्र जाप जारी रखा। सुबोध पहले तो काफी उग्र हो उठा, फिर शांत भाव से कहने लगा - ''मुझे माफ कर दीजिए... मुझे माफ कर दीजिए, मैं आपके और आपके गुरुदेव के पाँव पकड़ता हूँ। जब तक आपके गुरुदेव मुझे माफ नहीं करेंगे, मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी।''

सुबोध के मुँह से इस तरह की बातें सुन कर मुझे घोर आश्चर्य हुआ। मैं समझ नहीं पा रहा था कि आखिर सुबोध किस बात के लिए माफी माँग रहा था। जलती हुई आग में मैंने पुन: लाल मिर्च डाला और दहाड़ते हुए कहा - ''सच-सच बताओ तुम कौन हो और यहाँ किसलिए आये हो? सुबोध ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

''क्षमा करें महाराज! पहले आप बतायें, कि आप मेरे ऊपर क्रोधित तो नहीं होंगे . . . आपके गुरुदेव मुझे माफ कर देंगे ना?''

''हाँ ! हाँ !... मेरे गुरुदेव तुम्हें ही क्यों, हर किसी को क्षमा प्रदान करते हैं, साक्षात् शिव स्वरूप हैं वो, बोलो आखिर बात क्या है? तुम्हारे मुँह से खून की उल्टी हो रही है। क्या तुमने विषपान किया है या शराब पी रखी है?''

''बताता हूँ... मैं सारी कहानी सुनाता हूँ। आप पहले बतायें, आपके गुरुदेव मुझे क्षमा कर देंगे ना?''

''हाँ ! हाँ !... कितनी बार कहूं, कि वो तुम्हें क्षमा कर देंगे।''

''भारती जी ! आज से दो वर्ष पूर्व में आपसे मिला था। मेरा नाम प्रभाकर सिन्हा है। मेरे हाथ की लकीरों को देख कर आपने कहा था, कि मेरे ऊपर शनि ग्रह की क्रूर दृष्टि है - अत: शनिवार के दिन काला कपड़ा धारण करूँ और किसी तेज वाहन की सवारी न करूँ। आपने हमें अपने गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के पास जाने को कहा था लेकिन तब मैंने आपकी बातों को मजाक समझा था। जमालपुर के जिस कारखाने में मैं काम करता था, वहीं के तमाम साथियों से मैं यही कहा करता था, कि अदना-सा भारती, ज्योतिषी बनने चला है, कहते हैं - मेरा सूर्यास्त हो चुका है। गुरुधाम जाकर जीवन दीक्षा प्राप्त कर आऊँ। सब बकवास है। ये तमाम लोग ढोंगी है। मुझे हुआ ही क्या है? बीस पचीस वर्ष और जिन्दा रहूँगा मैं। सच कहता हूँ भारती जी.... पूरे कारखाने में मैंने आपकी और आपके गुरुदेव की खिल्ली उड़ाई . . .।''

आगे सुबोध की आँखों से अश्रु धारा बहने लगी थी। चलचित्र की भांति मेरी आँखों के सामने दो वर्ष पूर्व की घटना याद हो आई, छोटा आशिकपुर के श्री कुलदीप तांती जमालपुर कारखाने में प्रभाकर सिन्हा के ही साथ काम किया करते थे। कुलदीप मुझसे कई वर्षों से जुड़े हुए थे। उन्हीं के कहने पर प्रभाकर मेरे पास आये थे। हाथ की लकीरों और जन्मकुण्डली के सूक्ष्म अध्ययन से मैंने पाया था, कि चालीसवें वर्ष में शनि मारकेश था। जीवन रेखा भी टूटी हुई थी। इसी के आधार पर मैंने भविष्यवाणी की थी, कि उसके जीवन का सूर्यास्त हो चुका है। उसे पूज्य गुरुदेव से मिलना चाहिए था क्योंकि उसे जीवन दान सद्गुरुदेव के सिवा कोई नहीं दे सकता। लेकिन जब हमें पता चला, कि कारखाने के लोग मेरा और गुरुदेव का उपहास उड़ा रहे हैं तो मैं मन ही मन हंस

का सूर्य कुछ दिनों में अस्त हो जायेगा, सो सच हो गया।

''यह आप क्या कह रहे हैं कुलदीप भाई?''

''मैं सच कह रहा हूँ भारती जी ! उस दिन शनिवार का ही दिन था। प्रभाकर रोज की तरह सुबह सात बजे अपनी ड्यूटी पर आ चुका था। बाहर काफी तेज बारिश हो रही थी। तभी टेलीफोन की घंटी बजी। टेलीफोन प्रभाकर का था। प्रभाकर की नानी का स्वर्गवास हो गया था। दाह संस्कार हेतु उसे अपने ननिहाल जाना जरूरी था। छुट्टी लेकर वो मोटर साइकिल से उसी वक्त ननिहाल के लिए रवाना हो गया। राजदूत मोटर साइकिल कोई और चला रहा था। प्रभाकर पीछे की सीट पर बैठा था। लक्खीसराय रोड के आगे राजदूत एक ट्रक से टकरा गई और.... उसी क्षण, उसी जगह प्रभाकर के प्राण पखेरू उड़ गये। छाती में चोट लगी थी। मुँह से खून की उल्टी हुई थी और....।'' कुलदीप की बातों को सुनकर मैं आश्चर्य चकित रह गया था। मैं केवल इतना ही कह पाया था - ''देखिये कुलदीप जी, हमें तकलीफ नहीं हुई थी लेकिन कोई गुरुदेव का उपहास करे, इस बात की मुझे तकलीफ हुई थी।''

सुबोध फिर से चीखने-चिल्लाने लगा
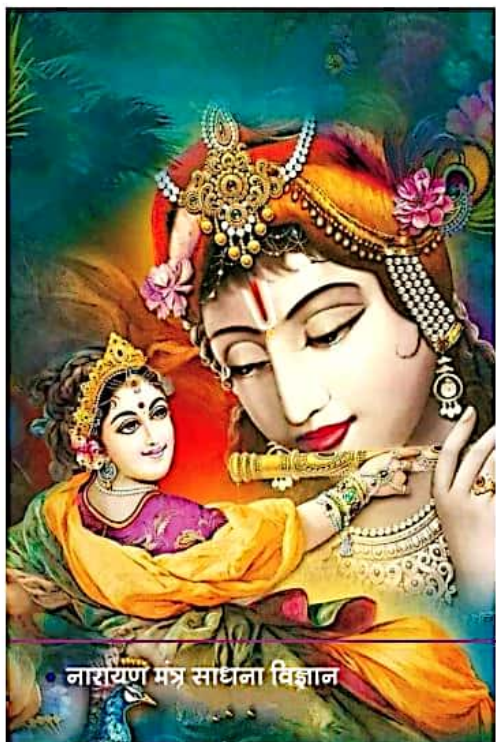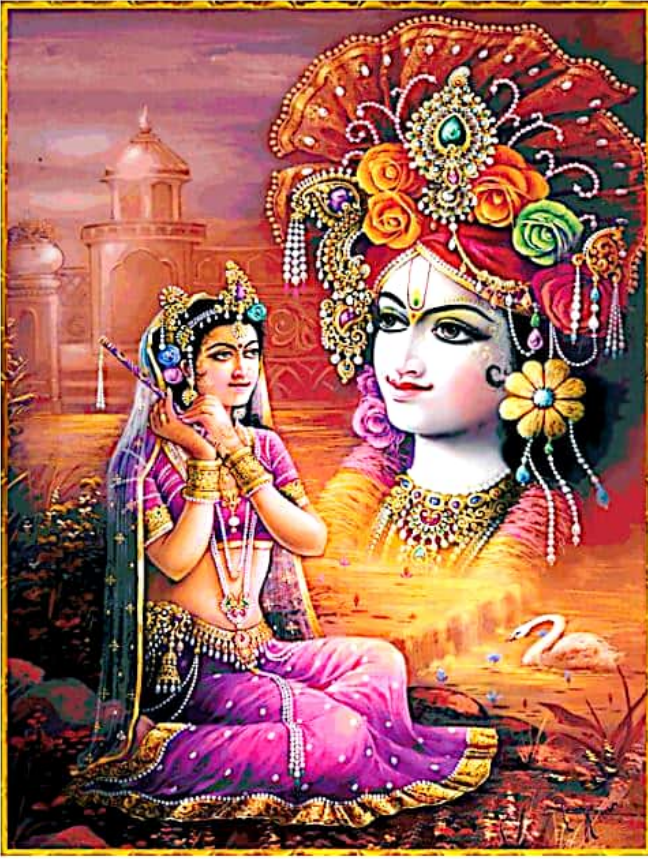
था। कुछ क्षण के लिए मैं अतीत में खो गया था, वर्तमान में लौट आया और सुबोध की बातों को ध्यान से सुनने लगा था - ''काश! मैंने आपकी बातों को मान लिया होता, तो मेरा सूर्य अस्त नहीं होता। शरीर छोड़ने के बाद भी मुझे मुक्ति नहीं मिली। जब तक आपके गुरुदेव मुझे क्षमा प्रदान नहीं करेंगे, मैं इसी तरह मुक्ति की तलाश में भटकता रहूँगा। आप हमें क्षमा कर दें।'' सुबोध बिछावन से उठ कर मेरे पैर पकड़ कर चीखने लगा ''हमारे सूक्ष्म शरीर के चारों तरफ आपके सद्गुरुदेव की तीसरी आँख से धधकती हुई आग की तेज ज्वाला निकलती है जिससे मेरी आत्मा को कष्ट होता है। उनकी वायुमण्डल में गूँजती हुई आवाज हमें सुनाई पड़ती रहती है - 'तू अगर भारती जी की बातों को मान लेता, तो तुम्हें यह शरीर छोड़ना नहीं पड़ता। जो दुर्घटनाएं घटीं, संभव था कि वे टल जातीं। जो लोग दुआ, ताबीज और रत्न के महत्त्व को नहीं समझते, उपहास करते हैं, उनका यही हश्र होता है। सभी तांत्रिक और ज्योतिषी ढोंगी नहीं हुआ करते।' आपके गुरुदेव की वाणी मेरी आत्मा को हमेशा छेदती रहती है। आग की तरह जलाती है। हमें अपने किये की सजा उस जन्म में भी मिली थी और इस परलोक में, सूक्ष्म शरीर को भी मिल रही है। आप यकीन कीजिए मेरी बातों पर पूरे ब्रह्माण्ड में जहाँ कहीं भी जाता हूँ गुरुदेव की तीसरी आँख से धधकती ज्वाला निकलती दिखाई पड़ती है। वो केवल गुरुदेव ही नहीं, तीनों लोकों के मालिक साक्षात शिव हैं।''

सुबोध के कंधे को झकझोरते हुए मैंने कड़े स्वर में पूछा - ''सब बातें सही हैं लेकिन पहले बताओ, कि तुमने सुबोध को कब, कहाँ और क्यों पकड़ा?'' मेरे इस सवाल के जवाब में तो पहले तो वह खिलखिला कर हँसा, फिर छाती पकड़ कर कराहते हुए कहने लगा - ''दुर्गा पूजा विसर्जन के दिन सुबोध मूर्ति विसर्जित करने के लिए सोझी घाट पहुँचा, वहाँ वह घाट के किनारे-किनारे घूमता हुआ काफी दूर निकल गया था... मैं वहीं अपनी नानी के साथ टहल रहा था, तभी उसने मेरी नानी को धक्के मार कर गिरा दिया। इस पर हमें क्रोध आया और फिर मैं सुबोध के साथ-साथ इसके घर चला आया। मुझे पता था, कि जब सुबोध बीमार पड़ेगा तो आप आयेंगे ही और आपके आने के साथ मैं सुबोध के माध्यम से आप से क्षमा माँग लूँगा और साथ ही साथ आपके गुरुदेव से भी।''

''अच्छा तो अब समझा, कि तुम सुबोध के शरीर पर क्यों आये।'' मैंने दुर्गा मंत्र के जाप के साथ-साथ गायत्री मंत्र का भी जाप शुरू कर दिया था।

''प्रभाकर ! जहाँ तक मेरी बात है तो मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ लेकिन मेरे गुरुदेव तुम्हें तभी क्षमा करेंगे जब तुम कान पकड़ कर सौ बार उठो-बैठो और थूक कर हर किसी के सामने थूक को अपनी जिह्वा से चाट जाओ . . . इससे पहले मेरे गुरुदेव तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे, इसलिए कि तुमने उनका अपमान किया है।'' तत्क्षण सुबोध काफी तेजी के साथ उठा और लगा कान पकड़ कर उठने-बैठने। पूरे सौ दफा उठने-बैठने के बाद उसने अपना थूक जमीन पर में का और नीचे झुक कर जीभ से चाट गया।

''भारती जी ! अब तो आपके गुरुदेव मुझे क्षमा कर देंगे ना ?''

''जी हाँ, मेरे गुरुदेव कहीं भी होंगे, इस वक्त वो मेरी बात सुन रहे होंगे और तुम्हें अवश्य ही क्षमा प्रदान कर देंगे।''

मेरे इतना कहते ही वो कहने लगा - ''हमें पानी पिला दीजिए . . . अब मैं सुबोध के घर से जा रहा हूँ . . .अब कभी इधर नहीं आऊँगा।''

तुलसी-गंगाजल मिलाकर पानी मैंने सुबोध के होठों से लगा दिया था। उसने एक-दो घूँट पिया और फिर दहाड़ मार कर सुबोध निढाल होकर जमीन पर गिर पड़ा। सब कुछ शांत हो चुका था। दस-पन्द्रह मिनट बाद जब सुबोध को होश आया, तो उठ कर अपनी माँ से पूछने लगा था - ''क्या बात है माँ ! भारती भैया को यहाँ क्यों बुलाया? अगली गुरु पूर्णिमा में हम लोग इनके गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के पास जाने वाले हैं - दीक्षा लेने के लिए। खड़ी क्यों हो . . . जाओ, इनके लिए एक कप चाय बना लाओ।'' धीरे-धीरे कमरे से भीड़ छंटने लगी थी। सभी खमोश थे। लेकिन मन ही मन खुश थे, कि सुबोध भला चंगा हो गया था। तब से आज तक दुबारा फिर कभी सुबोध के मुँह से खून की उलटी नहीं हुई और न ही बेहोश हुआ। मैं समझता हूँ, प्रभाकर की आत्मा को मुक्ति मिल गई होगी। मेरे गुरुदेव उसे अवश्य ही क्षमा प्रदान कर चुके होंगे।

(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका से)
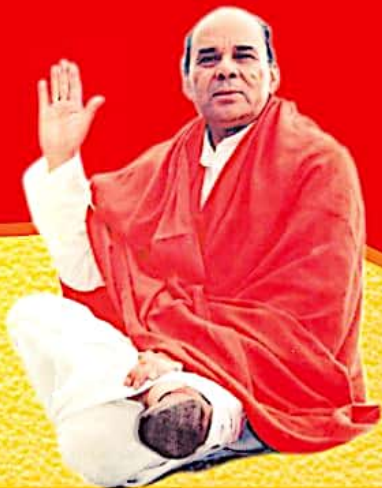
त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरू से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

चतुर्भिराद्यैः संयुक्तः श्रद्धावान् सुस्थिराशयः।
अनुब्धः स्थिर गात्रश्च प्रेक्षाकारी जितेन्द्रियः।।

शिष्य को श्रद्धावान तथा स्थिर आशय वाला, लोभ रहित, गात्रों (अपने अंगों) को स्थिर रखने वाला, आज्ञाकारी जितेन्द्रिय होना चाहिए।

आस्तिको दृढ़भक्तिश्च गुरौ मंत्रे सदैवते।
एवं विधो भवेच्छिष्य स्त्वितरो दुःखकृद्गुरोः।।

शिष्य को ईश्वर विश्वासी, गुरु में दृढ़ आस्था रखने वाला भक्ति विश्वास से पूर्ण ओत-प्रोत होना चाहिए। शिष्य के लिए गुरु और मंत्र में भेद करना उचित नहीं है और यदि ऐसा वह करता है तो इससे गुरु को दुःख पहुँचता है।

गुरुच्यमाने वचने दद्यादित्थं वचः सदा।
प्रसीद नाथ ! देवेति तथेति च कृतादरम्।।

शिष्य को चाहिए कि वह गुरु के वचनों पर पूरा ध्यान दे। हे गुरुदेव ! आप मुझ पर प्रसन्न हो इस प्रकार आदर सहित वचन बोलने वाला होना चाहिए।

प्रणम्योपविशत् पार्श्वे, तथा यच्छेदनुज्ञया।
मुखावलोकी सेचेत कुर्यादादिष्टमादरात्।।

सेवा में तत्पर-शिष्य को चाहिए कि वह गुरु के निकट ही रहे तथा गुरु की आज्ञा पाने पर ही अन्यत्र कहीं जाए। गुरु के मुख की भाव भंगिमाओं को देखता-समझता हुआ तदनुरूप ही कार्य करे, यही शिष्यता है। साथ ही गुरु की प्रत्येक आज्ञा को पूर्ण आदर से पालन करें।
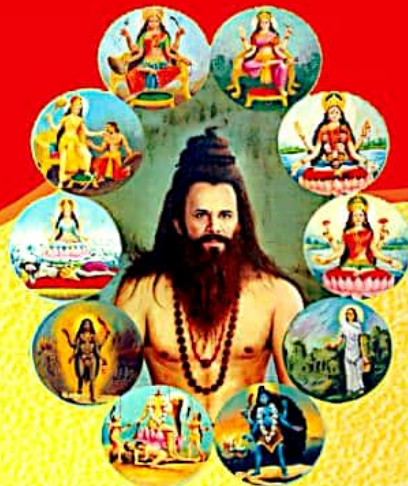
- समुद्र खुद आगे चलकर गंगोत्री के पास नहीं जाएगा, कि गंगा तुम आओ मुझे मिल लो, गंगोत्री से गंगा खुद उतर कर समुद्र तक जाएगी। उस गंगा को जाना है समुद्र तक, यदि गंगा नहीं जाएगी, बीच में सूख जाएगी, तब भी समुद्र अपनी जगह को नहीं छोड़ेगा। समर्पण तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।
- प्रेम एक ऐसी पुरवाई है, जिसके स्पर्श से ही अजीब खुमारी आ जाती है, शरीर के तार-तार झंकृत हो जाते है कि पूरा शरीर नृत्य करने लग जाता है।
- केवल किसी मंत्र की साधना और आंखें बन्द करके पालथी मार कर बैठना ही जीवन की श्रेष्ठता नहीं है। जीवन की श्रेष्ठता तो जीवन को परितृप्त कर देने में है और यह आनन्द, यह मस्ती, यह पूर्णता, यह श्रेष्ठता और जीवन का यह सौन्दर्य तो प्रेम में ही है।
- जब शिष्य अपने गुरु या इष्ट से प्रेम करना सीख जाता है, उसके जीवन के अणु-अणु में, जीवन के कण-कण में, रोम-रोम में, जीवन के प्रत्येक कार्य में आनन्द का एहसास आ जाता है, एक सुगन्ध आ जाती है, एक तरंग सी आ जाती है।
- जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है - ज्ञानश्चेतना, सुख-सौभाग्य, आनन्द, मस्ती, भौतिक सुविधाएं, मगर तब भी यह जरूरी नहीं है कि प्रेम प्राप्त हो ही।
- अगर पेड़ की जड़ में रस नहीं है तो उस पेड़ में हरी-भरी कोपलें आ ही नहीं सकती, उस पेड़ पर सुन्दर पुष्प नहीं खिल सकते, क्योंकि उसकी जड़े सुखी हुई हैं। मनुष्य में भी यदि प्रेम का रस सूख जाए, तो जीवन में श्रेष्ठता और दिव्यता प्राप्त नहीं हो सकती।
- तालाब का जल अगर स्थिर है, तो उसमें सडांध आ जाएगी,क्योंकि उसमें गति नहीं है, उसमें चंचलता नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें तालाब नहीं बनाना चाहता,मैं तुम्हें छलकती हुई प्रेम की नदी बना देना चाहता हूँ।
- इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम नदी बन जाओ,क्योंकि प्रेम की कल्पना, प्रेम की भावना नदी जानती है। नदी इस बात को नहीं जानती, कि यह पहाड़ है, पत्थर है, चट्टान है, वह तो बस आगे की ओर गतिशील रहती है। उसका लक्ष्य, उसका चिन्तन, उसकी धारणा एक ही है कि मुझे उस समुद्र में जाकर लीन हो जाना है।

गुरु पूर्णिमा

05.07.2020

सद्गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द पूजन विधान

नमो विश्व रूपाय

गुरु शिष्य का सम्बन्ध से पवित्रतम होता है। जहाँ शिष्य मन, वचन और कर्म से अहंकार रहित होकर अपने आराध्य सद्गुरुदेव की आराधना कर अपने जीवन के दोषों का नाश कर मानव जीवन को सफल बना लेता है। प्रस्तुत लेख सद्गुरुदेव के संन्यासी स्वरूप की ऐसी विशिष्ट साधना का प्रयोग आप गुरु पूर्णिमा के अवसर पर इसे सम्पन्न करें और जीवन के उस परमतत्व को प्राप्त करें'

परम पूज्य सद्गुरुदेव का शिष्य होने के नाते मैं आज सद्गुरुदेव के स्वरूपों का अध्ययन करने का दु:साहस कर रहा हूँ इस हेतु सर्वप्रथम तो मैं पूज्य श्री के चरणों का ध्यान करते हुए उनसे क्षमा प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए अपने हृदय के विचार खोल कर सबके सामने रख रहा हूँ।

सर्व सिद्धि प्रदाय

श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्दाय नमः

दिव्य पुरुष जब इस धरा पर आते हैं, तो उनका आगमन शांत वातावरण के साथ होता है और यह आगमन तभी होता है, जब संसार को उनकी आवश्यकता होती है, हजारों लाखों वर्षों से इतिहास में ऐसे महापुरुष साधारण रूप से जन्म लेकर साधारण वातावरण में पल कर भी अपनी दिव्य लीलाएं दिखाते हुए, एक कल्याणकारी समाज की संरचना करते हुए, नवीन पथ का निर्माण करते हैं, पूज्य श्री ने अपने जीवन में अपनी साारी लीलाओं का अपने शिष्यों को बार-बार अनुभूति करा कर, अपने साथ लेकर मार्गदर्शन किया, उन्होंने अपने शिष्यों को प्रत्यक्ष प्रमाण सहित-जीवन का स्वरूप और जीवन जीने की कला को प्रस्तुत करने हेतु जीवन के सभी रंग में दिव्य रास रचा।

शिक्षा, गृहस्थ, संन्यास जीवन, साधना, तपस्या सभी रंग तो निराले ही हैं,

किस प्रकार जीवन में रहते हुए, गृहस्थ में रहते हुए, जीवन की ऊँचाइयां प्राप्त की जा सकती हैं, किस प्रकार व्यक्ति गृहस्थ होते हुए भी संन्यासी हो सकता है यह सब उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से समझाया।

मैं उनका संन्यासी शिष्य अपने सभी संन्यासी भाईयों के साथ पूज्य गुरुदेव के गृहस्थ शिष्यों के सम्मुख स्वामी निखिलेश्वरानन्द साधना प्रस्तुत कर रहा हूँ जिसकी रचना महातेजस्वी योगीराज महारूपा जी ने की और हम सब शिष्य इस साधना को कर अपने जीवन में सिद्धि तत्व प्राप्त कर सके।

पूजन विधि

गुरू पूर्णिमा के दिन प्रातः स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर शुद्ध भाव से पूजा स्थल में (जो पहले से ही स्वच्छ कर लिया गया हो) पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें। सामने एक चौकी पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर सद्गुरुदेव का चित्र स्थापित करें–

सामग्री

गुरु पादुका, गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका, गुरु माला।

पूजन से पूर्व शुद्ध घी का दीपक जला दें और रोली एवं अक्षत से निम्न मंत्र बोलते हुए दीपक का पूजन करें।

ॐ दीप ज्योतिषे नमः
ॐ दीपस्था देवतायै नमः

इसके बाद चावल की ढेरी बनाकर उस पर सुपारी रखकर गणपति का स्थापन करें–

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धुम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छुणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्ममे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्न स्तस्य न जायते।।

पवित्रीकरण

बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से ढककर मंत्र पढ़ें फिर अपने ऊपर छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

गुरू प्रणाम

ॐ ऐं गुरुभ्यो नमः
ॐ ऐं परम गुरुभ्यो नमः
ॐ ऐं परात्पर गुरुभ्यो नमः
ॐ ऐं पारमेष्ठि गुरुभ्यो नमः

इसके बाद पादुका को स्नान कराकर एक ताम्रपात्र में कुछ गुलाब के पुष्प रखकर स्थापित करें। साथ ही गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका भी स्थापित करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानन्द मंत्रस्य भगवान श्री महारूपा ऋषि गायत्री छन्द निखिलेश्वरानन्द योगीश्वर्यै, क्लीं बीजं, श्रीं शक्ति ऐं कीलकं प्रणवो ॐ व्यापक मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धियर्थे मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

श्री महारूपा ऋषये नमः	-शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः	- मुखे।
निखिलेश्वरानन्द ऋषिभ्यो नमः	- हृदि।
क्लीं बीजाय नमः	- गुह्ये।
श्रीं शक्तये नमः	- नाभौ।
ऐं कीलकाय नमः	- पादयोः।
ॐ व्यापकाय नमः	- सर्वांगे।

मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धियर्थे मंत्र जपे विनियोगाय नमः - पुष्पांजली।

करन्यास

ॐ ऐं श्री क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः

प्राणात्मन	तर्जनीभ्यां स्वाहा
'निं'	मध्यमाभ्यां वषट्
सर्वसिद्धि प्रदाय	अनामिकाभ्यां हुं
निखिलेश्वरानंदाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
नमः	कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां फट्

अंगन्यास

ॐ ऐं श्रीं क्लीं	हृदयाय नमः
प्राणात्मन	शिरसे स्वाहा
'निं'	शिखायै वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	कवचाय हुं
निखिलेश्वरानंदाय	नेत्र-त्रयाय वौषट
नमः	अस्त्राय फट्

पादूका पूजन

1. ॐ 'लं' पृथिव्यात्मक गन्धं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः - अनुकल्पयामि।
2. ॐ 'हं' आकाशात्मकं पुष्पं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः - अनुकल्पयामि।
3. ॐ 'यं' वायवात्मकं धूपं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः - अनुकल्पयामि।
4. ॐ 'रं' वन्ह्यात्मकं दीपं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः - अनुकल्पयामि।
5. ॐ 'वं' अमृतात्मकं नैवेद्यं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः - अनुकल्पयामि।
6. ॐ 'शं' शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः - अनुकल्पयामि।

फिर निम्न मंत्र का 5 माला मंत्र जप करें

मंत्र

।। ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणात्मन 'निं' सर्व सिद्धि प्रदाय निखिलेश्वरानंदाय नमः।।

फिर निम्न स्तवन का पाठ करके आरती करें

निखिलेश्वरानंद पंच रत्न स्तवन

ॐ नमस्ते सते सर्व-लोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय।
नमो द्वैत तत्वाय मुक्ति-प्रदाय, नमो ब्रह्मणै व्यापिने निर्गुणाय।।1।।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम्, त्वमेकं जगत-कारण विश्व-रूपम्।
त्वमेकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तं त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।2।।

भयानां भयं भीषणं भीषणनाम् गति: प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महौच्चै पदानां नियन्तृ त्वमेकम् परेषां परं रक्षक रक्षकानाम्।।3।।

परेशं प्रभो सर्व-रूपाविनाशिन् अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व, जगद् भासकाधीश पाय दपायात्।।4।।

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपाम: तदेकं जगत् साक्षि-रूपं नमाम:।
तदेकं निधानं निरालम्बमीशम् भवाम्बोधि-पोत शरण्यं व्रजाम:।।5।।

पंच रत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मण परमात्मन:।
य: पठेत प्रयतो भूत्वा ब्रह्म सायुज्य माप्नुयात्।।6।।

अर्थात् हे गुरुदेव! आप मेरे जीवन के आराध्य, नित्य समस्त लोकों के आश्रय हो, आपको नमस्कार करता हूँ, आप ज्ञान स्वरूप विश्व आत्मा स्वरूप अद्वैत तत्व प्रदायक मुक्ति प्रदायक सर्वव्यापी निर्गुण ब्रह्म हो, सगुण रूप में आप हम समस्त शिष्यों के सामने उपस्थित हो, आपको नमस्कार है।

आप ही हम समस्त शिष्यों के आश्रय हो समस्त सिद्धियों के एकमात्र कारण हो, हमारे सृष्टिकर्त्ता, निर्माणकर्त्ता, पालन कर्त्ता, संहार कर्त्ता, आप निश्छल और विविध कल्पनाओं से रहित पूर्णता प्राप्त षोडशकला युक्त पुरुष हो, आपको हम शिष्यों का नमस्कार!

आप भय का नाश करने वाले विपत्ति को हरने वाले हम सब शिष्यों की एक मात्र गति हो, पवित्रता के साक्षात् स्वरूप, शक्तियों के आधार स्वरूप हो, रक्षकों के पूर्ण रक्षक हो, हम सब शिष्यों का भक्ति भाव से प्रणाम!

हे तपस्वी! हे प्रभु! समस्त शिष्यों के हृदय में विराजमान समस्त शिष्यों का कल्याण करने वाले अगोचर होते हुए भी हम सब लोगों के सामने साक्षात् देह रूप में उपस्थित हो, हे सत्य स्वरूप! हे अचिन्त्य! हे अक्षर या व्यापक! हे ब्रह्म स्वरूप मेरे आराध्य! हे मेरे प्राणों में निवास करने वाले आप हमें अपनी भक्ति अपना ज्ञान अपना स्नेह प्रदान करें।

हम न तो किसी इष्ट को जानते हैं, न मंत्र, न तंत्र, न साधना रहस्य, हम तो केवल गुरु मंत्र का जप करने में समर्थ हैं, आपकी पल-पल की लीलाएं देखते हुए आपको सामान्य मानव की तरह हंसते, उदास होते, विचरण करते कहते-सुनते अनुभव कर भ्रमिक हो जाते हैं, हम अपने इस जन्म में संसार के दु:खों में गृहस्थ की परेशानियों में डूबते-उतराते आपका भली प्रकार से चिंतन नहीं कर पाते, हमें और कुछ नहीं आता हम तो केवल आतुर कंठ से 'गुरुदेव' शब्द का उच्चारण कर सकते हैं, यह शब्द ही हमारा सब कुछ है हम तो केवल आपका आश्रय ग्रहण करते हैं।

जो इस पच रत्न स्तवन का नित्य पाठ करता है वह निश्चय ही समस्त विकारों से मुक्त होकर ब्रह्मस्वरूप गुण चरणों में लीन होने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

साधना सामग्री 450/-

21.06.20 तद्नुसार संवत् 2077 आषाढ मास कृष्ण पक्ष अमावस्या रविवार को खण्डग्रास सूर्य ग्रहण है। साधना की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण समय है, यदि कुछ विशिष्ट साधनाएँ इस समय में सम्पन्न की जाएं तो ये आश्चर्यजनक रूप से सफल और सिद्धिदायक होती हैं।

पाठकों के लिए एक महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित लेख स्वामी दिव्यानन्द जी के ज्ञान, चिन्तन और अनुभव के आधार पर।

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

साधनाएँ

जहाँ ग्रहण का वैज्ञानिक चिन्तन है, वहीं दूसरी ओर साधना की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण अवसर होता है, ग्रहण के समय कुछ विशिष्ट साधनाएँ सम्पन्न की जा सकती हैं जो कि सामान्य समय में शीघ्र सिद्धिदायक नहीं होती।

आगे मैं पाठकों के लाभार्थ कुछ विशिष्ट साधनाएँ दे रहा हूँ, जो कि अपने आप में प्रामाणिक, महत्वपूर्ण और शीघ्र फलदायक हैं, पाठकों को चाहिए कि इस अवसर का लाभ अवश्य उठाएं।

ग्रहण के समय साधनाकाल उस समय से प्रारम्भ हो जाता है, जब सूतक समय प्रारम्भ होता है। अत: 20.6.2020 रात्रि 10.20 बजे के बाद से साधनाएँ सम्पन्न कर सकता है, इसके लिए सम्बन्धित उपकरण यन्त्र आदि पहले से ही प्राप्त कर रख लेने चाहिए और साधना की पूर्ण तैयारी कर लेनी चाहिए।

विश्व की दुर्लभ गोपनीय साधनाएँ

सूर्य ग्रहण - 21 जून 2020

यह ग्रहण 21 जून 2020 की प्रात: से दोपहर तक सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा। भारत के प्रत्येक नगर में इसे अलग-अलग समय पर खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा। इस ग्रहण का सूतक 20.6.20 की रात्रि 10.20 से प्रारम्भ हो जायेगा।

इस सूर्य ग्रहण काल में भगवान सूर्य की उपासना, स्तोत्र आदि का पाठ करना चाहिए। ग्रहण को नंगी आंखों से कदापि न देखे। यह ग्रहण मृगशिर तथा आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुन राशि में घटित होगा अतएव इस राशि/नक्षत्र वालों को साधना एवं स्तोत्र पाठ विशेष रूप से करना चाहिए। दिल्ली में ग्रहण का समय निम्नानुसार है।

ग्रास प्रारम्भ	: 10.20
मध्य	: 12.01
समाप्त	: 13.48

1. अभय नृसिंह साधना

राज्य कार्य में सफलता पाने, मुकदमे में विजय तथा शत्रुओं से अभय और निडरता पाने के लिए यह साधना पूर्ण महत्वपूर्ण कही गई है, किसी भी प्रकार की समस्या हो, मुकदमे में असफलता मिल रही हो, शत्रु परेशान कर रहा हो या सरकारी कोई अड़चन या तकलीफ आ रही हो तो इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है, ग्रहण के समय इस साधना का विशेष महत्व है।

सामग्री

इस साधना में नृसिंह यन्त्र की आवश्यकता होती है। इसके अलावा जलपात्र, सरसों तथा काली मिर्च साधना काल में अपने साथ रख लेनी चाहिये, लगभग एक मुट्ठी भर काली मिर्च तथा मुट्ठी भर सरसों पर्याप्त है।

विधि

ग्रहण के समय साधक स्नान कर सफेद धोती पहन कर बैठ जाय, यदि सम्भव हो तो काले रंग का आसन बिछा दे और काली हकीक की माला से निम्न मन्त्र की 21 मालाएँ मंत्र जप करें।

एक माला पूरी होने पर हाथ में कुछ सरसों के तथा कुछ काली मिर्च के दाने लेकर जिस कार्य की सिद्धि चाही है, उसका उल्लेख कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देने चाहिए, इस प्रकार प्रत्येक माला के बाद करें।

जब 21 माला मन्त्र जप सम्पन्न हो जाय तब उन बिखरे हुए काली मिर्च के दानों तथा सरसों को झाड़ू से एकत्र कर ले और दक्षिण दिशा में जाकर हाथ भर गहरे खड्डे में गाड़ दे।

इसके बाद घर आकर स्नान कर ले और शुद्ध वस्त्र धारण कर ले, प्रातःकाल गरीबों को यथासम्भव दान आदि दे।

ऐसा करने पर निश्चय ही उसके मनोरथ की पूर्ति होनी है और वह जैसा चाहता है, उस प्रकार से कार्य सम्पन्न होता है।

ॐ नमो भगवते नृसिंहस्य वज्र नख दंष्ट्र कर्माशयानंधय रंधय तमो ग्रसग्रस स्वाहा।

वस्तुतः यह मन्त्र तेजस्वी है और इसका उपयोग साधनाकाल में अवश्य करना चाहिए।

साधना सामग्री- 450/-

2. मनोकामना सिद्धि प्रयोग

आपके मन की जो भी इच्छा हो इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर एक महीने के भीतर वह इच्छा अवश्य पूर्ण होती है, इसके अन्तर्गत गृहस्थ में सुख-शांति, पति सुख, शीघ्र विवाह, व्यापार में सफलता या कोई कार्य ऐसा हो सकता है, जो कि आपको कठिन और असम्भव प्रतीत हो रहा है, उस कार्य की पूर्ति के लिए इस साधना का प्रयोग किया जाता है।

सामग्री

इस साधना में एक तांत्रोक्त नारियल तथा 'मनोकामना सिद्धि यन्त्र' की आवश्यकता पड़ती है, इसको सामने ग्रहण के समय रख दें और फिर लोहे के पात्र में लकड़ियाँ जला कर घृत और सरसों से निम्न मन्त्र के द्वारा एक हजार आहुतियाँ दें, प्रत्येक आहुति के बाद घी की एक बूंद यन्त्र पर डाले, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध होता है और इस प्रकार मात्र एक हजार आहुतियाँ देने पर प्रयोग सिद्ध होता है और व्यक्ति जिस इच्छा या भावना को लेकर इस प्रयोग करता है, उसमें सफलता मिलती है।

॥ क्लीं ॥

यह एकाक्षी मन्त्र अद्भुत सफलतादायक और पूर्ण सिद्धिदायक है, साधक को चाहिए कि ठीक ग्रहण के समय इस प्रयोग को सम्पन्न करे ऐसा करने पर वह विशेष अनुकूलता प्राप्त कर सकता है।

साधना सामग्री- 390/-

3. दरिद्रता नाशक प्रयोग

ग्रहण के समय यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयोग है; इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर रोग और ऋण से पूर्णत: मुक्ति मिलती है, दरिद्रता समाप्त होती है तथा जीवन में आर्थिक सम्पन्नता प्रारम्भ होती है, चाहे जीवन में कितना ही ऋण हो, हानि हो रही हो या व्यापार में असफलताएँ मिल रही हों, इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर वह शीघ्र ही आर्थिक उन्नति करने लगता है और ऋण एवं रोग से मुक्त हो जाता है।

सामग्री

दरिद्रतानाशक यन्त्र।

विधि

ग्रहण के समय साधक स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने दरिद्रतानाशक यन्त्र रख दे और स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएँ फेरे, इसके बाद जब मन्त्र जप समाप्त हो जाय तब उस यन्त्र को सफेद रेशमी वस्त्र में लपेट कर दुकान में या घर की तिजोरी में रख दे, ऐसा करने पर निश्चय ही वह रोग एवं ऋण से मुक्त होने लगता है।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं घृणिं सूर्य आदित्य: श्रीं ।।

इसके बाद प्रत्येक रविवार को 1 माला मंत्र जप करते रहें।

साधना सामग्री- 450/-

4. कालरात्रि प्रयोग

अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने का यह सर्वोत्तम मन्त्र प्रयोग है, इसको तभी सम्पन्न करना चाहिए जब प्राणों पर आ गई हो, ग्रहण के समय किया जाने वाला यह अद्वितीय मन्त्र प्रयोग है।

सामग्री

काल रात्रि गुटिका तथा काल भैरव यन्त्र एवं हल्दी की माला।

विधि

साधक को ग्रहण के समय स्नान कर काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाना चाहिये, सामने तेल का दीपक लगा कर यन्त्र तथा गुटिका स्थापित कर देनी चाहिये, फिर हल्दी की माला से मन्त्र जप सम्पन्न करना चाहिये, इस साधना में तीन मालाएं मन्त्र जप होनी चाहिए।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि सर्वजनमनोहरि शत्रुमुखस्तम्भनी शत्रु निर्दलनी त्रोटय भंजय निर्दलय स्तम्भय मोहय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय फट्।

मन्त्र जप सम्पन्न होने पर हाथ में काली मिर्च के दाने लेकर शत्रु का नाम लेकर पांच बार मन्त्र जप करें और फिर तेल के दीपक में बचे हुए तेल से उन काली मिर्च के दानों को चुपड़ दें और फिर वे काली मिर्च के दाने दक्षिण दिशा की ओर जाकर गाड़ दें, ऐसा करने पर प्रयोग सम्पन्न हो जाता है।

स्वार्थ सिद्धि के लिए यह प्रयोग नहीं करना चाहिये, नैतिक नियमों के अनुकूल जब प्राणों पर आ गई हो तभी इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री- 600/-

बसन्त ऋतु के समाप्त होते ही ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में सूर्य कि किरणें सीधी पृथ्वी पर पड़ती है। परिणामत: इसका प्रभाव मानव शरीर पर पड़ने के साथ ही पेड़-पौधों, नदी-तालाबों आदि सभी पर पड़ता है। सूर्य की तीव्र किरणों से प्रकृति में तरलता सोखने का क्रम बढ़ने से मानव, वनस्पति, पशु आदि सभी विशेष प्रभावित होते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में हितकारी आहार-विहार

वैसे भी हमारे देश में गर्मी का मौसम ऐसा है जो लम्बे समय तक चलता है। देश के कुछ हिस्सों में अधिकतर समय गर्म मौसम ही रहता है। यहाँ तक कि 8-10 माह गर्मी की प्रधानता रहती है। ऋतु दृष्टि से देखा जाये तो अप्रैल से जुलाई का समय ग्रीष्म ऋतु का है। देश के कुछ हिस्सों में मई-जून में तीव्र गर्मी का प्रकोप होता है। दक्षिण-पश्चिम के बीच की दिशा की ओर शुष्क हवा चलती है। भीषण गर्मी, गरम हवा की लपटों से मानव एवं पशु परेशान हो जाते हैं

ग्रीष्म ऋतु में सम्पूर्ण धातुओं के स्नेह का सूर्य द्वारा शोषित करने से मनुष्य के स्वास्थ्य पर सबसे ज्यादा विपरीत प्रभाव पड़ता है यदि अनुकूल एवं हितकारी आहार-विहार न किया जाए, क्योंकि इस ऋतु में मानव की शक्ति क्षीण होने के साथ ही पाचन क्षमता भी क्षीण हो जाती है। जहाँ शरद ऋतु स्वास्थ्य एवं पाचक क्षमता बढ़ाने के लिए अनुकूल हैं। क्योंकि सर्दी में जठराग्नि प्रबल होने से पाचन क्षमता बढ़ती है। वहीं इस मौसम में जठराग्नि मन्द होने से पाचन क्षमता कम हो जाती है अत: इस ऋतु में शीतल पतले द्रव्यों एवं चिकने अन्न पान का सेवन करना ही श्रेष्ठ है। वाग्भट के अनुसार

'भजेन्म धुरमेवान्नं लघु स्निग्धं हिमंद्रवम्।'

अर्थात् इस ऋतु में मधुर, हल्के स्निग्ध, शीतल, द्रव्य पदार्थों का सेवन करना ही उचित है।

चरक संहिता के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रीष्म ऋतु में शीतल, द्रव्य, हल्के सुपाच्य पदार्थों का सेवन करना ही हितकर है। जहां तक भोजन का प्रश्न है गरिष्ठ नमकीन, उष्ण, चटपटे एवं बासी पदार्थों, बहुत ज्यादा मिर्च मसालों का त्याग करना ही श्रेयस्कर है। सामान्य भोजन की मात्रा कुछ कम कर देनी चाहिए। अभिप्राय यह है कि भरपेट भोजन न लिया जाये। अपितु भूख से थोड़ा कम खाया जाये। माँस का त्याग करें तो अति उत्तम होगा। मद्य का भी त्याग करें। यदि मद्यपान किया जाएगा तो वह हानिकारक होकर दाह, दुर्बलता एवं मूर्च्छा का कारण बनेगा, क्योंकि इस ऋतु में स्नायुमण्डल को विशेष रूप से प्रभावित कर विपरीत प्रभाव डालती है। वैसे भी उष्ण पदार्थों का त्याग करना ही उचित है।

चाय का सेवन भी यथासंभव त्यागें या कम कर दें। क्योंकि यह भी इस ऋतु में स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित नहीं।

सब्जियों में हरा धनिया, बथुआ, परवल, लौकी, हरी ककड़ी, मटर, करेले का सेवन कर सकते हैं। फलों में तरबूज, खरबूजा, मीठा, आम, सन्तरा, अंगूर, शहतूत, केले का सेवन उचित है एवं इस मौसम में यह फल बहुतायत से आते भी हैं। दालों में मूंग की एवं मसूर की दाल का प्रयोग उचित है।

भोजन में पुराने जौ, गेहूं, सफेद चावल, मिश्री मिला दूध, गाय या भैंस का मक्खन, खटाई आदि इस ऋतु में सुखकर है। इस ऋतु में धूप में घूमने का त्याग करें। सुबह अधिक देर तक सोना भी उपयुक्त नहीं है। इसलिए प्रयास करें कि प्रात:काल शीघ्र उठा जाये। सुबह शीघ्र उठकर नित्य क्रिया से निवृत्त होने के पश्चात् कुछ देर टहल लें तो शुद्ध वायु का सेवन स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। प्रात:काल शीतल जल से स्नान करें। प्रात:काल योग और प्राणायाम अवश्य करें। व्यायाम करने का नियम हो तो स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेयस्कर है। शरीर की शुष्कता दूर करने की दृष्टि से नारियल के तेल से मालिश करें, ताकि तवचा की स्निग्धता बनी रहकर मुलायम एवं चमकदार बनी रहे। हल्का व्यायाम करने के पश्चात् हल्के द्रव्य पदार्थ का सेवन करें। शीतल पेयों में ठण्डाई, लस्सी या जौ का सत्तू पानी में मिश्रित कर पी सकते हैं। गर्मी के मौसम में गन्ने का ताजा रस, सन्तरे का ताजा रस, सर्वोत्कृष्ट पेय है जिनका सेवन इस ऋतु में उत्तम है।

दोपहर के भोजन में चावल, गेहूँ, या जौ की चपाती, दाल इच्छानुसार मूँग की या मसूर की ले सकते हैं। चने, उड़द या अरहर की दाल का प्रयोग कम से कम करें क्योंकि यह देर से हजम होती है। दही या छाछ को आवश्यक रूप से लें। ककड़ी, प्याज एवं नींबू या हरी चटनी लें। ये वस्तुएं गर्मी से बचाव हेतु

उपयुक्त हैं यहाँ तक कि प्याज भी कच्चा ही खा सकते हैं जो कि बेहद लाभपूर्ण है।

रात्रि का भोजन भी हल्का एवं सुपाच्य ही लें। गरिष्ठ एवं तले पदार्थों का सेवन न करें यथा पूरियाँ, पकौड़ियाँ आदि। रात्रि में देर तक नहीं जागें। इस मौसम में सहवास कम से कम करें। आयुर्वेद में तो यह दर्शाया गया है कि ग्रीष्म ऋतु में मैथुन का त्याग करें किन्तु यदि ऐसा संभव न हो पाये तो यही प्रयास करें कि कम से कम किया जाये।

दिन में तेज धूप में व्यर्थ घर से बाहर न निकलें। घर से निकलना आवश्यक ही हो तो भूखे-प्यासे न निकलें एवं यथासंभव अपना बचाव करके निकलें।

दिन में कई बार ठण्डा पानी पीयें, चाहे प्यास न हो। ठण्डे पानी से अभिप्राय फ्रीज का या बर्फयुक्त पानी सेवन करने से नहीं है क्योंकि यह गले के लिए हानिकारक होता है एवं खराश उत्पन्न करता है साथ ही पाचन क्रिया भी विकृत करता है। मिट्टी के घड़े में रखे हुए पानी का सेवन उपयुक्त होता है।

(शेष अगले अंक में)
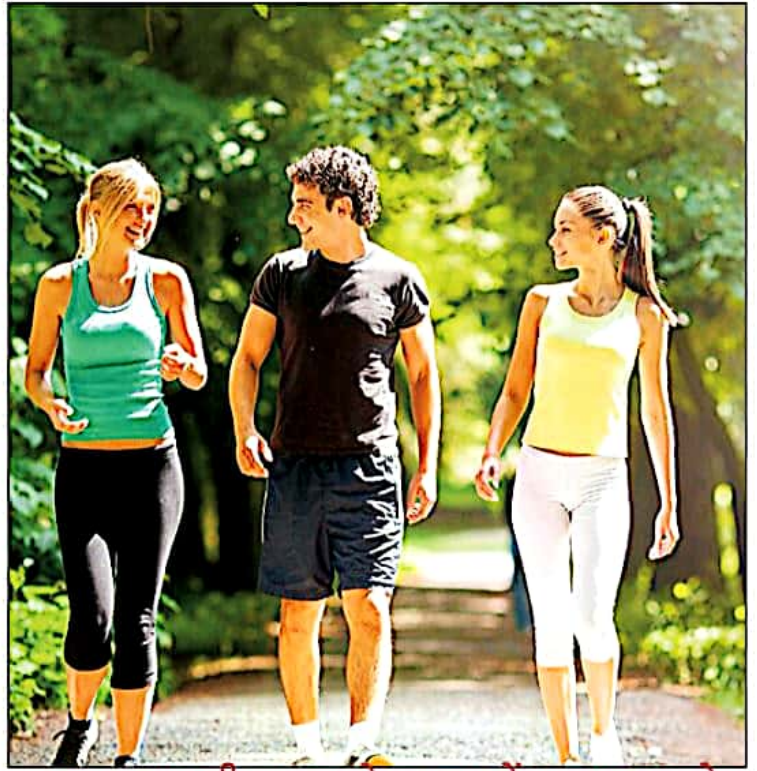
प्रातःकाल शीतल जल से स्नान करें। प्रातःकाल योग और प्राणायाम अवश्य करें। व्यायाम नियम से करना स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेयस्कर है।

परहेज़ क्यों जरूरी है

आयुर्वेद ने चिकित्सा से भी ज्यादा जोर पथ्य-अपथ्य का पालन करने पर दिया है और यह दुर्भाग्य की ही बात है कि अधिकांश लोग पथ्य-अपथ्य का पालन नहीं करते या कह लीजिए कि परिस्थितिवश चाह कर भी कर नहीं पाते। परिणाम यह होता है कि कोई न कोई रोग उन्हें दबोच ही लेता है। ज्यादातर लोग या तो पथ्य-अपथ्य के विषय में जानकारी नहीं रखते या जो जानते भी हैं। वे आदत से लाचार होने की वजह से पथ्य-अपथ्य का पालन यानी परहेज नहीं करते। इसी का नतीजा है कि जितने दवाखाने और डॉक्टर बढ़ते जा रहे हैं उतने ही मरीज़ भी बढ़ते जा रहे हैं।

एक व्यक्ति को खांसी चलती थी। वह धूम्रपान करने का आदी था और खटाई खाने का शौकीन था। वह जिस वैद्य के पास जाता, परहेज़ की बात पहले सामने आती पर वह न तो धूम्रपान छोड़ने को राजी होता न खटाई खाना बन्द करने को। अन्त में एक वैद्य बोला आप मेरी दवा लेते रहें और जो चाहे खाते-पीते रहें। वह व्यक्ति बोला यह तो बहुत बढ़िया बात कही आपने। यही तो मैं चाहता था। धन्य है आप जो ऐसी दवा दे सकते हैं कि जिससे परहेज किये बिना ही लाभ हो सकता है। वैद्यजी बोले एक नहीं, तीन-तीन लाभ होंगे। वह व्यक्ति चकित होता हुआ बोला कौन से तीन लाभ? वैद्यजी बोले पहला लाभ यह होगा कि घर में चोरी कभी न होगी। दूसरा लाभ यह कि कभी कुत्ता न काटेगा और तीसरा लाभ यह होगा कि बुढ़ापा कभी नहीं आएगा। वह व्यक्ति हैरान रह गया और खुशी से फूलता हुआ बोला यह तो चमत्कार हो जाएगा पर बदपरहेजी करते हुए भी ये तीन लाभ किस तरह से हो सकेंगे, मेरी इस शंका का समाधान करने की कृपा करें। वैद्यजी बोले जरूर, बदपरहेजी करते रहे तो खांसी कभी अच्छी नहीं होगी बल्कि बढ़ती जाएगी। दिन-रात खांसते रहोगे तो घर में चोर आएगा ही नहीं। खांसते-खांसते इतने कमजोर हो जाओगे कि लाठी पकड़े बिना चल नहीं सकोगे। लाठी हाथ में रहेगी तो कुत्ता पास ही नहीं आएगा फिर काट कैसे सकेगा? दुर्बलता इतनी बढ़ जाएगी कि जवानी में ही मर जाओगे फिर बुढ़ापा आने का सवाल ही नहीं उठेगा।

नेत्रहीनता

हम अंधा शब्द का अर्थ सिर्फ इस बात से लगाते हैं कि जिसकी आँखें नहीं है जबकि वह तो नेत्रहीन है ही पर कुछ ऐसे भी होते है जिनके नेत्र होते तो हैं पर नेत्र होते हुये भी वे स्थिति विशेष में अंधे की भांति ही व्यवहार करते हैं जैसे - एक व्यर्थ धन खर्च करने वाला,क्योंकि वह वर्तमान को ही देखता है भविष्य को नहीं, वह आज के कर्मों को तो देखता है पर कल इनका क्या परिणाम होगा, व्यर्थ के कार्मों में धन खर्च करने से भविष्य में उन सबका उसके स्वास्थ्य पर, उसके चरित्र आदि पर क्या प्रभाव होगा, उसे नहीं देखता। एक अंधा कजूंस होता है जो धन के सिवाय और कुछ देखता ही नहीं। जो विद्वान अपने अज्ञान को नहीं देख पाता वह भी अंधे व्यक्ति के समान ही है। सौन्दर्य और यौवन के अहंकार में घिरी इठलाती युवती भी इसी प्रकार है,क्योंकि वह यौवन समाप्त होने पर चेहरे पर पड़ने वाली झुर्रियों को नहीं देख पाती।

कुछ लोग काम-भाव में अंधे हो जाते हैं तो कुछ लोभ एवं क्रोध में अंधे हो जाते हैं। स्वार्थ में अंधे व्यक्ति को भी कुछ भला बुरा नहीं दिखता उसे सिर्फ अपनी स्वार्थपूर्ति ही दिखती है।

काम में अंधे व्यक्ति को जवानी का जोश सिर्फ काम के ही उपयोग में दिखता है। वह भूल जाता है कि उसका अपने माता-पिता, गुरु के प्रति, अपनी मातृभूमि, अपनी संस्कृति के प्रति भी कुछ कर्तव्य है उसकी आँखें पश्चिमी सभ्यता में चकाचौंध रहती हैं। वह अपनी संस्कृति, सभ्यता के तत्वों को नहीं देखता।

जो नेत्रों से दृष्टिहीन है हमें उनकी सहायता करनी चाहिए एवं जिन्हें भगवान ने दृष्टि दी है। उन्हें उपरोक्त बातों पर विचार करते हुये स्वयं को आत्मसंयमी बनाकर दूसरे को रास्ता दिखाने का प्रयास कर जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। सद्गुरुदेव ने हमेशा कहा कि आत्मसंयमी व्यक्ति ही सर्वश्रेष्ठ है उसका जीवन ही दूसरों को कुछ प्रदान करने में सहायक है और मंत्र साधना द्वारा आत्मसंयम एवं विवेक के पथ को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – प्रारंभ के कुछ दिन सफलतादायक रहेंगे। व्यवसाय में वृद्धि होगी, यात्रा से लाभ होगा। अच्छे परिणाम से विद्यार्थी वर्ग प्रसन्न होगा। तत्पश्चात् मानसिक तनाव हो सकता है। परिवार में सुख सद्भावना रहेगी, जीवन साथी से मधुर संबंध रहेंगे। भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की ओर ध्यान दें। कार्यों में विघ्न आयेंगे, महत्वपूर्ण कार्य बीच में अटकेंगे। व्यापार के सिलसिले में की गई यात्रा लाभदायक होगी। प्यार में सफलता मिलेगी। चलते-फिरते किसी से टकराहट होगी, क्रोध पर नियंत्रण रखें, आखिरी सप्ताह का प्रारंभ शुभ नहीं है, कार्यों में बाधा से मन उदास रहेगा। निराशा रहेगी, किसी वरिष्ठ अधिकारी से मुलाकात समय में बदलाव लायेगी। अंतिम दिनों में शत्रु पक्ष परास्त होगा। आप इस माह अप्सरा साधना करें।

शुभ तिथियाँ–1,2,9,10,18,19,21,27,28,29

वृष – माह का प्रथम सप्ताह सफलतादायक रहेगा। विश्वास बढ़ा रहेगा, डटकर मुकाबला करेंगे। मेहनत से व्यापार में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। तनाव हो सकता है। पारिवारिक चिंताये सतायेगी। महत्वपूर्ण कार्य बीच में अटकेंगे। शत्रु बाधा पहुँचायेंगे। अचानक कहीं से धन आगमन हो सकता है। पैतृक सम्पत्ति मिल सकती है, ऋण से मुक्ति के अवसर बनेंगे। किसी से बिना वजह झगड़ने से बचें अन्यथा मामला बढ़ जायेगा। प्यार में सफलता मिलेगी। यह समय आध्यात्मिक साधना के लिए अच्छा है। व्यापारिक यात्रा लाभ देगी, जीवन साथी से संबंध प्रेम पूर्ण रहेंगे। आर्थिक लेन देन के मामले में सतर्कता बरतें। अधिक उधारी न लें। इस समय नया कारोबार न शुरु करें। आप इस माह बगलामुखी साधना करें।

शुभ तिथियाँ–2,3,4,11,12,13,21,22,29,30

मिथुन – माह का प्रारंभ अनिष्टकारी है। समस्याओं में उलझेंगे, आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। कोई भी कार्य सोच समझ कर करें। जहाँ तक हो नियम एवं कानून के दायरे में ही कार्य करें। जटिल समस्याओं को सुलझा सकेंगे। विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। जमीन जायदाद में वाद-विवाद होगा। गलत सोहबत के लोगों से दूर रहे। उधार दिये रुपये वापस प्राप्त होंगे। भाग्योदय का समय है। कोर्ट के मामले अनुकूल रहेंगे। संतान पक्ष उम्मीद से ज्यादा अच्छा कार्य करेगी। शुभचिंतकों से अनबन रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जीवन साथी का साथ उत्साहवर्द्धन करेगा। आखिरी सप्ताह शुभप्रद रहेगा। गुत्थियां सुलझेगी। बाहरी लोगों का सहयोग लेना पड़ सकता है लेकिन आपको आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं होगा। किसी प्रभावशाली व्यक्ति के साथ से आपके परिवार का भाग्य बदल सकता है। आप गणपति साधना करें।

शुभ तिथियाँ–4,5,6,13,14,15,23,25

कर्क – प्रथम सप्ताह सुखप्रद रहेगा। गृहस्थ जीवन सुखद रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। किसी के बहकावे में आकर लड़ाई झगड़े में न फंसे, धोखा मिलेगा। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे, मनचाहा रोजगार मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। कोर्ट केस में सफलता मिलेगी। पैतृक सम्पत्ति मिल सकती हैं गरीबों की सहायता करेंगे। नये रोजगार के अवसर बनेंगे, तीसरे सप्ताह में बिना सोचे कोई कदम न उठाये। बदनामी हो सकती है। पीठ पीछे लोग बुराई करेंगे। सट्टे या लाटरी आदि में पैसे न लगायें। बिना पढ़े किसी भी प्रकार के पेपर पर हस्ताक्षर न करें धोखा हो सकता है। आत्मबल कमजोर रहेगा। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ– 6,7,8,16,17,18,25,26,27

सिंह – सप्ताह की शुरुआत शुभ है। व्यवसाय का विकास होगा, आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। किन्तु किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। प्रतिष्ठा में ठेस पहुँच सकती है। अटके रुपये प्राप्त होंगे, कोई अपना धोखा दे सकता है। गुप्त शत्रु परेशान करेंगे, टेंशन बढ़ेगी। जीवन साथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। गरीबों की सहायता करेंगे। तबियत अचानक खराब हो जायेगी। संतान पक्ष पर ध्यान रखें। शत्रुओं से सावधान रहें। आखिरी सप्ताह में कोई अप्रिय घटना होने से चेहरे पर उदासी छा जायेगी। चिन्तायें बढ़ेगी हर कार्य में असफलता दिखाई देगी। विदेश यात्रा हो सकती हैं माह की आखिरी तारीखों में आप मुकाबला करके विजयी होंगे। आत्मविश्वास फिर से बढ़ेगा। कोई अनुबंध भी मिल सकता है। आप भैरव साधना करें।

शुभ तिथियाँ–2,9,10,18,19,20,27,28,29

कन्या – प्रथम सप्ताह सफलतादायक रहेगा। जमीन जायदाद के मामले सुलझेंगे। संतान पक्ष पूर्ण सहयोग करेगी। इस समय यात्रा लाभदायक रहेगी। रुकावट के बाद भी सफलता पायेंगे।

नौकरीपेशा को किसी दूसरे की गलती का भुगतान करना पड़ सकता है। जीवन साथी का सहयोग व्यापार में भी मिलेगा। व्यापार में घाटा हो सकता है। कोई झूठा आरोप भी लग सकता है। उच्चाधिकारी वर्ग संतुष्ट रहेगा। सूझबूझ से आप सभी कार्यों को आगे बढ़ाने में सक्षम रहेंगे, रुके हुये रुपयों की वसूली हो जाएगी। तीसरा सप्ताह स्वास्थ्य की दृष्टि से नुकसानदायक है। कारोबार में रुकावट महसूस करेंगे, क्रोध पर नियंत्रण न रख पाने के कारण नुकसान उठाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा का ट्रांसफर मनचाहे स्थान पर संभव है। आप पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ–2,3,4,11,12,13,21,22,23

तुला – माह का आरंभ असंतोषकारी है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। घमण्ड से अपना ही नुकसान कर लेंगे। दूसरे सप्ताह में रुके हुये रुपये प्राप्ति होगी। जायदाद का बंटवारा राजी–खुशी हो जाएगा। गृहस्थ में सुख समृद्धि का वातावरण रहेगा। गरीबों की सहायता करेंगे। अचानक कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। आत्म–विश्वास कमजोर पड़ेगा। माह के मध्य में बदलाव आयेगा, लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर बढ़ेंगे। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। परिवार में किसी सदस्य के रिश्ते की चर्चा होगी। अभी नया कारोबार प्रारंभ न करें। कोई ऐसा कार्य न करें कि मान–मर्यादा को ठेस लगे। चलते कार्यों में रुकावट आयेगी। किसी से बिना वजह उलझे नहीं वरना नुकसान आपका ही होगा। संयम रखें। परिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। गुरु मंत्र का अधिक से अधिक जप करें।

शुभ तिथियाँ–4,5,6,13,14,15,23,24,25

वृश्चिक – प्रारंभ में चित्त प्रसन्न रहेगा। परिवार के साथ घूमने फिरने का प्रोग्राम बनेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। शत्रु पक्ष से भी सावधान रहें। लापरवाही न करें। समय ठीक नहीं। कोई साथ नहीं देगा। साधु–महात्माओं के प्रवचन में भाग लेंगे, कार्य के सिलसिले में यात्रा लाभदायक होगी। कोई अप्रिय समाचार मन उदास करेगा, अपनों से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा, अपने ही धोखा दे सकते हैं। आप आमदनी के दूसरे स्रोत ढूंढेंगे, परिवार में सभी के लिए कार्य करेंगे। भावी योजना बनाने में सफल होंगे। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। दाम्पत्य जीवन तनाव ग्रस्त रहेगा। घर में अशांति का वातवारण रहेगा। आखिरी सप्ताह में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। नौकरीपेशा लोगों का मन पसंद स्थानान्तरण हो सकता है। अपने गुस्से पर काबू रखें। जीवन उन्नति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ–6,7,8,16,17,25,26,27

धनु – माह का प्रारंभ शुभ है। इच्छायें पूर्ण होंगी। नये मकान में प्रवेश हो सकता है। किसी कार्य में लापरवाही न करें ब्लड प्रेशर से परेशानी हो सकती है। अदालती कार्यों से छुटकारा मिलेगा। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। तीर्थ यात्रा हो सकती है पिकनिक का प्रोग्राम बन सकता है। गलत सोहबत से दूर रहें। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। परिवार में सहयोग की भावना रहेगी। किसी अंजान व्यक्ति से न उलझें प्रतिष्ठा पर ठेस लगेगी, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अशांति का वातावरण रहेगा। जल्दबाजी में कोई भी कार्य न करें। आखिरी सप्ताह में परेशानी दूर होगी। पति–पत्नी में गलत–फहमी दूर होकर प्यार की भावना पैदा होगी। आपकी बनाई प्लानिंग सफल होंगी। आप सभी समस्याओं को समझदारी से सुलझा लेंगे। आप भगवान शिव की साधना करें।

सर्वार्थ सिद्धि योग	– जून – 5,7,14,16,20,26
रवि योग	– जून – 4,12,25,26,29,30
अमृत सिद्धि योग	– जून – 16,20

शुभ तिथियाँ–1,2,9,10,18,19,20,28,29

मकर – प्रथम सप्ताह सफलतादायक रहेगा। बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, कोई जमीन का सौदा हो सकता है। समाज में सम्मान मिलेगा। दूसरे सप्ताह में किसी और के कारण मुसीबत में पड़ सकते हैं, परिवार में वाद–विवाद हो सकता है। कोई अशुभ समाचार टेंशन पैदा करेगा। नौकरीपेशा लोगों को परेशानी हो सकती है, कोई छुपी बात उजागर हो सकती है। पुत्र आपके व्यापार में हाथ बंटायेगा। काफी परेशानियां दूर होगी। प्यार में धोखा हो सकता है। कृषक वर्ग अच्छी फसल से खुशी महसूस करेगा। भाईयों में मतभेद दूर होंगे, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माह के अंत में समस्याये एवं चिंताये आपको घेर लेगी। आप बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ–2,3,4,11,12,21,22,23,29,30

कुंभ – प्रारंभ के दिन अनुकूल नहीं है। कोई छुपी बात उजागर हो सकती है। मान–प्रतिष्ठा को ठेस लगेगी। लालच न करें। विरोधियों से सावधान रहें। विद्यार्थी वर्ग उचित परिणाम प्राप्त कर खुश रहेगा। अविवाहितों का विवाह संभव है। आप रास्ते में कांटों के बाद भी बुद्धि विवेक से मंजिल पा लेंगे। सावधान रहें, परिवार में तनाव हो सकता है, वाणी पर नियंत्रण रखें। सच्चाई का रास्ता अनुकूलता देगा, विरोधियों को जवाब दे सकेंगे। आय की आवक बढ़ेगी। ज्यादा जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें, यात्रा से बचें। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। साझेदारी में नुकसान हो सकता है। किसी और का टेंशन अपने ऊपर लेने से स्वास्थ्य खराब होगा। नौकरीपेशा लोगों में परस्पर सहयोग की भावना रहेगी। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ–4,5,6,13,14,15,23,24,25

मीन – सप्ताह का प्रारंभ अनुकूल रहेगा। परिवार के साथ पिकनिक मनायेंगे, आर्थिक उन्नति होगी। किसी भी प्रकार के अनुबंध में जल्दबाजी न करें, सोच–समझ कर निर्णय लें। वाणी का संयम रखें अन्यथा समस्या में फंस जायेंगे, प्यार में गलत–फहमी दूर होगी। किसी और के किये गलत कार्य से परेशानी हो सकती है। बिना सोचे–समझें किसी पेपर पर हस्ताक्षर न करें अन्यथा मानसिक चिंता में पड़ सकते है। वाहन खरीदने का योग है। विद्यार्थी पढ़ाई में व्यस्त रहेगा। दूसरों पर ज्यादा विश्वास न करें। लम्बी दूरी की यात्रा हो सकती है। उधार दिये रुपये प्राप्त हो सकते हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, परिवारिक खर्चे में बढ़ोत्तरी होगी। आप तारा साधना सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ–6,7,8,16,17,18,25,26,27

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.06.2020	सोमवार	श्री गंगा दशहरा
02.06.2020	मंगलवार	निर्जला एकादशी
05.06.2020	शुक्रवार	पूर्णिमा
07.06.2020	रविवार	संन्यास जयंती
14.06.2020	रविवार	सिद्धाश्रम जयंती
17.06.2020	बुधवार	योगिनी एकादशी
21.06.2020	रविवार	सूर्य ग्रहण
22.06.2020	सोमवार	गुप्त नवरात्रि प्रारंभ
23.06.2020	मंगलवार	जगन्नाथ रथ यात्रा
27.06.2020	शनिवार	विवस्वत सप्तमी
29.06.2020	सोमवार	गुप्त नवरात्रि समाप्त

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जून 7,14,21,28) (जुलाई 5)	दिन 06.00 से 08.24 तक 11.36 से 02.48 तक 03.36 से 04.24 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
सोमवार (जून 1,8,15,22,29)	दिन 06.00 से 07.36 तक 09.12 से 11.36 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.48 से 03.36 तक
मंगलवार (जून 2,9,16,23,30)	दिन 10.00 से 11.36 तक 04.30 से 06.00 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 05.12 से 06.00 तक
बुधवार (जून 3,10,17,24) (जुलाई 1)	दिन 06.48 से 10.00 तक 02.48 से 05.12 तक रात 07.36 से 09.12 तक 12.24 से 02.48 तक
गुरुवार (जून 4,11,18,25) (जुलाई 2)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 11.36 तक 04.24 से 06.00 तक रात 09.12 से 11.36 तक 02.00 से 04.24 तक
शुक्रवार (जून 5,12,19,26) (जुलाई 3)	दिन 06.00 से 06.48 तक 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 03.36 तक रात 07.36 से 09.12 तक 10.48 से 11.36 तक 01.12 से 02.48 तक
शनिवार (जून 6,13,20,27) (जुलाई 4)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.30 से 12.24 तक रात 08.24 से 10.48 तक 02.48 से 03.36 तक 05.12 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जून 2020

11. पीपल के वृक्ष में पुष्प चढ़ायें एवं जल अर्पण करें। मनोकामना पूर्ण होंगी।
12. किसी देवी मंदिर में तीन लाल पुष्प अर्पित करें।
13. आज सरसों तेल का दान कुछ दक्षिणा के साथ करें।
14. चना और गुड़ का दान करें। बाधाएं समाप्त होंगी।
15. शिव मंदिर में दूध मिश्रित जल से अभिषेक करें।
16. हनुमान मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर बच्चों में बाँटें।
17. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं –
    मंत्र : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
18. केले के वृक्ष में या तुलसी में जल चढ़ायें।
19. ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मंत्र का 11 बार जप करके जाएं।
20. काली उड़द की दाल दक्षिणा के साथ दान करें।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर 16 माला मंत्र जप करें एवं निखिल स्तवन का पाठ करें।
22. भगवान शिव के मंदिर में जल अभिषेक करें।
23. हनुमान अष्टक का एक पाठ करके जाएं।
24. प्रात: पूजन के बाद 'ह्रीं' मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।
25. इस दिन अपने वस्त्रों में पीले रंग को प्रधानता दें।
26. केसर का तिलक लगाकर किसी कार्य हेतु जाएं सफलता मिलेगी।
27. आज विवस्वत सप्तमी है। भगवान सूर्य की साधना करें।
28. आज प्रात: निम्न मंत्र का 1 माला मंत्र जप करें –
    मंत्र : ॐ दुं दुर्गायै नम:।
29. आज दुर्गा मंत्र से 21 आहुतियां दें।
30. आज हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) अपने ऊपर से सात बार घूमाकर हनुमान मंदिर में चढ़ा दें शत्रु बाधा समाप्त होंगी।

जुलाई 2020

1. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं –
   मंत्र : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
2. पूजा स्थान में एक सुपारी स्थापित करके निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके सुपारी किसी वृक्ष की जड़ में चढ़ा दें।
   मंत्र : ॐ गं गणपतये नम:।
3. आज बगलामुखी गुटिका (न्यौछावर 150/-) धारण करें, शत्रु बाधा समाप्त होगी।
4. आज भैरव मंदिर में तेल का दान करें।
5. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
6. आज श्रावण के पहले सोमवार पर भगवान शिव के मंदिर में जलाभिषेक करें।
7. माँ पार्वती की आरती करके जाएं।
8. प्रात: स्नान के बाद घी का दीपक लगाकर 51 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करके जाएं –
   मंत्र : ॐ क्लीं ॐ।
9. गणपति मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर बच्चों में बाँटे।
10. ॐ ह्लीं ॐ का ग्यारह बार उच्चारण करके जाएं।

एक ऐसा मुहूर्त, ऐसा योग बार-बार नहीं आता

20.07.20

अमावस्या को आध्यात्मिक एवं दिव्य अनुभूतियों के लिए श्रेष्ठ माना गया है.... इस दिन चंद्र, सूर्य के अन्दर विलीन होता है, उसकी तरंगें सूर्य की तरंगों में समाहित होती हैं... चन्द्रमा मन का देवता है एवं सूर्य आत्मा का, अतः अमावस्या का अर्थ ही है 'मन' अर्थात् 'अहं' का आत्मा अर्थात् परमात्मा में लीन होना... और इस स्थिति में अमावस्या आध्यात्मिक अनुभवों के लिए अत्यधिक श्रेष्ठ है... और अगर अमावस्या के साथ-साथ इसमें अमृत तत्त्व का भी समावेश हो जाए, तो इस दिन की गई साधना फलीभूत होती ही है और फिर इससे उत्तम स्थिति अन्य हो ही नहीं सकती... ऐसी ही स्थिति रहती है 'सोमवती अमावस्या' को, जो इस बार 20 जुलाई 2020 को है।

सोमवती अमावस्या

इसका प्रादुर्भाव किस प्रकार से हुआ इस विषय में 'कूर्म पुराण' में एक रोचक कथा आती है... जब कूर्मावतार, विष्णु की पीठ पर मंदराचल पर्वत रखा गया और वह स्थिर नहीं हो रहा था, तो एक ओर से सूर्य ने और दूसरी ओर से चन्द्र ने सहारा देकर उसे संभाल लिया। समुद्र मंथन के बाद कूर्मावतार ने उन दोनों को आशीर्वाद दिया और कहा 'जिस प्रकार से तुम दोनों ने मिलकर लोकहित के लिए यह कार्य किया है, उसी प्रकार जब कभी तुम दोनों जब एक-दूसरे में समाहित होंगे, तो वह दिवस अमृत तत्त्व से पूर्ण होगा और उसका महत्त्व एक सिद्ध दिवस के समान होगा।'

तभी से आज तक सोमवती अमावस्या को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि इस दिन की जाने वाली साधना असफल नहीं होती... उसका सुप्रभाव हर हालत में मिलता ही है।

वैसे तो सोमवती अमावस्या सौभाग्य प्राप्त करने का दिवस है। सौभाग्य का अर्थ होता है वे समस्त उपलब्धियाँ, जिन्हें प्राप्त कर हम अपने जीवन को आनन्दित और तरंगित बना सकें। अतः इस अवसर पर उच्चकोटि के संन्यासियों से प्राप्त कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिनको सम्पन्न कर लेने से व्यक्ति हर प्रकार की बाधाओं से मुक्त होकर सफलता की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो जाता है। ये समस्त प्रयोग आप सोमवती अमावस्या 20.7.20 को अवश्य ही सम्पन्न करें, क्योंकि यह एक अत्यन्त दुर्लभ अवसर आया है, जब आप इसी दिन सर्वपितृ श्राद्ध दान तर्पण आदि सम्पन्न कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करेंगे और साधना में सफलता हेतु प्रार्थना कर साधनाएँ भी सम्पन्न करेंगे।

किसी कारणवश इस अवसर को चूक जाने पर इन प्रयोगों को किसी भी माह की अमावस्या को सम्पन्न किया जा सकता है, किन्तु सोमवती अमावस्या को ये प्रयोग सम्पन्न करना श्रेष्ठ है। यदि आप चाहें, तो दोनों प्रयोगों को भी उसी एक दिन में सम्पन्न कर सकते हैं।

1. शत्रु दमन प्रयोग

मानव जीवन में पूर्ण प्रगति तभी कर सकता है जब वह भयरहित हो और भयरहित वह तभी हो सकता है जब वह शत्रु रहित हो... क्योंकि जब तक शत्रु हैं उसे चिन्ता लगी ही रहती है, कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़ते हैं, धन का नुकसान उठाना पड़ता है और कई बार तो जान के लाले पड़ जाते हैं.... ऐसे में केवल एक ही चारा रह जाता है और वह यह है, कि शत्रु पर एक ऐसा करारा वार किया जाए, कि वह खुद गिड़गिड़ाता हुआ व्यक्ति के सामने पहुँच कर उसकी हर शर्त स्वीकार करे... और ऐसा ही सम्भव है इस प्रयोग से।

- यह प्रयोग आधे घंटे का है।
- यह प्रयोग रात्रि 11 बजे के बाद करना चाहिए। इसके लिए 'शत्रु दमन यंत्र' और 'विजय गुटिका' की आवश्यकता होती है।
- साधक स्नान कर सिर्फ लाल धोती पहन दक्षिणाभिमुख होकर बैठें और अपने सामने लाल वस्त्र पर 'शत्रु दमन यंत्र' स्थापित कर उसका पूजन करें।
- यंत्र पर शत्रु का नाम लिखें और फिर उस के सामने 'विजय गुटिका' स्थापित कर उसका भी पूजन करें। फिर निम्न मंत्र का बयालीस मिनट तक जप करें

मंत्र

।। ॐ क्लीं क्लीं शत्रुदमनाय फट्।।

Om Kleem Kleem Shatrudamanay Phat.

साधना के बाद पूजन सामग्री को पोटली में बांध कर दक्षिण दिशा में निर्जन स्थान अथवा किसी जलाशय में फेंक दें।

न्यौछावर-300/-

2. आकस्मिक धन आगमन प्रयोग

व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक आवश्यकता धन की होती है, क्योंकि धन की वजह से ही व्यक्ति अपनी समस्त इच्छाओं को तृप्त कर सकता है। धन हो तो व्यक्ति का मान-सम्मान, आदर होता है, पर उसके अभाव में कई मुश्किलें सामने आ जाती हैं।

लोग धन के लिए परिश्रम करते हैं, परन्तु मात्र शारीरिक परिश्रम से ही धन प्राप्त होता, तो सारे मजदूर तो कभी के लखपति हो गए होते...

व्यक्ति के जीवन में स्थिति ऐसी होनी चाहिए, कि खर्च के बावजूद भी कहीं न कहीं से धन का आगमन जीवन में होता ही रहे। इसके लिए निम्न प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है

- यह प्रयोग सायं 7 बजे प्रारम्भ करना चाहिए। इसके लिए स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठें और अपने सामने 'धनेश यंत्र' स्थापित कर उसका अक्षत चढ़ा कर पूजन करें।
- फिर उसके सामने निम्न मंत्र का 45 मिनट तक जप करें

।। ॐ श्रीं श्रियमानय शीघ्रं साधय ह्रीं ॐ फट्।।

- मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र किसी नदी या जलाशय में अर्पित कर दें।

ऐसा करने से प्रयोग सम्पन्न होता है और 21 दिनों के अंदर-अंदर साधक को लाभ अनुभव होने लगते हैं।

न्यौछावर-240/-

वास्तव में ही अगर व्यक्ति के जीवन में शत्रुओं, रोगों एवं दरिद्रता का नाम हो, तो वह जीते-जी ही मर जाता है और कभी चाह कर भी सफलता की ओर अग्रसर नहीं हो पाता।

ऊपर वर्णित सभी प्रयोग श्रेष्ठ घुमक्कड़ संन्यासियों से प्राप्त कुछ अचूक नुस्खे हैं, इन प्रयोगों से आप भी लाभ उठा सकें और अपने जीवन की बाधाओं को हटाकर सफलता की ओर अग्रसर हो सकें, यही शुभकामना है।

श्रावण मास
06.07.20 से 03.08.20
जीवन की
विविध
समस्याओं से मुक्ति
पा सकते हैं
श्रावण मास
में सम्पन्न होने वाले इन प्रयोगों से

भगवान शिव के औघड़दानी स्वरूप को सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाता है, क्योंकि उनके इस स्वरूप के विषय में लेशमात्र भी संशय नहीं किया जा सकता है। निर्लिप्त, निर्विकार, सत्‌चित् आनन्द स्वरूप और पूर्ण ब्रह्ममय होते हुए भी वे पूर्ण रूप से गृहस्थ उपासकों के मध्य अपनी सरलता और सहजता के प्रतीक माने गए हैं। उन योगीश्वर की साधना में जहां योगी अनेक वर्ष व्यतीत कर देते हैं, वहीं एक निश्छल, निर्मल, आर्त पुकार से वे भागे-दौड़े चले आते हैं।

इसीलिए ही तो साधक जब भी आपदाग्रस्त होता है, तो वह शिव को ही याद करता है, भले ही वह उनका महाकाल स्वरूप हो या महामृत्युंजय स्वरूप। भगवान शिव की करुणा का शास्त्रों में जो उदाहरण मिलता है, उसमें संशय किया ही नहीं जा सकता।

जब मार्कण्डेय ऋषि अपनी आयु पूर्ण कर चुके और यम उन्हें लेने के लिए उपस्थित हुए, तो वे भगवान शिव के आश्रय में बैठकर शिव स्तुति करने लगे, शिव की कृपा के स्वरूप ही यम को विवश हो कर मार्कण्डेय ऋषि को साथ लिये बिना ही वापस अपने लोक जाना पड़ा। ऋषिगण तो क्या दानवों ने भी उनकी साधना और तपस्या कर अनेक वरदान प्राप्त किये हैं, इससे उनका करुणामय स्वरूप ही इंगित होता है।

परम भक्त वत्सल, औघड़ श्मशानवासी, कुबेराधिपति, महाकाल, महामृत्युंजय, ऐश्वर्य के स्वामी, बाघम्बरधारी आदि ऐसे अनेक नामों से पुकारे जाने वाले शिव स्वयं में अनेक विपरीत संज्ञाओं से सुशोभित हैं। एक ओर जहां उनकी नीलकंठ रूप में भक्त वत्सलता की थाह नहीं मिलती, वहीं दूसरी ओर उनके क्रोधमय रौद्र स्वरूप से तीनों भुवन कांप उठते हैं। एक ओर जहां वे किसी को धन का अक्षय भण्डार तक सौंप देते हैं, वहीं दुष्टों के लिए महाकाल स्वरूप में उनके नाश के लिए तत्पर भी हो जाते हैं। इतनी अधिक विपरीत संज्ञाओं से तो शायद ही कोई देव सुशोभित हुआ हो।

शिव उपासना की सरलता जितनी लोकप्रिय है, उतनी अन्य किसी देव के बारे में देखने को नहीं मिलती। इसका कारण है, कि शिव की साधारण रूप से पूजा करने वाला व्यक्ति भी अपने दुःखों और कष्टों से शीघ्रता से मुक्ति पा लेता है। शिव की साधना या उपासना करने के लिए साधक को अधिक ताम-झाम की आवश्यकता नहीं होती, जो स्वयं सरल और आनन्दमग्न रहने वाले हों, उन्हें तो यदि साधक श्रद्धा से सिर्फ जल ही चढ़ा दें, तो वे उसके कष्टों का निवारण करने के लिए उद्यत हो उठते हैं।

ऐसे ही भक्त वत्सल, औघड़दानी, भगवान शिव से सम्बन्धित कुछ प्रयोगों को नीचे दिया जा रहा है, जिन्हें शिव मास अर्थात् श्रावण मास में सम्पन्न करने से साधक को शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है। ये प्रयोग एक औघड़ से प्राप्त हुए हैं, जिसका कहना है, कि यदि श्रावण मास में या किसी भी मास में सोमवार को इन प्रयोगों को सम्पन्न किया जाय, तो व्यक्ति की इच्छा पूर्ण होती ही है, आवश्यकता है भगवान शिव के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास की।

श्री ऐश्वर्य-द्रव्य प्राप्ति के लिए

06.07.20

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कुछ इस प्रकार से निर्मित है, कि मानव के पास जितना अधिक धन हो, वह स्वयं को उतना अधिक सुरक्षित और श्रेष्ठ समझता है। ज्ञान न हो तो भी उसकी सामाजिक स्थिति पर इतना फर्क नहीं पड़ता है, जितना धन के न होने पर। अतः उसका यथासम्भव प्रयास रहता है, कि वह अधिक से अधिक धन प्राप्त कर उसका संचय करे और इसकी पूर्ति के लिए वह भावनाओं को एक ओर रखकर प्रत्येक भेद-नीति अपना कर धन अर्जित करने के प्रयास में लग जाता है। जब सभ्यता का परिमाप धन को मान लिया गया है, तो प्रत्येक व्यक्ति को धन का संचय कर लेना आवश्यक हो गया है। वर्तमान अवस्था में दरिद्रता मानव जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है, जिससे त्राण पाना ही इस जीवन की उच्चता है।

प्रातःकाल लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाएं, साधक स्वयं पीली धोती धारण करें। वस्त्र पर चावल से अष्टदल कमल का निर्माण करे, उस पर 'शिव ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र' स्थापित कर दें। यंत्र का पूजन अष्टगन्ध, पुष्प तथा अक्षत से करें। घी का दीप प्रज्वलित कर दें।

हाथ जोड़कर भगवान शिव का ध्यान करे

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यगभूषणम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवन्हित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पंचवक्त्रम्।।

फिर ऐश्वर्य लक्ष्मी माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें। इसके पश्चात् एक पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर, इसी मंत्र की 51 आहुतियां खीर से दें

मंत्र

।। ॐ शं शंकराय धनं देहि देहि ॐ।।

Om Sham Shankaraay Dhawam Dehi Dehi Om

इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर विसर्जन करें

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर!
मम पूजां गृहीत्त्वेमां पुनरागमनाय च।।

जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

समस्त सामग्री को उसी वस्त्र में बांध कर नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर- 450/-

रोगनाश हेतु

13.07.20

रोग व अन्य कारणों से होने वाली अकाल मृत्यु के निवारण का सर्वश्रेष्ठ उपाय भगवान शिव की साधना में निहित है। स्वयं मार्कण्डेय ऋषि ने अपने जीवन की रक्षा भगवान शिव की ही अनन्य उपासना से की थी। अतः भगवान शिव की साधना को ही आयु वृद्धि तथा रोग समाप्ति हेतु श्रेष्ठ माना गया है। इस प्रयोग से घर का वातावरण भी शुद्ध हो जाता है।

सफेद वस्त्र पर पुष्प का आसन बनाकर किसी पात्र में 'रोग नाशक शिव यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र का पूजन अष्टगंध, पुष्प तथा अक्षत से करें। घी का दीपक भी प्रज्वलित करें।

भगवान शिव का ध्यान करें

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं,
गुणाकार संसारपारं नतोऽहं।।

इसके पश्चात् यंत्र पर जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का लगभग 15 मिनट जप करें

मंत्र

।। ॐ क्लीं रोगनाशाय फट्।।

Om Kleem Rognaashaay Phat

जप के पश्चात् जल को पूरे घर में छिड़क दें तथा शेष जल किसी वृक्ष की जड़ में डाल दें। अगले दिन यंत्र को किसी भी मन्दिर में चढ़ा दें। ऐसा करने से घर का वातावरण शुद्ध तथा रोगरहित बनता है। यदि आप किसी की रोगमुक्ति हेतु यह प्रयोग कर रहे हैं, तो पांच दिन तक यह प्रयोग नित्य करें। पांच दिन के बाद यंत्र को किसी मन्दिर में रख आवें।

न्यौछावर- 240/-

अत्यन्त उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों, दुर्लभ पुस्तकों तथा संन्यासियों से प्राप्त इन प्रयोगों को आपके लिए इसी भावना से प्रस्तुत कर रहे हैं, कि इन्हें सम्पन्न कर आप अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं ही कर लेंगे और ईश्वर प्रदत्त इस जीवन को और अधिक आनन्द से व्यतीत कर सकेंगे।

अन्य प्रयोग जुलाई-20 की पत्रिका में देखे।

किसी भी सोमवार

रसेश्वर साधना

तनाव तथा क्लेश निवृत्ति व जीवन में रस प्राप्ति हेतु

भगवान शिव का एक नाम रसेश्वर भी है। शास्त्रों में 'रस' की अवधारणा पारद से की गई है। पारद के लिए कहा गया है -

रसनात्सर्वधातुनां रस इत्यभिधीयते
जरारुग्मृत्युनाशाय रम्यते वा रसो मतः।

अर्थात् जो समस्त धातुओं को अपने में समाहित कर लेता है और जो बुढ़ापे, रोग व मृत्यु की समाप्ति के लिए ग्रहण किया जाता है, वही रस की संज्ञा से विभूषित है।

पारद को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है, और इसी रस के कारण भगवान शिव नित्य आनन्द में मग्न रहते हैं, इसी रस मग्न होने की क्रिया से उन्हें रसेश्वर भी कहा गया है रस का अर्थ है आनन्द, मस्ती, प्रफ्फु ल्लता, जोश, तरंग।

भगवान शिव को यदि देखा जाए, तो उनकी सवारी नन्दी बैल और पार्वती जी की सवारी शेर - दोनों ही परस्पर बैरी।

भगवान शिव के गले में नाग और शिव के पुत्र कार्तिकेय की सवारी मोर

- दोनों परस्पर बैरी।

साँप और शिव पुत्र गणेश का वाहन चूहा भी परस्पर बैरी हैं।

अब शेर बैल पर झपटे, कि साँप चूहे पर झपटे या मोर साँप पर झपटे, पर भगवान शिव किसी भी प्रकार की चिंता से मुक्त अपने ही रस में मग्न हैं। यही आनन्द की स्थिति प्राप्त करना ही जीवन में रस घोलना है और भगवान रसेश्वर की साधना से यह संभव है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति अपने आपमें प्रसन्नचित्त हो जाता है, उसके तनाव, चिंता, व्याधि सभी गायब हो जाते हैं, उसके अंदर एक नवीन तरंग और मस्ती का संचार हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आना, तनाव में आ जाना सब दूर हो जाता है। यदि घर में किसी भी प्रकार का क्लेश हो, लड़ाई झगड़ा हो, तो वह सब समाप्त हो जाता है। व्यक्ति स्वयं तो प्रसन्न रहता ही है, उसके सम्पर्क में आने वाले लोग भी उससे खुश रहते हैं, क्योंकि उसके जीवन में रस समाविष्ट हो जाता है इस प्रयोग द्वारा।

इस साधना में 'नर्मदेश्वर शिवलिंग', 'रसेश्वरी पारद गुटिका' तथा 'पंचमुखी रुद्राक्ष' की आवश्यकता होती है। इसमें माला की आवश्यकता नहीं होती है। पहले संक्षिप्त गुरु पूजन व गणेश स्मरण कर लें। हाथ में जल लेकर मन में संकल्प करें कि 'मैं (नाम बोलें) जीवन में समस्त तनाव, क्लेश, अशान्ति, द्वन्द्व की निवृत्ति एवं जीवन में पूर्ण आनन्द तथा रस प्राप्ति के लिए रसेश्वर साधना सम्पन्न कर रहा हूँ।

सामने 'नर्मदेश्वर शिवलिंग' को किसी पात्र में स्थापित करें।

शिवलिंग के बाईं ओर अक्षत की ढेरी पर 'रसेश्वरी पारद गुटिका' को स्थापित करें।

दोनों हाथों में 'पंचमुखी रुद्राक्ष' लेकर भगवान शिव का निम्न ध्यान मंत्र बोलते हुए रुद्राक्ष को यंत्र पर अर्पित करें।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम,
रत्नाकल्पोज्वलागं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतमरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानम,
विश्वाद्यं विश्वन्धं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

निम्न मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ाएं।

ॐ भवाय नमः। ॐ मृडाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ कालान्तकाय नमः। ॐ नागेन्द्रहाराय नमः। ॐ कालकरणाय नमः। ॐ लास्यप्रियाय नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

प्रत्येक मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर अक्षत चढ़ाएं-

ॐ शर्वाय नमः। ॐ भवाय नमः। ॐ महेशाय नमः। ॐ उग्राय नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महादेवाय नमः। ॐ भद्राय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

एक-एक मंत्र बोलते हुए शिवलिंग पर कुंकुम चढ़ावें -

ॐ अघोराय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ विरुपाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महाकालय नमः। ॐ रसेश्वराय नमः।

फिर निम्न मंत्र को आधे घण्टे तक बिना माला जपें-

।। ॐ ऐं ह्रीं रसेश्वराय महाबलाय महादेवाय नमः।।

प्रयोग समाप्ति पर शिवलिंग को पूजा स्थान में रख दें व अन्य सामग्री को शिव मंदिर में अर्पित करें। यह प्रयोग एक से अधिक बार भी कर सकते हैं।

साधना सामग्री : 450/-

यह बड़ा ही सरल प्राणायाम है और बहुत उपयोगी भी। मन को एकाग्र कर आप इसके क्रम को बढ़ाएं।

अनुलोम-विलोम

नाड़ी शोधन की पहली अवस्था अलोम-विलोम है। पद्मासन में बैठें। बायीं नासिका से श्वास भरें और दायीं से छोड़े, फिर दायीं से भरें और बायीं से छोड़ें। इसी प्रकार 5-7 मिनट इसका अभ्यास करें। प्रयास करें कि जितना समय श्वास लेने में लगे, उतना ही समय श्वास छोड़ने में भी लगे और लय भी एक जैसी हो। इसका अभ्यास हो जाने के बाद रेचक का समय दोगुना कर दें।

रोगी तथा दुर्बल व्यक्ति इस प्राणायाम से विशेष लाभ ले सकते हैं। हृदय तथा श्वास रोगियों के लिए यह अति उत्तम प्राणायाम है जिससे मन शांत तथा नाड़ियां शुद्ध होती हैं।

विधि

सिद्धासन, पद्मासन या सुखासन में बैठ जाएं। श्वास को शांत करें। दायें हाथ की दोनों पहली अंगुलियों को मोड़ते हुए दायीं नासिका को अंगूठे से बंद कर लें और श्वास को बायीं नासिका से भरें। चौथी एवं पांचवीं अंगुली से बायीं नासिका को बंद कर लें और कुछ क्षण आंतरिक कुंभक करे। अंगूठे को हटाकर दायीं नासिका से धीरे-धीरे श्वास निकाल दें। फिर दायीं नासिका से श्वास लें। दोनों नासिकाएं बंद करें। फिर बायीं नासिका से श्वास बाहर निकाल दें। यह नाड़ीशोधन प्राणायाम की एक आवृत्ति हुई।

इसे तीन-चार बार प्रतिदिन करते हुए अभ्यास को बढ़ाएं। उतनी देर श्वास रोकना है, जितनी देर आप आराम से रोक सकें और जब सांस छोड़ें, तो छोड़ने की गति धीमी हो। जब आपका यह अभ्यास पक्का हो जाए तो श्वास का क्रम बना लें। यदि श्वास लेने में 4 सेकंड लगें, तो 8 सेकेंड तक श्वास रोकें और 8 सेकंड में ही श्वास को बाहर निकालें। यानि एक, दो और दो (1:2:2) का अनुपात। इस अनुपात को 1:4:2 तक बढ़ाएं। श्वास रोकने में शक्ति नहीं लगानी है।

नाड़ी शोधन प्राणायाम में विशेष ध्यान देने योग्य बाते हैं पूरक, कुंभक और रेचक की क्रियाओं में एक विशेष अनुपात का होना तथा रेचक करते समय नासिका से अधिक दूरी पर श्वास का अनुभव न होना।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

हम मनुष्य के रूप में जन्म लेकर गतिशील तो होते हैं, परन्तु यह हमारी गति, काल की गति है, मृत्यु की ओर बढ़ने की गति है, जीवन को समाप्त करने की गति है, वह पूर्णता की ओर बढ़ने का पथ नहीं है, पर यदि गुरु मिल जाएं, तो वे हमको पूर्णता प्रदान कर सकते हैं। उपनिषद कह रहे हैं 'त्वं पूर्ण वै'.... तुम पूर्ण हो सकते हो, किन्तु पूर्णता का बोध कौन करा सकता है ? और यह बोध तो गुरु करा सकते हैं, जिनमें प्राणश्चेतना हो, जो ब्रह्मचेतना से युक्त हों, जो स्वयं पूर्णता की परिभाषा हों, जो मात्र पूर्ण ही नहीं हों अपितु अपने स्पर्श से अनेकों को पूर्ण बना सकते हों। और यह 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' द्वारा ही सम्भव हो पाता है, जो कि जीवन को ब्रह्ममय बनाकर पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाने की क्रिया है। सद्गुरु के साक्षात् परब्रह्म स्वरूप को आत्मसात करने की प्रक्रिया होती है। इसी भावभूमि को पूर्णमदः पूर्णमिदं कहा गया है। यह दीक्षा सिद्धाश्रम जयंती 14.6.20 के अवसर पर पूज्य गुरुदेव उपहार स्वरूप प्रदान कर रहे हैं।
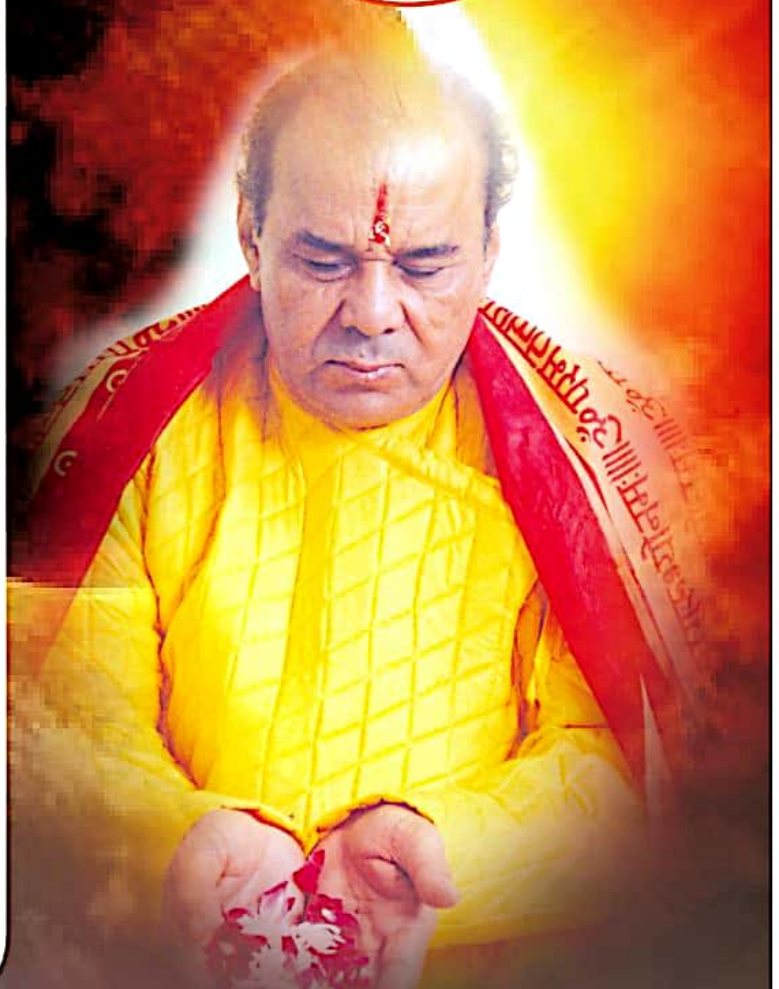
योजना केवल 14 जून 2020 को एक दिन के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 66 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

निखिलेश्वर सुप्रभातम्

सिद्धाश्रमे सकलययोगिजनाश्च शिष्या:
सन्यासिनो कमलपुष्पचयै: निरीक्षां।
कुर्वन्ति ते पदयुगं नमितुं प्रपन्ना:
नारायणाख्य! निखिलेश्वर! सुप्रभातम्।।1।।

हे नारायण! निखिलेश्वर जी ! सिद्धाश्रम में समस्त योगी, शिष्य, संन्यासियों का समूह हाथों में कमल-पुष्प लेकर आपके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा है। आपके चरण कमलों को प्रणाम करने के लिए अतुर है। आपको सुप्रभात!।

मन्त्रार्थ मर्मनिचयान् तव पुण्यव्रत्रात्।
श्रोतुं सदा तव गृहे सकला: मनुष्या:।
भक्तिप्रपूर्ण निजमानस मर्पयन्ते
नारायणाख्य! निखिलेश्वर! सुप्रभातम्।।2।।

हे नारायण! निखिलेश्वर महाराज! आपके श्रीमुख से मंत्र के रहस्यों को जानने के लिए साधक आपके निवास पर उपस्थित है। अपने मन को पूर्णतया वे आपको समर्पित कर रहे है। गुरुदेव! आपको सुप्रभात!

स्वर्गे च मर्त्यभुवने सकलासु दिक्षु
प्रारभ्यते गुरुपदांबजपूजनं तत्
उत्तिष्ठ! सर्वजनतां समनुगृहाण।
नारायणाख्य ! निखिलेश्वर ! सुप्रभातम्।।3।।

स्वर्गलोक में, मृत्युलोक में और सभी दिशाओं में गुरुदेव! आप ही का पूजन चल रहा है। भगवन्। इन सभी लोगों पर पूर्ण कृपा दृष्टि डालिए। आपको सुप्रभात !

दीक्षाममूल्यवचनं तव लब्धुकामा:
शिष्याश्च शुभ्रवसना: शिबिरे लसन्ते।
तेषां भवांनुनिधितारणनौस्त्वमेव
नारायणाख्य ! निखिलेश्वर ! सुप्रभातम्।।4।।

भगवन्! आप से दीक्षा प्राप्त कर, आपके अमूल्य प्रवचन सुनने के लिए, सभी शिष्य पवित्र पीतांबर धारण कर, शिविर में उपस्थित हो चुके हैं। इन सभी शिष्यों को संसार-सागर से उद्धार करने में आप ही एक नौका के समान विराजमान है। आपको सुप्रभात!

यस्मिन् गृहे तव पदांबुजपूजनं स्यात्
तद्धाम स्वर्गसदृश्य भवतीति विज्ञा:
कुर्वन्ति त्वद्गुणकथास्तवनं विनीता:
नारायणाख्य ! निखिलेश्वर ! सुप्रभातम्।।5।।

जिस घर में हे गुरुदेव! आपके चरण कमलों का पूजन सम्पन्न होता है, वह घर स्वर्ग सदृश्य बन जाता है। इस प्रकार विद्वान लोग हमेशा आपके गुणगान करते हुए विनम्रतापूर्वक आपके सामने समर्पित हो रहे हैं। गुरुदेव! आपको सुप्रभात !

रंभादिदेवगणिका: तवदर्शनार्थम्
आकाशमद्यमधिगम्य कुतूहलेन।
नामं स्मरति निखिलेति नितांतभत्या
नारायणाख्य ! निखिलेश्वर ! सुप्रभातम्।।6।।

रंभा, उर्वशी, मेनका इत्यादि अप्सराएं आपके दर्शन के लिए आकाश के मध्य में कुतूहलपूर्वक आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रही हैं। अत्यंत भक्तिपूर्वक 'निखिल' नाम स्मरण कर रही हैं। आपको सुप्रभात !

सिद्धारमे खलु नितांतपवित्रतोया
सिद्धा नदी प्रवहति सकुतूहला सा।
स्नानार्थमद्य निखिलोऽपि निमज्जतीति
नारायणाख्य! निखिलेश्वर! सुप्रभातम्।।7।।

सिद्धाश्रम में पवित्र जल से युक्त सिद्धयोगा नदी प्रवाहित होती है। उस नदी के पारवश्य का अंत नहीं है। वह उच्छवल इसलिए हो रही है कि थोड़ी ही देर में निखिलेश्वर जी स्नान करने पहुँच जायेंगे। हे गुरुदेव! आपको सुप्रभात!

शिष्यान् महोग्रपरितापनिपीड़िताश्च
सूक्ष्मेण दिव्यवपुषा परिरक्षितुं त्वम्
तत्तस्थलेषु व्रजसेऽचिरकालगामी
नारायणाख्य ! निखिलेश्वर ! सुप्रभातम्।।8।।

जब भी कोई शिष्य किसी संकट में फंस जाता है तो हे गुरुदेव! आप तुरंत सूक्ष्म शरीर के माध्यम से उधर पहुँच कर उसके दु:ख का निराकरण करते है! अनेक बार आपको एक ही समय में कई स्थानों पर जाना पड़ता है परंतु आप जाने में तनिक देर भी नहीं करते हैं। आप शिष्यों के प्रति अत्यंत दयालु है। आपको सुप्रभात!

षट् चक्र जागरणकर्मचणस्त्वमेव
सिद्धिं ददासि विपुन्नां च श्रियं जनेभ्य:
त्वत्पाणिपाद तलदर्शन स्पर्शनार्थीन्
शिष्यान् समुद्धर गुरो ! तव सुप्रभातम्।।9।।

आप कुंडलिनी जागरण क्रिया को अच्छी तरह जानते हैं। शिष्यों के चक्रों को जाग्रत कर सिद्धि प्रदान करते हैं। अपार धन-वैभव प्रदान करते हैं। आपके चरण स्पर्श तथा करस्पर्श की आकांक्षा से आए हुए सभी शिष्यों का उद्धार कीजिए - गुरुदेव! आपको सुप्रभात !

सुप्रभातमिदं नित्यं य:पठेत् भक्तिमान् नर:।
स गुरो: कृपया धान्यं, धनं, सिद्धि भवाप्नुयात्।।

इस सुप्रभात को भक्तिपूर्वक पठन करने वाला साधक गुरुकृपा से धन-धान्य तथा साधनाओं सिद्धि प्राप्त करता ही है।

Free from Fear

Tripur Bhairavi Sadhana

Any and every circumstance in life that creates apprehension is a fear, and in the long journey of life such circumstances keep appearing every moment. The form of these problems might change, but not their onslaught which continues unabated till the very last moments of life. What more physical fitness or money power does not assure a life free of fears.

Sudden mishaps in life, accidents, kidnappings, physical attacks, robbery leave physical or money power futile. And with the ever escalating crime rate, today the feeling of insecurity goes on becoming stronger in spite of safeguard measures like personal bodyguards, watch dogs, life insurance etc.

Such measures in fact bring out one's fears more in the open and they cannot be the means of getting rid of one's apprehensions and fears. For really banishing them there is but one sure way and that is attaining carefreeness of a Yogi. And once this happens, once the mind is free of tensions and worries the hidden talents start to blossom making one more creative, artistic and concentrated in one's work.

But such an achievement is impossible through the commonly known means. One might raise a fortress of brawn and wealth around oneself, yet it won't really keep worries at bay. For true fearlessness and contentedness one should be ever drifting in a sea of serenity. Only then can an inner confidence emerge. But how?

The Shastras unanimously point towards one means -- divine power -- with which one can form a link only by performing some Sadhana. And such a Sadhana can be had by supplicating to the Guru to gift some Sadhana related to the various supreme powers.

One of such amazing rituals is **Tripur Bhairavi Sadhana** whose foremost boon is instilling total carefreeness into the Sadhak so that he could face all challenges of life with a relaxed mind, with calmness and composure. the powerful Mantra of the ritual neutralises all adverse forces in one's present life and continues to do so even in the future.

The fact that Tripur Bhairavi is one of the ten foremost forms of Goddess Shakti famous as the ten Mahavidyas, itself is an indication of the tremendous power packed into the ritual. That Sadhanas of this Goddess are not so popular could be because her propitiation leads to a release of explosive power in the Sadhak's mind, body and soul. But as is generally believed this power can never harm the Sadhak, more so when he or she has a Sadguru of the high spiritual stature of Swami Nikhileshwaranand.

It is more common for Sadhaks to opt for Baglamukhi Sadhana, another of the Mahavidyas, when he faces adversities in life. But there is a subtle difference between these two powers, for while Baglamukhi is a vanquisher of all one's foes. Tripur Bhairavi takes care of all circumstances which could cause fear, tensions, worries, accidents and disrepute.

The Sadhana works wonders in cases where one feels that some evil eye has ruined one's business or happy family life. Some Sadhaks fear the Goddess believing she has a fearsome form. But this is only for one's enemies. For the Sadhak she appears in a captivating montherly form.

Saturday is the best day for this Sadhana. On this day after 10 pm have a bath and get into red robes and sit facing South on a woollen mat. On a wooden seat spread a red cloth and on it place a ***picture of the Goddess*** **(देवी का चित्र)**. On rose petals place the ***Tripur Bhairavi Yantra***. On the right hand side of the Yantra make a mound of black sesame seeds and on it place a ***Madhuroopen Rudraksh*** **(मधुरूपेण रुद्राक्ष)**. For total success in the Sadhana first pray to Lord Bhairav, the divine consort of the Goddess. For this offer red flowers on the Rudraksh and chant thus.

Dhyaayenneelaadri-Kaantim Shashishakal Dharam Mundmaalam Mahesham. Digvastram Pinglaaksham Damrumath Srinnim Khadag Shoolaamyaani. Naagam Ghantaam Kapalam Kar Sarsiru Hei-rvibhratam Bheem Danshtram. Sarpaakalpam Trinetram Mannimay Vilasat Kinkinni Noopuraadyam.

उद्यद्भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षौमां शिरोकालिकाम्
रक्तालिप्त पयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद् ब्रत्रारविन्द श्रियम्,
देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वदे समन्दस्मिताम्।।

Next light a mustard oil lamp and offer a fruit to the Goddess. Put a mark of vermilion on the Yantra and then chant 11 rounds of this Mantra with a **white Hakeek rosary**.

Haseim Has Kareem Haseim

।। हसैं हस करीं हसैं।।

Place the picture of the Goddess permanently in your worship place. Tie the rest of the articles in the red cloth and drop it in a river of pond.

Sadhna articles - 570/-

GURU STHAPAN SADHANA
ASSIMILATING POWER
OF THE GURU
Shnidhan Makraje
To his spiritual sons and daughters revered Sadgurudev had gifted a most wonderful Sadhana during Guru Poornima celebrations. For all Sadhaks here is this amazing Sadhana

Man is incomplete and sinful. He might call himself most evolved but he is not fully evolved yet. There always is something or the other lacking in his life. If he has wealth he lacks fame, if he has fame he might have no sons, if he has sons he lacks good fortune, and if he has good fate he might be plagued by ailments. If the human body is dissected then all we shall find in it is flesh, blood, bones and excreta.

There is nothing in the human body about which we can be proud of. Even the food which we eat finally gets converted into excreta. You might eat the best of delicacies and the choicest of foods yet everything gets transformed into excreta.

The ordinary man is unaware of any process that could make him divine. The human body as such is useless and the highest level of knowledge and consciousness cannot be assimilated in it. You might eat what you like, the body is not going to transform or become special in any way. Food alone cannot generate a divine radiance on one's face.

Why can't it? What then is the significance of human life?

A flower lying in the garbage cannot be offered in a temple. Our bodies are impure. How then can we offer them in the holy feet of the Guru or the Lord? The body is just a mass containing among other things excreta. Can such a form be devoted in the feet of the Lord?

All gods and goddesses are present in the holy form of the Guru. The Guru is linked to his soul and to the Divine. He is no ordinary being like us. He has knowledge, divinity, his Kundalini is activated and so is his Sahastrar. He does not need to eat food or drink water. And because he does not feel hungry or thirsty and does not eat or drink anything he need not even excrete.

Highest level of Sadhaks do not eat food nor do they drink water. They can sit in the air six feet above the ground and accomplish Sadhanas in midair. Those who can do this are real human beings. Others are just leading an animal existence. They are leading a life that is impure.

What is the process through which one can rise to such a state in life? How can one become so pure and sacred? How can one really and truly become humans?

How can one rise six feet in the air and accomplish Sadhanas in midair? There is no part on the earth where bloodshed has not taken place. Every inch of the earth has been a witness to bloodshed, wars and violence. The whole earth is impure. How then can one succeed in Sadhanas if they are accomplished seated on earth?

Without purity of heart the highest level of Sadhanas cannot be accomplished. Without purity one cannot attain to an age of thousands of years. Without it one cannot reach Siddhashram. And if one cannot gain entry into the divine land then human life is useless. Then life would just mean a journey to the funeral ground.

Your ancestors or the past generations have led such a very life and this is why no one

Our bodies are impure. How then can we offer them in the holy feet of the Guru or the Lord? The body is just a mass containing among other things excreta. Can such a form be devoted in the feet of the Lord?

remembers them today. You might well remember the name of your grandfather or great grandfather but you might not know who the father of your great grandfather was, what sort of life he lived and what he accomplished in his life time. If this is the sort of life that you want to lead then you do not need a Guru.

The body is so impure that it cannot remain clean even for four days. Just don't have a bath for four days and it shall start to stink. No one shall wish to be in your company or even talk to you. From the body of Lord Krishnna a divine fragrance used to emanate. This fragrance is called *Ashtgandh* and it poured out of the forms of Lord Ram and Buddha as well. All great Yogis are blessed with this virtue.

What is it that we lack that we cannot produce this fragrance from within?

Once this fragrance starts to pour forth people shall stop and stare at you when you pass through a crowd. They shall wonder where this wonderful fragrance is coming from.

And if you are not thus blessed, if you cannot achieve this stage then life is useless. Even gods take birth as humans in order to experience this phenomenon. They appear as Ram, Krishnna, Buddha, Mahavir, Jesus and Mohammed and try to reveal secrets of the human form to everyone.

For making the body pure and sacred it is important to stop indentifying with the gross physical from and link oneself with the soul. When one is linked to the soul then one becomes completely oblivious of the physical form.

Then although one shall lead a normal life yet there shall be no need to eat or drink. Then one shall be able to sit in midair and accomplish Sadhanas. Then a divine fragrance shall start to emanate from one's body and one shall know that human life is something special.

Once one gets linked to the soul there shall be a rise of consciousness. A transformation shall start to occur and one shall on one's own gain the knowledge of Vedas, Upanishads and Purans.

How many Sadhanas can you accomplish in your life? How many times can you chant a Mantra? How long can you chant a Mantra?

One's life span can be at the most sixty or seventy today. Out of these most of the years have flown by and the remaining years too shall be devoted to fulfilment of one's duties. How then can one make one's life extraordinary? And

From the form of Lord Krishnna a divine fragrance called Ashtgandh used to pour forth. So did it from the forms of Buddha, Ram and so does it from the forms of all great Yogis. Why are we not blessed thus?

Life means being unique. People should stop and see when you pass through a crowd. They should be left wondering where this divine fragrance has come from.

if life is not unique then life shall be meaningless.

We do not remember Krishna as the Lord, rather we remember him as *Jagat Guru* or the Guru of the whole world. Why is he called a Guru? This is because he successfully accomplished those Sadhanas and gained the divinity due the effect of which Ashtgandh started to flow from his body and his soul was fully activated.

Here I am revealing to you a unique Sadhana which shall not be revealed again in thousand years to come. You cannot find this Sadhana is any text, You can not get its knowledge from any place of pilgrimage. Even taking a daily dip in Ganges cannot make you aware of this wondrous ritual. If bathing thus made one pure and spiritual then fishes living in Ganga would have become great by now.

Essence of life is in becoming unique. There should be no one with whom one could be compared. Only then can life be worthwhile. In order to gain such an existence one should seek the guidance of a Guru who is linked to his soul, who is divine, whose voice is divine, whose eyes sparkle with spiritual radiance, who can captivate the minds of others and who can bestow totality on others.

But you do not know how to assess the true

Without purity in life the highest level of Sadhanas cannot be accomplished, one cannot live to thousands of years, one cannot reach Siddhashram. And if one cannot reach Siddhashram then life is useless. Then life is but a journey to the funeral ground. Presented here is the blessing of revered Sadgurudev in form of a wonderful Sadhana through which life could be made really meaningful.

worth of a Guru. For that the best way is to sit in his company and listen to his words. From his knowledge you can realise his true worth. Once you have a Sadguru in your life you shall know the true significance of human life. Then you shall feel proud that you are the disciple of a Sadguru who is a vast ocean of knowledge.

If a person is wise, if he has even a bit of wisdom he will decide not to lead an animal existence or lead an ordinary life. Such a life is useless. Once he has made up his mind thus, he should try to find a Sadguru who is divine, who possesses real knowledge and from whose form divine fragrance pours forth.

If one does not try to achieve this state then the body would soon become a prey to ailments and having become old and weak it would perish. When shall the moment of realisation dawn in your life in which you shall decide to make the journey towards divinity, towards uniqueness, towards greatness?

This shall be possible when your soul gets fused with that of the Guru, when you thoughts become fully immersed in his knowledge, when all your actions are devoted to him. And for this the best method is giving a permanent place to the Guru in one's life, in one's body and soul.

As soon as the Guru is given a permanent place in one's body his divinity shall produce a wonderful fragrance, a powerful radiance and a uniqueness. Then one's life shall become extraordinary and one shall become pure. Then one shall be linked to the soul and one shall gain all knowledge of the universe.

Sadhana Process

For Sadhana one needs a ***Guru Hridyasth Sthapan** yantra* and a ***Saafalya rosary***.

One can start this Sadhana from **Guru Poornima, any Thursday or 21st of any month**. For Sadhana have a bath and wear yellow clothes. Sit on a yellow mat and cover yourself with a Guru Pitambar (special Shawl imbibed with the power of Guru Mantra).

Cover a wooden seat with a yellow cloth and on it place Yantra. Light ghee lamp. then chant thus meditating on form of revered Sadgurudev.

Deergho Sadaam Vei Paripoornna Roopam, Gurutvam Sadeivam Bhagwat Prannamyam. Tvam Brahma Vishnnu Rudra Swaroopam, Twadeeyam Prannamyam, Twadeeyam Prannamyam. Na Cheto Bhavaabdhe Ravi Netra Netram, Gangaa Sadiev Paramam Cha Rudram. Vishnnorvataam Mevatmev Sindhum, Eko Hi Naamam Gurutvam Prannamyam. Aatmo Vataam Poornna Madeiv Nityam Siddhashramoyam Bhagwat Swaroopam. Deerghom Vataam Nitya Sadevam Tureeyam, Tvamevam Sharannyam Twadeeyam Sharannyam Eko Hi Kaaryam, Eko Hi Naam, Eko Hi Chintyam Eko Hi Vichintyam. Eko Hi Shabd Eko Hi Poorva, Gurutvam Sharannyam Gurutvam Sharannyam.

Offer saffron, rice grains, flowers and sweets on the Yantra. Then standing on your toes with the body stretched upwards chant one round of the following Mantra.

Om Hreem Nrim Mam Rakta Bindu Hridyasth Guru Sthaapitam Nrim Hreem Om.

Do this regulary for 21 days. After 21 days drop the Yantra and rosary in a river or pond.

This Mantra is very divine. Accomplish the Mantra chanting only while standing on the toes. The ankles must be raised above the ground. There is no other way of chanting this Mantra.

Through this Sadhana the Guru power can be instilled into each particle of one's blood and life could be made pure, divine and great, and thus one could make amazing spiritual progress.

Sadhana Article 450/-

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण साधना
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 37219989876

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

धूमावती यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

लक्ष्मी यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039